

कवि-श्री माला

• तेलुगु •

कवि

फादूरि बेंफटेडवरराव

और

पिनलि लक्ष्मीकमलम

सम्पादक—बनुबाबक

भीमसेन निर्मल

(प्रा भण्डारम भीमसेन जोस्युट्ट)



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

मोहनलाल अद्वैत

मन्त्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

दिल्लीनगर, बर्धा

● ● ●

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण—१०

मई, १९९२

मूल्य—₹ २/-

● ● ●

मुद्रक

मोहनलाल अद्वैत

राष्ट्रभाषा प्रेस

दिल्लीनगर बर्धा

● ● ●

हर्षक विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्षा अपने कार्य बरालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्दाये जानवाले रजत-जयन्ती महीस्यके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके प्रमुख कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट कटकल परिचय 'कवि-श्री माळ' की पन्चम पुस्तकमें हिन्दी-गद्यनुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ कव्य-सर्जकल निरूपण करण एक कठिन कार्य है फिर भी अपने शीघ्रओंके ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उ१-उ५ भाषाओंके विद्याभोक्ता रामसे ही अनुभव कर कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कवियों रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चयन किया गया है उनका चयन करते समय सन् १९० से पूर्वका साहित्य और १९०० से बादका साहित्य—इन तरिकसे एक विभाजन-रिखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९० के पूर्वके तथा १९० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धारामें एक विशेष प्रसरण अलग-अलग पाया जाता है।

श्री श्रीमंलश्री 'निर्णय'ने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यके चयन, कठ्याकरणे सम्पादित तथा अनुवाद कर सभी भाषाओंके इस रूपमें प्रस्तुत करने में सहयोग दिया है। पुस्तकमें संकलित चित्र कविश्री कर्दूर फेल्डेवररावकी सद्गुणतर्णसे उपलब्ध हुआ है। संयोजकी आवरण डिजाइनके बन्वा देनेमें श्री श्री एम्. आश्वरकजी (डी५, मर के के इन्स्टीट्यूट आफ अल्बर्ट आर्ट, बार्बई) का उत्तर सहयोग निराल है उनके शिष्य समिति सभीकी आभारी है।

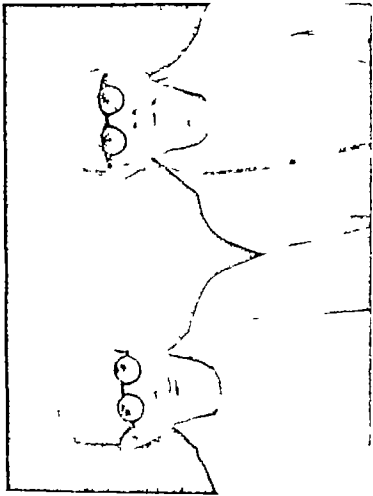
इसके अतिरिक्त कर्बई तथा अन्यका दृष्टियोंसे निर-निर्णय प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग निराल है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंके रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

हि० रा० २५

अनुक्रमणिका

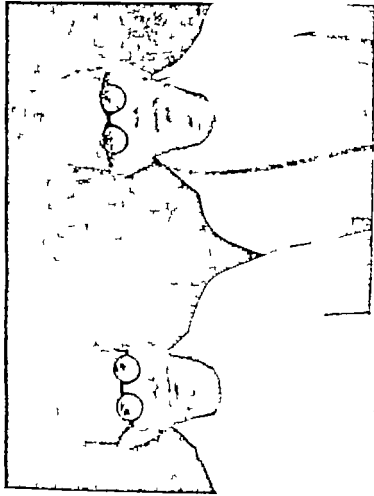
	पृष्ठांक
तेलुगु-साहित्य-परिचय [सन् १९२० से आज तक]	१
कवि-परिचय	२७
काव्य-सम्बन्ध	४३



पिगलि लक्ष्मीकातम और फाटूरि धेकटेश्वरराव

अनुक्रमणिका

	पृष्ठांक
तेलुगु-साहित्य-परिचय [सन् १९२० से आज तक]	१
कवि-परिचय	२७
काव्य-सञ्चय	४३



विप्लवि सशरीकालग और फादूरि वेंकटेश्वरराव

तेलुगु साहित्य परिचय

[सन् १९२० से आगतक]

तेलुगु साहित्य परिचय

[सन् १९२० से आद्यतक]

तेलुगु भाषा

और

उसका साहित्य

• • •

[प्रारम्भ से सन् १९२० तकका तेलुगु साहित्यका संक्षिप्त परिचय कवि श्री-माता—तिरुपति-बेकट कनुमुमें दिया गया है।]

व्यव्य भाषाईय भाषाओंके साहित्योंकी भाँति ही तेलुगुका लिखित साहित्य ११ वीं शतीसे प्रारम्भ होता है। ११ वीं शतीसे पूर्वकी तेलुगु भाषाके स्वरूपका परिचय मात्र देनेवाले साधन कुछ विशिष्ट और लोक-गीत हैं।

व्यव्यकी सुविधाके सिद्ध तेलुगु साहित्यको छह युगोंमें विभाजित किया जाता है। (१) अज्ञानयुग या प्राज्ञतमय युग (२) पुरुष युग या मनुवाह युग (३) श्रीनाथ-युग या काव्य-युग (४) प्रबन्ध-युग (५) दक्षिण-युग और (६) आधुनिक युग। यह विभाजन काव्यके अनुसार या विविष्ट काव्यसिद्धियोंके आधारपर किया गया है। आधुनिक युगीन प्रभृतिपर्यन्त सम्यक् ज्ञान प्राप्त करनेके लिए, पूर्वके पाँच युगोंका संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

प्राज्ञतमय युग

साहित्य कवि नम्रम मद्दसे पूर्वकी तेलुगु भाषा और उसका साहित्यके स्वरूपका निर्णय करनेके लिए, उस युगके प्राप्त साहित्य ही प्रधान साधन है। य विशेषतः श्री भाषा और वैदी छन्दोंके स्वरूपका ज्ञान ही करता है साहित्यका नाम। इस युगकी उपलब्ध सामग्री भाषा-विज्ञानके सतर्की है। विषय-प्रधान विशिष्ट और सदिग्ध लोकगीत साहित्यके इतिहासमें विषय योग्य मही देते।

पुराण-युग (ई स १०३० से ई १४०० तक)

इस युगमें वैदिक-धर्म-निर्यात महाराजाओंके प्रोत्साहनसे धर्म-निर्यात कवियोंने महाभारत और रामायण आदि काव्यों और कुछ पुराणोंका भाषामें अनुबाद प्रस्तुत किया है। परमें अनुबाद केवल अनुबाद-भाषा न होकर स्वतन्त्र मौलिक काव्योंके रूपमें प्रतिभासित होत हैं।

राजमहेश्वरीके पूर्व-बाल्मिक्य बर्षीय राजा राज-राजतरंग (१ १२-१०६१) की सभामें मलय भट्ट नामक एक विद्वान् ब। मलयने वैदिक-धर्म प्रचारके निम्ने पञ्चम वेद महाभारत के अनुबाद के कार्यभारकी संभाला। अपनी पूर्ववर्ती भाषा एवं काव्य-रचना-शैलीको मुख्यवस्तुतः रूप लेकर आपन आन्ध्र-भाषानुशासक की अपनी अपाधिको सार्वक बनाया। अपने प्रभु और मित्र राजराजकी प्रेरणासे वे महाभारतके द्वाई पर्व तक की रचना कर पाए थे कि काम्पुत्यने इनकी लेखनीको रोक दिया।

राजराजतरंगकी मृत्युके बाद देशकी राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियोंके कारण महाभारत की पुस्तिका कार्य रुका-सा रहा। मलयके अग्रगण्य बड़ ही राम बाद कविब्रह्मा तिलकमान (१२१०-१२९) विद्युत्पर्वसे लेकर छप १५ पर्वोंकी रचना की। तिलकमान नेस्वरके राजा मनुमतिविके मन्त्री तथा राजकवि थे।

अरव्यपर्वके छप सामकी पुस्तिका मलयके नामपर ही करनेवासे है एरप्रियड (१२८०-११५)। इन्होंने मलयकी शैलीपर रचनाका प्रारम्भ करके उसे तिलकमानकी शैलीपर का बड़ा किया। मलय और तिलकमानकी रचनाओंको भिन्नतावाला धर्म-युग हो।

मलय तिलकमान और एरप्रियडको कवित्रय कहते हैं। इन तीनों महा-कवियोंने अनुबादकी औचित्यकी दृष्टिसे बटा-बटाकर, मौलिक काव्यके रूपमें प्रस्तुत किया है। अनुबादकी यही शैली परवर्ती कवियोंके लिए आदर्श बनी रही।

इस युगके अन्य कवियोंमें कैलास मारुत जोन कुहारेड्वी भास्कर, वैष्णव नाचन सामनाथ आदि प्रमुख हैं।

ईसाकी १२ वीं शतीमें कर्नाटक प्रान्तमें बसवेश्वर शाह संस्थापित कीर शैव संप्रदायने आन्ध्र प्रदेशको लूच प्रभावित किया था। उन विद्वान्ओंके प्रचारके लिए अनेक कवियोंने कर्मण उत्पन्न। वेदी इतिवृत्त वेदी छन्द और वेदी भाषाको साधन बनाकर, ईश्वरीय कविर्षाण जनतामें जागरणके भाव पैसाए। इन कवियोंने भाषा और भाषने अत्यधिक स्वच्छन्दता दिखाई है। इन शैव कवियोंमें राजकवि मन्मथेश्वर सर्वप्रथम है। इन्होंने कुमारसम्भवम् नामक उत्तम काव्यकी रचना की। मन्मथार्जुन पण्डिताराध्यके लिख अनेक शैव-काव्योंमें एक शिखरत्वसारण ही उप-कल्प है। इसे तत्सुषुता पहलम राजक माना जाता है। त्रिपद (वेदी छन्द विषय) रचनामें अनन्य और शिखरकविधर्मके पिरोमणि पास्तुतिर्षिक सामनाथ तत्सु-

संस्कृत और कन्नड़ भाषाओंमें अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। बसव-पुण्यम् पश्चिमाय्य-चरित्रम् 'सोमनाथस्तवम्' 'अनुभवसारम्' वृषाधिपशासनम् और 'बसवोवाहरणम्' अपेक्षाकृत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इस युगमें ही—जिसे प्रारम्भिक (आदि) युग कहा जाता है—मार्ग-भविता और देवी कविताके ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं कि इस युगके साहित्यका प्रारम्भिक यथाका साहित्य नहीं माना जा सकता। पुण्य विपुल काव्य काव्य-प्रबन्ध छिपे-छिपे और गद्यकविता इन परबिहारी कविता-शैलियोंकी नींव भी इसी युगमें पड़ी। एकाग्र देवी रचनाको छोड़ सभी अनुवाद ही हैं पर ये अनुवाद नीरस न होकर, मौलिक रचनाओंसे लकते हैं। कवियोंकी अगुप्त प्रतिभा और व्युत्पत्ति ही इसका प्रधान कारण है। गोदावरी तीरस्थ राधामहेश्वरिण उद्भूय तेषु कविताका भाव नस्कर बरंगल अहंकि आदि श्वातोंमें फँस पड़ा और समग्र आन्ध्र प्रान्तकी अपनी निर्मल धाराओंसे तृप्त करने लगा।

काव्य-युग (ई १४००-१५०० तक)

१५ वीं शतीके आन्ध्र साहित्यकायके आग्न्वस्यमान सूर्य हैं कवि सार्वभौम श्रीनाथ और भक्तिमार्गस्यकी शीतल ज्योत्स्ना विद्यालयासे सुभाकर हैं महाकवि पोतला। दोनों महाकवियोंने अपनी रचनाओंसे प्रबन्ध युग के बीज बोए। अतः इसे प्रबन्धपूर्व युग और कुछ मौलिक कथाकाव्योंकी रचना होनेसे इस युगको 'काव्य-युग' भी कहते हैं।

श्रीनाथकी रचनाओंमें शृंगार नैपथ्यम् भीमकाण्ड वासी कण्व हर विद्यास श्रीनाथियम् पस्ताटि नीरचरित्रम् ही प्रान्त हैं। स्वच्छन्द प्रकृतिके इस महाकविने अपनी सभी रचनाओंमें तथा अनुवादोंमें भी अप्रतिम प्रतिभा दिखाई है। पाश्चित्यपूर्व प्रौढ शैलीके साय-साय सरल देवी रचनामें भी श्रीनाथ कवि सिद्ध-हस्त हैं। इस महाकविने आन्ध्र प्रदेशके प्रत्येक राजदरबारमें अगम्य औरवकी प्राप्तकर रेड्डी-राजाओंसे कलकामियक करवा लिया। तेलुगु साहित्यके इतिहासमें इतना बिकारी और वैभवधामी कवि हुएच नहीं हैं।

महापद्य और महाकवि बम्बेर पाठना श्रीनाथके समसामयिक ही नहीं रिस्तेमें उनके माल जाते हैं। संस्कृतमें २० हजार श्लोकोंमें परिष्कृत महाभागवत पुण्यको पोतलाने ३ हजार पद्योंके महाकाव्यके रूपमें सम्पन्न बनाया है और उसे श्रीरामचन्द्रजीके चरित्रकर्मोंमें समर्पित किया है। आन्ध्र महाभागवत भक्ति और माधुर्यका आकर है। साहित्यिक महत्त्वके साय-साय लोकप्रियतामें भी इस काव्यका छानी नहीं है।

इस युगके अन्य प्रसिद्ध कवियोंमें पिस्तुसमरि पिस्तुदीरमर जकल अनन्तामात्य गौरम भक्ति विपल गोपयन्, मुरल नाटयक कवि आदि उत्प्रेक्षणीय हैं।

नन्दि मत्स्य और अष्ट सिंगल मान्यका सर्वप्रथम बहु कवि युग है जिसने प्रबोध चन्द्रोदयम् और बरह पुण्ड्रम् की रचना की। संकीर्तनोंमें—वय परमि—पयवान बैकटेद्वरका स्तवन करनेवाले तास्तपाक अन्नमाचार्य भी इसी युगमें हुए। मान्यके कबीर देवभाने अत्यन्त सरस और सुबोध शब्दोंमें मयाजमें फेरी कविवाचिताका खण्डन करके सभी मानवताका उपदेश दिया था।

मान्य साहित्यके इतिहासमें काव्य-महिमाओंके वैविध्यके क्लेश इस युगका विशेषत्व है। नयन-युगमें भिन्न कविता-शैलियोंकी नीव पड़ी थी जिनका पूर्ण विकास इस समय परिकल्पित होता है। इस युगकी अधिकांश रचनाएँ अनुबाह ही हैं पर ये सभी अनुबाह कथा-संविधानकी अपेक्षा रचना-कौशल और शैलीकी प्रधानताके कारण मौखिक-काव्यका-सा मान्य होते हैं। उन सभी रचनाओंमें कवियोंने शृंगारिक प्रसंगोंका विस्तारसे वर्णन किया है। इस समयकी विलक्षण प्रकृति संस्कृत नाटकोंका भी काव्यमय अनुबाह करनेकी है। कुछ कवियोंने कसबखानोंकी भी रचना की है।

इस युगमें राजमहेश्वरी आदि विद्यालय, औत्पल्य, कोण्डवीड आदि नए कविता-कल्पोंके क्रीड़ा-स्वक बने रहे।

प्रबन्ध-युग (ई १५००-१७०० तक)

प्रबन्धयुग मान्य साहित्यका स्वर्ण युग है। इस समय काव्यकलाका चरमोत्कर्ष हुआ। श्याम वृत्त और कस्मिन् वृत्तोंको छेकर अष्टादश वर्णनोंसे युक्त अनेक मौखिक काव्योंकी रचना की गई तथा बहुसूत्री तथा परमोज्ज्वल साहित्यिक कृतियोंसे सम्पन्न इसी युगमें तैलपुके परब्रह्महाकाव्योंकी भी सृष्टि हुई।

विश्वयनवरके महापदा श्रीहृत्पद्मदेवरायकी भुवन विश्व नामक तथा मान्य साहित्यके प्रसिद्ध कवियोंसे शीमायमान की। श्रीहृत्पद्मदेवराय स्वयं कवि और महान् पण्डित थे। इन्होंने तैलपुमें आमुक्तमास्यरा नामक महाकाव्यकी रचना की। इसमें गोदा देवी या आण्डालके मयवान विष्णुके साथ हुए विवाहकी कथा वर्णित है।

मान्य प्रबन्ध-कविताके पितामह कहानेवाले अल्लुछानि पेरुमल मनु चरित या स्वारीचिय मनुसम्मवम् नामक अष्ट प्रबन्धकाव्यकी रचना की। शृंगाररस प्रधान यह काव्य चरित-विश्व प्रकृतिके मनमोहक वर्णन शब्द चयन आदिमें अपना शान्ति नहीं रचना।

भुवन विश्वके आठ प्रसिद्ध कवियोंमें अण्डरिम्पश्री—मल्लन नन्दिरिम्पश्र धूर्जटि, नृगिह कवि रामव्रत कवि तथा रामहृत्पद्म कवि मुख्य हैं।

तैलपु साहित्यकी प्रथम कवियत्री भारतकूणि मोस्त इनी युगमें हुई थी। उन्होंने प्रीङ्ग शीर्ष में रामायणकी रचना की। इस युगमें एतिहासिक महत्वके कुछ और काव्य भी लिखे गए।

विश्वयनवरके पत्रनेके बाद दशरथने बहुमनी राजवंशके मुगलमान बाद पाहोले तैलपु साहित्यकी रचना कृतियोंमें प्रसंगीय सेवा की है। उपर्युक्त कथनोंमें सर्व

प्रथम सुधीय विजयम् की रचना करनेवाले कन्वुद्विर रचकविकी इत्याहीम कुतुब चाहने 'चिन्तनपासेम्' नामक पाँच देकर सम्मानित किया था। पोत्रिकण्टि तेरुगप्रका ययातिचरितम् छठ तेरुगुमें उत्तम और तद्भव चाम्योकी छौड़कर, किन्ना क्या प्रथम काव्य है।

रायम् युगमें तेरुगु कविताका चरम-विकास हुआ। इस युगके अधिकांश कवियोंन अनुवाद करना छोड़कर, पुराणोंके किसी प्रसंगके आधारेपर, स्वतन्त्र मौलिक काव्योंकी रचना की। इन प्रबन्ध-काव्योंमें प्रधानता शृंगार-रसकी रही। अष्टादश वर्धनोसि मुक्त इन काव्योंमें कवियोंकी कल्पना-शक्तिके ज्वलन्त उदाहरण मिलते हैं। इस युगमें पाण्डित्य-सर्वान एक गुण माना जाने लगा। दिग्गज काव्यों इत्यदि और भ्ययदि-काव्योंकी बाढ़-सी भागी है। छठ-तेरुगु में भी काव्य सिद्ध बात कम। इस युगका उत्कृष्टतम विषय मुसलमान राजाओंकी आन्ध्र साहित्यकी सेवा है।

इस युगमें कविताके नीडान्ध्र बने हुए ब-विद्यानगर (विजयनगर) गोकुण्डा मधुरा चन्द्रगिरि आदि।

दशम आन्ध्र-युग (ई १७००-१८७५ तक)

आन्ध्र सरस्वतीका विहार-सत्र अब दशमक तंजाऊर, मधुरा मैसूर आदि स्थानोंमें रहा। उन राज्योंके शासकोंन जो विजयनगर-साम्राज्यके सामन्त तेरुगु नायक व स्वयं काव्य रचनाकी और कई कवि-परिचरोंको आश्रय देकर उनमें कई सुन्दर काव्योंकी रचना करवाई। यही कारण है कि इस युगको दशम-आन्ध्र युग कहते हैं। भाषा-भयोपममें स्वच्छन्दता इत्यसे बढ़कर शृंगार (अस्मीलता) का वर्धन और मौलिक कल्पना-शक्तिके अभावके कारण कुछ विद्वान् इस युगको शीत-युग या ह्रास-युग भी कहते हैं। पर रचनाओंकी संख्या और वैविध्यके कारण हम कथनमें तत्पका अंश कम बियाई पड़ता है।

तंजाऊरके रघुनाथ भुपाल और उनके पुत्र विजयराजके समयमें तेरुगुके कई प्रसिद्ध काव्योंका निर्माण हुआ। कालक्रममें तंजाऊर मरहटोंके अधिकारमें आका गया। इन महाराष्ट्र राजाओंन तेरुगु साहित्यकी अनुपम सेवा की है। छहार्थी महाराजके किन्न को हिल्मी यमनागोंका भी इधर पता जाता है।

भक्तिकी अनन्य मधुरिमासे पूर्व जनेक इतियों (कौर्णतों) की रचना करने वाले त्यागव्या मधुर भक्तिते पूर्व पदोंकी रचना करनेवाले लोचव्या इमी युगके महान् कलाकार हैं। त्यागव्याकी कृतियोंमें संगीत और साहित्यका गंगा जमुनी प्रवाह है जो त्यागव्याके पदोंमें सर्वत्र साहित्य और अमिनयतकी विवेर्ण प्रवाहित है।

राज्य युगमें शृंगार रसका जो प्रवाह उमड़ पड़ा उस रसकी छापप्रति यह छाप युग ही आप्लावित रहा। यह प्रवृत्ति अस्मैम शृंगारकी बार अधिक मुकी हुई थी। जीवनमें जो निष्कम्पता और वितामिता फैल पड़ी थी उनीका प्रतिबिम्ब इन शृंगार-काव्योंमें देखनेको मिलता है। काव्यरचनामें हृदय-गजकी अवेदा

बुद्धि-यज्ञका ही विशेष बोन रहा। अतः काव्योंमें भाष-यज्ञकी अपेक्षा कला-यज्ञकी ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। पाण्डित्य प्रदर्शन ही रचनाका एकमात्र लक्ष्य रह गया। आधु-कविता और समस्यापूर्ति राजसभाओंमें सम्मान प्राप्त करनेके साधन बने रहे।

प्राचीन लेख्य कविता प्रबन्ध-प्रधान होती थी। कई वर्षोंकी सतत साधनाके बाद ही कविगत सम्पत्ति निर्वाणमें सफल होते थे। कविता उन्मादित होती थी और समासयुक्त संस्कृतपर बहुला धापाका प्रयोग करना पीरबका विषम माना जाता था। रासक युग तक बात-आते कविताकी चामोदति हुई। वह युग सचमुच भाष्य साहित्यका स्वर्णयुग है। उपर्युक्त काव्यकी गति मानों रुक-ती गई। गहनता एवं मौखिकता बिलकुल ओतछ-ती हो गई। कविगत अपने पूर्ववर्ती कवियोंकी रचनाओंका अनुसरण-अनुकरण मात्र कर सन्तोषकी लोभ लेंते। रचना-व्यक्त्याद, यत्कारोंकी प्रचुरता आदि काव्यके कला-यज्ञपर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा। आधुनिक कालमें इन प्राचीन सम्प्रदायों एवं परम्पराओंमें सम्पूर्ण शक्ति हुई।

आधुनिक युग (१८७३ से)

सन् सत्तावतका स्वतन्त्रताका युद्ध भारतीय साहित्यमें नव जागरणका सन्देश लाया। पाश्चात्य सम्प्रदायकी चकाचौंधसे मुंह फेरकर भारतीय जन स्वदेश और स्वभाषाकी ओर ध्यान देने लगे। समग्र राष्ट्रमें उद्बुद्ध यह नवीन चेतना राज-नैतिक धार्मिक सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रोंमें अभिव्यक्त होने लगी। राज-नैतिक क्षेत्रमें यह कार्यक्षेत्र अपने धार्मिक क्षेत्रमें आर्य समाज सामाजिक क्षेत्रमें ब्राह्म समाज आदिके रूपमें सुस्पष्ट हुई। विचारोंकी मलिन्यभित्ति कायम साहित्य ही है अतः नव जागरणका सुन्दर प्रभाव देशके प्रत्येक प्रांतकी भाषा तथा साहित्य पर परिस्फुटित होता है। भाव बही है भाषाकी पोषाक बिना है। आधुनिक युगकी कवी प्रकृतियोंका सम्पद प्रभाव ठेसुगु साहित्यपर पड़ा है।

ठेसुगुके आधुनिक साहित्यमें परिवर्तन प्राप्त करनेके पहले दो अर्थोंमें महानुभावोंके मार्गोंका उल्लेख होना चाहिए, जिनका भाष्य फिर नहीं है। सर ती पी साउन महानुभावने अनेक परिपक्व कर, ठेसुगुकी अनेक संप्रदायित एवं जीर्णप्राय पुस्तकोंका पुनरुद्धार किया। उन्होंने ठेसुगुका एक व्याकरण बनवाया और अर्थ-टी-ठेसुगु लेख्य-संश्लेषी संप्रदाय बनाए। दूसरे महानुभाव हैं कर्नल वाकिंग मेन्सन्नी जिन्होंने पाँच-पाँच बूमकर प्राचीन पुस्तकोंका उद्धार किया सुप्त इतिहास पर प्रकाश डाला और सन्तानमा कविदोकी रचनाओंकी प्रकाशित किया।

आधुनिक युगके प्रारम्भमें विद्वान्मूर्ति, (१८०९-६२) नामक पण्डितने भाष-व्याकरण की रचना की जो इन धापाका भाष्य व्याकरण माना जाता है।

अब हमने ठेसुगुके आधुनिक साहित्यके विभिन्न वर्गोंका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

कविता

तेसगु साहित्यके आवुनिक युगको बा भागमें बाँटा जा सकता है। आरम्भिक युग (१८५५ से १९०० तक) और नवीन युग (१९०० से अब तक) इस नवीन युगकी भी दो भागमें बाँटा जा सकता है नवीन और नवीनतम। हम इन्हें तीन काष्ठोंमें व्यक्त करेंगे। ये हैं प्रथम त्रितीय और तृतीय उत्थान-काल।

श्री कस्तुरी बीरेसक्तिमत्त पन्तुलु, श्री नुरबाबा अण्णारावजी और श्री गिडुपु राममूर्ति प्रथम उत्थानकालकी निर्माता हैं।

श्री बीरेसक्तिमत्त नवयुग-निर्माताके नामसे प्रख्यात हैं। वे मुख्य रूपसे समाज-सुधारक हैं। अपनी सुधारवादी विचारधाराको सामान्य जनता तक पहुँचानेके लिए उन्होंने कछमका आश्रय लिया। इस कार्यके लिए उन्होंने जन-सामान्यकी बोली-भाषा ही उपयोग किया। इस व्यावहारिक बोलीमें उन्होंने तेलगुके प्रथम उपन्यास प्रथम नाटक एवं प्रथम लघु काव्यकी रचना की। इन्हें तेलगुके नवीन साहित्यका पिता कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी। हिन्दी साहित्यमें भी स्वान माध्वलुकी दिया जाता है वही स्वान तेलगुमें आपका है। इनका समय १८४८ से १९१९ तक है।

पन्तुमूर्तिसे प्रभावित होकर साहित्य-क्षेत्रमें परापूर्व कल्पनाओंमें श्री नुरबाबा अण्णाराव मग्न हैं। समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावनाओंकी व्यावहारिक भाषामें काव्य-रूप रचनाओंमें आपका स्वान सर्वप्रथम है।

मिठी नहीं देघके माने

देघ है वहाँ की जनता ही।

। + +

मत कह कि मुझे देघका प्रेम है

करके देघा, लोगोंकी मलाई कोई।

+ + +

रुचलाई माला (घुड़) है

बनूना तो में भी बही।

य कुछ इनके प्रसिद्ध गद्य पद्य हैं। इन पद्योंमें प्रवेशका कोना-कोना गुंजा करता था। इनके पद्य मृत्युसंघरास एवं नीलगिरी पाठशु में संबूहीत हैं। कन्या गुरुकुल नामक नाटक इनकी कवितिका प्रकाश-स्तम्भ है जिसमें इन्होंने उत्थायीन समाजपर कुमत्ता व्यक्त किया है। इनकी भाषा व्यावहारिक है जिसमें प्रयास नाम मात्रको भी नहीं है। इनका समय १८९१ से १९१५ तक है।

पश्चिमोक्त हाथोंमें पढ़कर कृत्रिम बनी हुई भाषाको उल-बन्धनसे मुक्त कर, जन-सामान्यके सामन्य ज्ञानका ध्येय श्री गिडुपु राममूर्ति पन्तुलुकी है। इनकी रचनाओंका इतना महत्व नहीं है जितना कि व्यावहारिक भाषाके आन्दोलनका।

इन्होंने सभों (उड़ियाकी एक जाति) के लिए सिपि ब्याकरण और कौशला निर्माण किया। इनका समय १८९३ से १९४० तक है।

इस युगमें बाल्य-वधिका तथा भारती के संस्थापक भी काशीनाबुलि नागेश्वररायका भी विद्युत् स्थान है। अमृताम्बन की आमवलीको इन्होंने हजर साहित्यिक और राजनैतिक सत्रमें व्यय किया।

इस प्रकार प्रारम्भिक युग अपने अर्धोंमें तैयारीका युग वा नवभेतना एवं नवजातुतिका युग वा बिसकी गोबमें पसकर एवं परिपुष्ट होकर नवीन युग सामने आया।

नवीन युगको हम तीन कालोंमें विभाजित कर सकते हैं। प्रथम उत्थान-काल १९ से १९२ तक द्वितीय उत्थान-काल १९२० से १९४० तक और तृतीय उत्थान-काल १९४ से अबतक।

प्रथम उत्थान-काल

बीसवीं शतीके प्रथम भागमें एक नवभेतनाकी लहर सारे देशमें फैल गयी थी। भाषा शैली तथा काव्य-विषय आदिमें बहुत परिवर्तन हो रहा था। काँप्रसके बाल्योन्नत द्वारा देशकी दुःख स्थितिकी और युवकोंका ध्यान आकृष्ट हुआ। राष्ट्रीय भावनाएँ, प्राचीन गौरव-गान आदि विषय सामयिक कविताओंके मुख्य इतिभूत ब।

ऐसे समयमें प्राचीन और अर्धाचीनका सम्न्वय करते बच्चनवालोंमें भी तिर्यपति बेंकट कबुनु अग्रवर्ग हैं। कविताकी जन-सामान्यके सम्मुख लाकर, जनताके हृदयोंको काव्यकी माधुरीसे परिष्कारित करनेवाले इस कवि-युगमें नपर-नपरमें प्रतापधान और अज्ञाबधान कर कविताको राजबराहों और पवित्र समाजके काठगारसे मुक्त कर जनताके सामने उपस्थित किया। कविताके सम्बन्धमें जनतामें अभिरुचि पैदा करतवालोंमें ये सर्वप्रथम हैं।

इस युगमें एक कविका नाम भी विवाकर्क तिर्यपति घास्त्री और दूसरेका नाम वेस्तपित्क बेकट घास्त्री हैं। युव-वदिवाके रूपमें इन्होंने प्रतिभा की री कि हम दोनों मिलकर ही कविता करेयें और सबसे तिर्यपति बेंकट कबुनु के नामसे कविता करन लन। तिर्यपति घास्त्रीका देहान्त होनपर भी बेंकट घास्त्रीकी रचना भी होनेके नामपर ही प्रकाशित हुई है। बेकट घास्त्रीकी मशरु सक्कर द्वारा निर्वाचन प्रथम राजकवि थे। इनके समयमें बाल्य प्रदेशका प्रथक नगर इनके अवप्रानोंमें बूना करता था। आधुनिक कालके अधिकाम प्रमुख कवि इनके शिष्य प्रसिद्ध हैं।

पताधिक बाल्यवर्ग राजकवि स्व भी शीपार कृष्णमूर्ति घास्त्री पवित्र कवि थे। इनकी कविताका विषय अथन एवं शैली एकदम प्राचीन ठरकी है। शीय सभामेंति अरि हीनपर भी इनकी कवितामें अनुपम प्रवाह है। ये आग्यके घूमरे राजकवि ब।

अभिभव निकरगा के नामसे प्रसिद्ध भी तुम्हक रीताराध मूनि चौधरी राष्ट्रीय भावके अग्रणी कवि हैं। इनकी कवितामें तेभुग मुद्गाधरी एवं अति व्यावहारिक

पक्षोंकी झड़ी-सी लगी रहती है। राष्ट्र-गानम् आत्मार्पण धर्म-ज्योति
आदि इनके काव्य हैं।

प्राचीन वैभवपर लिखे गए श्री कोङ्कणि मुञ्जाराके पीठ कवण रससे
पूर्ण एक हृदय-शावक है। उदाहरणार्थ —

कहूँमें विपन्न रोई
तुममझामें सिपिल हुई
भँविर भीर महल बनीं
बान्धवोंकी बरबारे ।
इतिहासमें मग्न हो गईं
आन्ध्र वनुञ्जराबिजोञ्जबल विषय प्रतापकी कहानी
बच गई उसकी स्मृति स्वप्नकी नाई ।

यह पीठ विजयनगरके लखहरोंको देकर उसके विगत वैभव एवं वर्तमान
दुरवस्थापर दिख नाम कर, आठ भागू रीनेवाले कविके हृदयोल्लाससे भरा
पड़ा है।

महाकवि श्री विश्वनाथ शयनालयन पंडित कवि हैं। आप मध्य और पश्चिम
जनक श्रीस्मिन्ने प्रगटा हैं। प्राचीन और अर्वाचीन दोनों पद्धतियोंपर इनकी ककम
समान अधिकारसे चलती है। प्राचीन आन्ध्र वैभवकी सैकर इन्होंने बनेक कविताएँ
लिखी हैं। आन्ध्र प्रसिद्ध आन्ध्र-वीर्य अनु संहार आदि लख काव्य
किन्नरसानिपाठक एव कोङ्कणम्-पण्डित नामक पीठकाव्य वेह पञ्चम
एकवीरा आदि उपन्यास इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वेह पञ्चम मागों भारतीय
संस्कृतिका एक कोप है। इनकी विषयता इस प्रदेसकी प्रकृति मानसिक प्रवृत्तियों
एवं तैलगु भाषाकी स्वाभाविकताका यथातथ्य चित्रण करनेमें है। उनके पाठ इतने
सज्जे लगते हैं कि हम तन्मय हो उनके मूल-नुत्तमें अपनेकी समसामी मान लेते हैं।

आजकल आप रामायण कर्मवृत्त नामक महाकाव्य लिख रहे हैं।

श्री पुरंदर आपुबा भी सुप्रसिद्ध कवि हैं। आप प्राचीनताके पक्षपाती हैं।
किरबीसी स्वप्न-कथा मुमताज-महल आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।
श्री आपुबा ईसाई हैं फिर भी आपकी कविताओंपर हिन्दू-संस्कृतिकी बनिट छाप है।
आपकी रचनाओंमें अष्टुनों और समाजके निम्न जातिके लोगोंकी बरनाकी साकार
रूप दिया गया है। मेघदूतके आधारपर लिख गए पण्डितम् नामक पण्ड
काव्यमें समाजके बलिष्ठ प्राणियोंकी भावनाओंका दर्शयती बर्णन किया गया
है। आपका धर्म-ध्यान बड़ा सुन्दर है।

प्रथम उदयान कालके अन्य प्रसिद्ध कवियोंमें श्री पण्डितारम् बेकट छाप मास्त्री
बड़हादि मुञ्जाराब जनमञ्जि शायरि धर्मा बट्टमञ्जि धर्मलिंगा देही वेदम्
बेकटछाप मास्त्री आदिकी मजना की जाती है।

द्वितीय उत्थान-कास

तेलुगु कविता कमसः प्रौढ़ावस्थाको प्राप्त हुई। यह समाज-सुधार, राष्ट्रीय भावनाएँ आदि स्मूक विषयोंसे ऊपर उठकर, सूक्ष्म भावनाओंके लक्षमें विचरने लगी। इस युगको हिन्दी साहित्यमें छायावादी युग कहते हैं। तेलुगु साहित्यमें भी यह काल वैसा ही है। तेलुगुमें इस प्रकारकी कविताओंको भाव-कविता कहते हैं। छायावादीके सभी लक्षण इस भाव कवितामें देख जा सकते हैं। वे ही सांख्यिक प्रयोग भाषाकी बलता प्रकृतिका आकर्षण प्रकृतिका मानवीकरण आदि। रीति और नियमोंसे मुक्त हो कविता केवल भाव और लय-प्रधान होने लगी।

भाव और लय-प्रधान होनेसे य कविताएँ गेम जाती हैं और गीति-काव्यके लक्षणोंसे पूर्ण य कविताएँ आत्मपरक जाती हैं। कवि अपने व्यक्तिगत भावावेश-को बड़ी सचाईके साथ अभिव्यक्त करता है। यह स्पष्ट कहता है —

निवात मेरा या पञ्चर्ष लोक की
सबुर सुकुमार, सुधापाग मञ्जुवादि
में हूँ एक राहु-भटकी विधोष पीति ।

इस युगके कवियोंका विषय चयन जैसे निराशा है वैसे ही उनकी रीती एवं व्यञ्जना-प्रणाली भी नई है। इस युगके कवियोंका भाषा भाव रीती आदि सभी में अपूर्व परिवर्तन उपस्थित किया है।

इस नई धाराके विद्वद् प्राचीनता वादी आन्दोलन करने लगे। इस नए स्वरुमें रोमांटिक कविताको लोकोपिय बनानावाके भी वैकुण्ठस्वामी कुप्पा धारणी है। इस भाव-कविताका आरम्भ करनेवाके भी रामप्रोक्तु गुम्बाररावजी हैं। इन मुक्त कवियोंको एकत्र कर उन्हें प्राल्याहण देनेवाके हैं भी तस्कावसक्त विवर्षकर धारणी। इन्होंने साहित्य-समिति नामक साहित्यिक संस्थाका आयोजन किया जिसके मुखपत्रोंमें इन कवियोंकी भाव-कविताएँ छपा करती थी।

लक्ष्म-काव्योंमें नवीनता लानवाके और कवितामें नए प्रयोग करनेवासे भी रामप्रोक्तु गुम्बारराव हैं। इन्होंने लक्ष्म-कवि-ग्रहण कहे हैं। आपन अनेक लक्ष्मकाव्य और गीत मिले हैं इनमें कलिता तुषक-रुणमु स्नहलता पञ्चमुञ्जुतु आन्ध्यावली आदि प्रसिद्ध हैं। आपका सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत है —

कहीं भी चला जा
कहीं भी कहम रख
बिर्ला भी आत्मन वर बड़
सोई भी सम्मुख आय,
तराहू अपनी नानुनूमि पायीको,
अपनी जातिके पीरबकी रला कर ।

मुन्नाटाबजीने उमर शैयामकी रबाइयोंका मुन्बर पदानुवाद किया है। य
कनूतिय यह भाषा याब शैली समी दृष्टियेति मीलिक-से बिसाई पावते हैं।

हेनुकमस्की कुप्पादास्की इस युगके प्रख्यात बाबुक कवि है। इन्हें माध्य
साहित्यका पद कहा जा सकता है। प्रेमकी मधुरिया प्रकृतिसे तादात्म्य एवं
दुःखकी संवेदना इनके काव्यके मुख्य विषय हैं। इनकी कल्पना बड़ी ही मुन्बर हस्ती
है। इनके प्रसिद्ध कवच-काव्य हृत्पपलमु महीती कर्नाद ऊर्बेदी भादि
है। मुकुमार भाव एवं सरक भाषा भागों इनकी सम्पत्ति है। कवितामें उर्बेदीके नए
बनकार बिलानमें आज तिष्ठहस्त है —

होत केने रो, मुने काहेकी रातम ?

मेरी ही इच्छा बननी है,

मुने उर काहेका ?

कवि अपना परिचय इस प्रकार देता है —

देख मुन कितीका विषके न रिक्त

समसती बवा हो मुने ?

मे हूँ बनत छोक तिनिर लोच

का एकाधिपति ।

कवि प्रकृतिमें मिल जानेकी अपनी इच्छा प्रकट करता है—

पत्तनमें बन नव पत्तन

पूजमें बन पूज

डाली में बन डाली

बन नव कौशल

किन्तु इस बन में

किती तराह

बई इस बन में ?

श्री हृत्पपलजीके बाद श्री नंडूरि मुन्नाटाबका नाम आता है। काव्य भाषा-
में लिख गए इनके एकपाठक में पवित्र प्रथमके भावसे मरे मुन्बर पीठ है। इन
पीठोंमें भाषा और भाषकों होड़-श्री कपी बिसाई शैली है। इन पीठोंके साहित्य-राशमें
एक मुन्नाटा-सा कड़ा कर दिया। नूतन शैलीमें पवित्र प्रेम संयोगका आनन्द विमोचकी
व्याकुलता प्रतीभाकी आकुलता भावि बहुत ही मुन्बर रूपमें व्यक्त किए गए हैं।

इस युगके हात्ताबाही कविओंमें श्री दुन्बूरि रायिरेडई, प्रमुन है। आपने
उमर शैयामकी रचनाओंका 'पानयाला' नामक अनुवाद किया है। इरीकनूड
इनका स्वतन्त्र काव्य है।

प्रसिद्ध कवियुग्म श्री दिगाळि कर्माकाण्ठम एवं कादूरि बेरटम्बरराव है।
दोनों वैष्णविक बेरट गार्योंके शिष्य हैं। इनका प्रसिद्ध काव्य सौन्दरनन्दमु है।

इसमें शृंगारके दोनों पक्ष एक शान्त रसका सुन्दर परिष्कार हुआ है। इनकी रचनाओंमें सखका माधुर्य एवं भावोंका बल्य प्रवाह खूब मिलता है।

श्री जघाना पापय्या छार्ली बड़ ही माबुक है। करन भी के अपनाम से य कविता करते ह। उदय भी करन भी विजय भी बारि इनक सख काव्य है। इनकी रचनाओंमें भाव-गुरुं सख अपने आप निमरकीं घाएके समान करते है। प्राचीन शैलीमें नवीन भावोंका लेबर चलनवाली इनकी कविता बड़ी ही सरस और सरस हुई है। इस कामके अन्य प्रसिद्ध कवि भी बलुक सत्यनारायण मोरी नरसिंह छार्ली। गायनि मुम्बाराय अदिदि बापिरामु बारि है।

तृतीय उत्थान-काल

विषय प्रकार हिन्दी साहित्यमें छायावादकी प्रतिस्पर्धाके रूपमें तत्कालीन परिस्थितियोंके कारण प्रगतिवादका आविर्भाव हुआ जैसे ही तेजगु साहित्यम भी हुआ। भाव कवितार्की प्रतिस्पर्धामें यथार्थवादी कविताका आविर्भाव हुआ।

तृतीय महायुद्धके आरम्भ होनेसे पूर्व घारे समयमें ब्रिजठाका टाण्डव नृत्य हो रहा था। बहादी बड़ रही थी। समाजके मध्यम वर्गमें आर्थिक विपत्ताके कारण आगुति पैदा हुई। बगालम अकालका भीषण रूप आनेके सामने ज्वालाकी तरह प्रथक रहा था। सर्वत्र ह्राहाकार मचा हुआ था। स्वतन्त्रताकी भावनाके साथ उत्थापकका आन्दोलन और पकड़ रहा था। बिदेसी शासनका धमन और उत्पीड़न चरम सीमापर था।

इन परिस्थितियोंमें कविता हृदय विकल हो पया। उसन देखा कि कल्पना के संसारमें विचारन कलका अब धमन नहीं है। कल्पनाके आकाशमें कितना ही ऊँचा उड़ी पर खूला तो जमीनपर ही है। अतः यथार्थवादी कवि कल्पनाके आकाशसे नीचे उतरकर आर्थिक विपत्तासे पिछनवासे समाजका चित्रण करने लगे।

साम्यवादी विचारधाराका इस यथार्थवादी कवितापर विषय प्रभाव पड़ा। इस आधुनिक काव्यघाटकी प्रोत्साहन देनेके लिए नवसाहित्य परिषद की स्थापना हुई, जो भाग चलकर बम्बुदय रचयितल सपमु भ विनीत हो गई।

इस घाटके प्रसिद्ध कवि भी शीरगनु भीलिवातराव है। आप भी-श्री के अपन उपनामसे प्रख्यात है। नई कविताके विषयमें आपके य विचार है —

छायेके हल्लनोंको
तोड़ खीड़ लिख डालें।
कहे लोई अरे मुर्ख है क्या यह ?
तो कहें, यह कविता है।

इस अन्त-रहित कविताके लिए आप कई बलुओंको आवश्यक मानते हैं —

तिमिर, रक्त चन्दन
बलुक संघ्या राग

बाप-हृत-हिरण्य ररत
 कापालिक-नयन-नवाला
 कलकलता-कात्किता-जिह्वा
 बाहिये नख कबिताके सिम् ।

किर यह कबिता कैम हानी ? इरका प्रभाव क्या हापा ? ब कहन हूँ—

हिलनेवाली हिलानेवाली,
 बहलनेवाली बहलानवाली
 पहरी नीबको हडानेवाली
 पून जोवन प्रदान करनेवाली
 हूँ नख कबिता ।

यह कवि केवल कान्तिम ही समुल नहीं हूँ बह एक नवीन सामाजिक एवं
 आर्थिक व्यवस्थाकी स्थापनाकी प्ररणा भी देता हूँ ।

श्री श्री का प्रसिद्ध मुक्त-काव्य-संग्रह महाप्रशानामु हूँ ।

अनिर्दिष्ट मुष्पाद्यवरी प्रमनिवाची विचारधाराका बड़ ही कलात्मक रगम
 व्यक्त करने हूँ । अन्निर्वाणा इनकी कबिताओंका संग्रह हूँ ।

आर्य (भागवतुल मकर शास्त्री) प्रकयका आह्वान करनेवालोंमें
 प्रमुख हूँ । लमेबाहम नामक पुस्तकमें आपकी कबिताएँ मयहीन हूँ । इसमें ही
 आपका सितवाची नामक लच्छ-काव्य प्रकाशित हुआ हूँ ।

श्रीरंगम नाटयनबाबू अति ययार्थवाची कबिताओंके प्रसिद्ध कवि हूँ ।
 अति नवीन शैली एवं नवीन विचारधारामें आपकी कबिता कान्ती हूँ ।

क्याम्पौसामु विटकीलश्रीपमु (निडकीमें रिया) रधिर
 क्याति भादि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हूँ । आपकी मृत्यु हाल ही में हुई हूँ ।

श्री तेन्नि कूटि श्री बलकौंठा रामरामु, श्री पट्टाभि श्री कुम्पुति
 आर्यजानपुप भादि इन धाराके प्रसिद्ध कवि हूँ ।

श्री अम्पुब रविदर्शनायमान्नी पैराडी (अम्प कबिता) किलनमें सिद्ध
 हल हूँ । अजिनल नामक इनका पैरोडी पद-संग्रह कान्ती प्रसिद्ध हूँ ।

हिराबादके कवियोंमें श्री बागरभी प्रमुख हूँ । आप मरी प्रवागकी लक्षियोंमें
 नियुपताके नाप किल मकर हूँ । आर्य कबितामें मल्ल अर्षीम व्यक्तिगत भावना-
 ओका सबस और स्वाभाविक प्रवाह हूँ । अन्निधारा रन्नीमा भादि आपक
 प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हूँ । अस्तित्वमू सा लवारेटी आर्य एक प्रसिद्ध कबिता हूँ ।

मवल विचार अनायास हूँ कबिर्क वापस प्रमुख हाने हूँ । राधरभी कते हूँ—
 हूँ नहीं पहनने

व्याकरयका रैडिमेड सिवाल तो नमे बूब पडते हूँ

अनताके सानने (भाब मेरे) ।

कासोजि नाट्यमय ही नाट्यमय रेडडी अत्यन्त उत्पन्नाट्यभाषार्थ रामराजु तैम्पनाके प्रतिष्ठ कवि हैं।

इस प्रकार आधुनिक तैम्पु कविता यद्यपि बगला एवं अँग्रेजी साहित्यसे प्रेरणा प्राप्तकर प्रारम्भ हुई थी। तथापि अपनी विद्यमानाजोका उपासना कर मिन मिन धाराओंमें प्रवाहित होनी हुई, आधुनिक भारतीय साहित्यमें यथ विद्यित स्वातन्त्र्य विद्यमान है। यह भाषामें वस्तु चमत्कम टीलीमें छन्दोंमें भाषामें काव्यके सभी अंशोंमें एक नवीनता लेकर उज्ज्वल कविप्यकी ओर अग्रसर हो रही है।

माटक
आधुनिक आन्ध्र साहित्यके माटक यथा शर्मा व कीर्ति भागवतोंकी अनेका संस्कृत तथा अँग्रेजी माटक-परम्परासे अत्यधिक प्रभावित हैं। जूनके रचना विस्व-विधानपर संस्कृत व अँग्रेजी माटक साहित्यका ही प्रभाव परिलक्षित होता है।

१९ वीं शतीके उत्तरार्धमें धारवाड़के माटक समाजने आन्ध्र प्रान्तमें जून धूमकर धारसी और हिन्दी माटकोंके प्रचरण द्वारा जून तथा ही। इन माटकोंकी लोकप्रियतासे प्रेरित होकर तैम्पुमें माटक रचना करने और उन्हें अभिनीत करानेके लिये कुछ उत्साही बुधक मीरानमें आए। प्रत्येक नगरमें एक या दो माटक-समाजोंकी स्थापना हुई। काँपके प्रख्यात आन्ध्र नेता देवमन्त्र कोडा बेंकटप्पय्या पन्तुलु और आन्ध्र कैसरी टी प्रकाशम् पन्तुलु भी इनमें भाग लेते थे।

तैम्पु माटक साहित्यका प्रारम्भिक युग अनुवादात्मक और अनुकरणात्मक रहा है। आधुनिक आन्ध्र साहित्यके प्रतिष्ठायक श्री बीरेछास्त्रियम पन्तुलुन धाहुन्तल रत्नावती कामेरी बाफ अर्से आदिका अनुवाद किया। अभिज्ञान धाहुन्तल के ही तैम्पुमें कोडी पञ्चीससे अधिक अनुवाद हुए, पर बीरेछास्त्रियम पन्तुलुका अनुवाद अत्यन्त माना जाता है। श्री देवमुबेकटराय चास्त्रीन उत्तर रामचरित और हर्षके सभी माटकोंका श्री बद्दुवाचि गुम्बारपुडुने बेनी संहार का ठिकठि बेंकटपन्तुलु मुरापासस मूच्छकटिक बाल रामायण का वेदुरि प्रभाकर चास्त्रीजीने नाबानन्द का रामुभी रामुलजीने भास्की माधवका श्री चित्तकर्मति लक्ष्मीनरसिंहमजीने भाषके सभी माटकोंका अनुवाद किया है। इनके अतिरिक्त चापस बल्लराजु कौमुदी महत्सव 'कर्पूर मञ्जरी आदि लगभग सभी संस्कृतके माटकोंका तैम्पुमें अनुवाद हुआ है। अँग्रेजीसे सबसे प्यारके माटकोंके कई अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। बगला और हिन्दीके माटकोंके अनुवाद भी हुए हैं। महाकवि रवीन्द्रके माटकोंके कई अनुवाद हुए हैं जिनमें श्री बद्दुवाचि गोपाळ रेडडीके अनुवाद उत्तर हैं। श्री डी एल रामके "बन्धुपुत्र" "सिंठा" आदिका भीषार कामेरवर चास्त्रीन अनुवाद प्रस्तुत किया है।

सन् १८९ ई में श्री कोयल रामचन्द्र चास्त्रीन 'बन्धुवरी मधुकराबम्' की रचना की जो तैम्पुका सर्वप्रथम मौखिक माटक माना जाता है। सन् १८७५ में

श्री बाबिताला वामुदेन घांस्त्रीन नल्क राज्य नामक मौलिक नाटकरी रचना की।

स्वयं मौलिक नाटककोंकी रचनाकर, उनका प्रथम कर, लोहप्रिय बतान-
वासे प्रथम नाटककार और अभिनता श्री धमकरम रामहृष्णाचार्य हैं। इन्होंने
बस्सारी नगरमें स्रम बिनाशिनो समा' की स्थापना की। इस ममान आन्ध्र प्रान्तमें
प्रथमण पारसी कम्पनियोंके अनुकरणपर, नाटकको अभिनय किया। श्री आचार्यजीन
३ में अधिक नाटक लिखे हैं और य सभी नाटक अभिनीत हुआ चुके हैं। (पन्ना
नाटक पुस्तकालय प्रकाशित हुए हैं।) इन नाटककोंके कथावस्तु यद्यपि पौराणिक
हैं, फिर भी बतना-सम्बिधान और कल्पना चातुर्यके कारण ये नाटक यथेष्ट लोकप्रिय
हैं। चित्रनवीयमु विवाह सारगधर चन्द्रहनुमदकमिनी आदि इनके
प्रसिद्ध नाटक हैं। अंकोंको वृत्तोंमें विभाजित करना प्रोसेन और एपिसोडका
कल्पना सम्य स्वयं प्रापण बुन्नाल आदि परिचयी नाटकके प्रभावसे इनके नाटकमें
समाविष्ट हुए हैं। विवाह सारगधर तेलुमुका प्रथम बुन्नाल नाटक माना जाता
है। वर्तमान राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक समस्याओंको आचार्यजीन अपने
पौराणिक नाटकमें भी स्थान दिया है। श्री रामहृष्णाचार्यका उनका अन्य
सेवाशैली कारण आन्ध्र प्रदेश आन्ध्र नाटक पितामह के रूपमें याद करता है।

उसी बत्पारो नगरमें एक बूंदरे बर्कल साहब हुए हैं य हैं श्री कोलाचसु
श्रीनिवासराव। इन्होंने भी नाटककोंकी रचनाकर उन्हें अभिनीत करवाया है। इन्होंने
बाभी-बिक्तास नाटक ममा की स्थापना की। इन्होंने प्रथम नाटक चरित्र
(संगीत नाटककोका इतिहास) लिखा जो एक अष्ट परिचयपरमक और सामोचनात्मक
ग्रन्थ है। राजसाहबन भी काफी नाटक लिखे हैं। मुनन्दिनी परिचय विजय
नगर राज्य पत्तनमु प्रतापार्यीयमु महाबना मन्थ हृदिचन्द्र पाहुवा
पट्टामिदकमु आदि इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। चित्रपनगर राज्य पत्तनमु बहन ही
आर्यिय हुआ है। मौलिक रूपसे ऐतिहासिक और पौराणिक नाटककों रचनाक अति
रिक्त राजकीन संस्कृत तमिल और मराठी नाटकके अनुबाध भी प्रस्तुत किए हैं।
इन्होंने कुछ सामाजिक नाटक और प्रथमनाकी भी रचना की है। ये 'आन्ध्र ऐतिहासिक
नाटक-पितामह' के नामसे प्रसिद्ध हैं।

प्रतापार्यीयमु उपा बोरेक —य भीन मौलिक नाटक श्री बन्धु
बैकटगुद घांस्त्रीके हैं। इनमें प्रतापार्यीयमु जो काबलीय प्रतापार्य और निपत्री
मुक्तानोके निशानसे सम्बन्धित है तमगुके ऐतिहासिक नाटकमें अपना विविध
स्थान गता है। इस नाटकके रचना-विशेष चरित्र चित्रय पात्रोचिन माना
प्रयोग मूल्य अन्य आदि मको है। प्रतापार्यना मर्चो शीपन्धरुयम भासके शीपन्ध
रायपकी याद बिलगा है।

क बाटुरि-नेममु—२

पानुगच्छि सरसीनरसिहृदावर्जिने लमभन टील नाटकोंकी रचनाकर, 'आद्य चक्रसपिपर भी क्याति प्राप्त की है। इनके नाटकोंमें पानुका पदटासिपक, रामाकृष्ण विमलारामन बहुत ही लोकप्रिय नाटक है। ये नाटक रचनामें पद्य और मीलोंकी अपेक्षा पटक है महत्व देते हैं।

श्री चिक्कमणि सरसीनरसिहृदावर्जिना गर्वीरामान आद्यके नाटक-कालका अन्त और लोकप्रिय नाटक रखा है। इस नाटककी शिल्पी प्रतियां बिकी है उठनी साबद ही किराई दूधरे नाटककी बिकी हों। प्रसन्न-मादकमु परिजातान हल्लामु प्रह्लार चरित इनके अन्य प्रसिद्ध नाटक है। नरसिंहमर्जीक नाटकनार संसृष्ट नाटकका प्रभाव अपेक्षावत् अधिक है पर हान्य और ध्वंग्यपुस्त बार्नामाप अंशकी नाटककी घाद रिक्ताते हैं।

श्री सिक्कति-वेण्ट वन्तुलना किता 'पाण्डवी उद्योग-विजयमुत्तु' इतना प्रसिद्ध हुआ है कि उसके मधुर पद्य अन्तर्की जनानपर चढ़ गए है। इस नाटकका कृष्णाशौ-त्याका (श्रीकृष्णका दूत-कार्य) कृष्य बड़ा भासिक और प्रभावशाली बन पड़ा है। इन्होंने महाभारतपर आधारित कुछ और नाटक भी लिखे हैं।

श्री बकिरपसिक लक्ष्मीकान्ठनका सिगा 'तय्य हरिचन्द्र' भी काफी लोक-प्रिय बना है। इस नाटकके पद्य बड़े ही मधुर हैं।

तेलुगुके धामयिक नाटकोंमें श्री सुब्बाशा अण्णारावना कन्यामुत्तु (१८९७) सर्वप्रसिद्ध है। इस नाटकको लिख सत्तर वर्ष हो गए, पर यह आज भी गया है। इसने बड़ ही टील इनसे धामयिक कृप्रभावोके पोस लोली गई है। वेस्ता-प्रवा बाल-विवाह कन्या-मुत्तु (वर मुत्तु या इहेय नहीं) गई पीड़ीके मुक्कके डोंन फीशन आदिका भासिक चित्रण हुआ है। यह नाटक धामयिक मुभाके ड्रुटिम रत्नकर लिखा गया है। अठ नाटककी कर्तापीर उठना अद्य मही उठरता। इस नाटकका प्रमुख पात्र गिरीशमु आन्य प्रान्तमें ऐतिहासिक पुण्य-या बन गया है, जो डोनी और भोलबाज लोनोंका प्रतिनिधि है। परन्तु धामयिक नाटकोंपर कन्यामुत्तु का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

कवि-सम्पाद विरचनाय अत्यन्तारमभन कविता उपन्यासके अतिरिक्त नाटक रचनामें भी अपनी प्रतिभा बर्साई है। 'नर्तनसाला' मनारकली 'विनयमु' आदि आपके सुन्दर नाटक हैं। नर्तनसालान कीचक (किराट महापद्मका छात्र) की उदात्त विवाह नायकके रूपमें चित्रित करलका छन्द प्रयत्न किया है।

उपमुक्त नाटककारके अतिरिक्त सोमय्यु रामानुजयय भी संसारामयय यज्ञनारयय मन्नादि सूर्यनारयय छात्री कास्तकूरि नारययययय बुधिवडवेकट मुन्नायय पिगीक नारयययय आदि भी प्रमुख हैं। प्राचीन सम्प्रदायोंके वनुकुळ गङ्ग-नद्य मुक्त नाटकोंकी धामयी अधिकान्त ऐतिहासिक व पौराणिक रही हैं। इस प्रथम उत्पानके बाद तेलकोंका ड्रुटिकोच बरल गया। अठ वस्तु और टीलीमें स्पष्ट

परिष्कृतन कल्पित होता है। नम उत्पानकी रचनाओंकी सामग्री बहुत कुछ वर्तमान सामाजिक समस्याओंपर ही आधारित है। इसमें केवल यद्यका ही प्रयोग किया गया है। प्रायः व्याकरण सम्बन्ध न होकर बोलचालकी है। रचना-विधान और रचना-रूपके प्रबन्धपर अधिकाधिक पारंपार्य प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य आत्रयके नाटकोंमें मध्यवर्गीय परिवारोंकी समस्याओंका प्रभाव गहरी चित्रण मिलता है। सामान्य मनुष्यके हृदयमें वर्तमान परिस्थितिके प्रति परिलक्षित होतपाके भय शंका आदि मनोवृत्तियोंके पित्रयमें भी आश्रय सिद्धहस्त हैं। मर्कटोप (माइका मकान) कप्पलु (सैंडक) 'मय' आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। कौपले बेंकट रामराजके अपने नाटकोंमें सामाजिक दुराचारोंका लक्षण बड़े पारदार दृष्टाने किया है। श्री पतिघट्टकी पत्नके पदचु (धार्मिक मुक्ती) में किसान और जमींदारके संपर्कका सुन्दर चित्र है। श्री बुद्धिबाबूका 'आत्म बन्धन' श्री श्री श्रीमन्नाके पौलित कलिराज रामराजके मास्टरजी पुनर्बन्ध भी अच्छे नाटक हैं। इनके अतिरिक्त नरसराज जि मूर्त प्रक्य श्री राममूर्ति नरसिंहराज आदि क्वातिप्राप्त नाटककार हैं। माना जाता है कि अबतक तेनुगमें कोमी हाथी हजार नाटक लिख गए हैं।

एकांकी

गत दो दशकोंसे बड़े नाटक लिखनकी प्रथा कम होती जा रही है और एकांकीयोंका प्रचलन बढ़ता जा रहा है। मुख्यतया कामेज और म्बूजके बापिक उल्लोके उपलक्ष्यमें और भासिक पत्रोंमें प्रकाशनार्थ लिख गए इन एकांकीयों पर परिचयी प्रभाव अधिक है।

महासके मू पू मुखर न्यायाधीश श्री पी श्री राजमन्तार तेनुमुके सर्वप्रथम एकांकी-लेखक माने जाते हैं। इनके एकांकीयोंमें मध्यवर्गीय समाजकी समस्याओं और दुराचारोंका प्रभावगहरी चित्रण मिलता है। 'य भी कैस मरे है? हृष्यसर्प दाय किसरा? आदि श्री राममन्तारके सुप्रसिद्ध एकांकी हैं। श्री गुडिपाटी बेकटराजके अकांकीयोंपर फायददा गहरा प्रभाव है। श्री-पुरपक सम्बन्धका पुरपका दमन और श्रीकी कृष्णमाकी 'जर्म' ने बिलकुल मन् रूपमें पर बड़े ही पारदार दृष्टाने व्यक्त किया है। भले ही आप उनके भाषों व सिद्धान्तोंसे सहमत न हों पर भावामिष्यकितकी कुनस्ता प्रभाव और टेकनिककी श्रेष्ठतर उन्हें मरहता ही पढ़गा। श्री पतिघिपाटी कामेदरराजक अकांकी मधुर ह्याम्से मुक्त पाठकोंको बार-बार पढ़नेके लिए विवश करते हैं। डा गुरेमंड रामराज एतिहासिक एकांकी सिगनेस सिद्धहस्त हैं। चिन्ता श्रीकिंगुनु, मत्सादि विरचनायें श्री श्री नरसराज मत्सादि अवधानीय भी अच्छे एकांकी किने हैं।

१९४३ के बादके सेगकीय मर्बाब (अति!) के चित्रण भी मात्र अधिक भ्वाव दिया है। बुद्धिबाबूका उमरुपेयाम व त्रिप्यरिषिता इस नय दृष्टिकोणके

उदाहरण है। आजकी प्रगति में मानव-समाजकी प्रगतिका वैज्ञानिक विरलेपन प्रस्तुत किया गया है। श्री विनिपट्टीके श्री नामक एकाकीमें दार्शनिक भ्रोधावेष्ट से अभिमूढ होकर पत्नीको बरने बाहर निवास देनवासे एक नृत्त्यका मार्मिक चित्रण किया गया है। इस एकाकीकी विंगपता यह है कि पारवारिक जीवनमें सम्बन्धित होनेपर भी इसमें एक भी श्री पाव नहीं है।

द्वय पत्रिका भारती आन्ध्र पत्रिका आन्ध्र प्रभा भारि पत्रिकाओंमें भी मुन्बर एकाकी प्रकाशित हुए हैं।

श्री शिवमकर शास्त्रीज दीक्षित दुष्टिता पद्मनाबी करण चारण चरवती के नामसे गय नाटक लिख है विन्हीन कार्य प्रसिद्धि प्राप्त की। श्री श्री नारायण रेड्डीका लम्बनि पुष्पु (मननिष्ठा पुष्पु) इसी शैली मुन्बर गय नाटिका है। श्री विश्वनाथ लखनारायणका चिन्मरछानि पाठ्यु नाम्य है छिद भी उसमें गय नाटकक अग्रण पर्यन्त मात्रामें मिलने है।

आजकल नाटक और एकाकीयोंके क्षेत्रमें रेड्डीका भी विविष्ट स्थान है। इन नाम्य नाटककी अपनी कुछ दर्जाएँ और सीमाएँ हैं। इस विषामें श्री कपिल काशीपति बुच्चिबाबु गोरा शास्त्री पद्मराजु आरु रजनी मुनिभाक्षियम् नरसिंहराजन स्तुत्य प्रयाप किए हैं।

श्री कोयलु मुम्बारायका असी मुठा (असीका समूह) सर्गित नाटकमें प्रथम और अष्ट मात्रा गया है।

बालोपयोगी नाटक लिखनमें मार्स चिरंजीवि पामकि करस्वर्त बेवी चिन्ता बीबितुनु प्रमुप है।

इस प्रकार तेलगुन गठ बी घटाश्रियोंमें नाटक साहित्यमें उत्तमगीय रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। तेलगुका नाट्य साहित्य भारतीय नाटक साहित्यमें प्रमुख स्थानका अधिकारी है। क्या रचना क्या बस्तुविद्यान क्या शैली—सभी दृष्टियोंसे साहित्यका यह अंग उत्तम सिद्ध हुआ है।

उपन्यास

शिक्षकी मापाओंमें तेलगुमें ही सर्वप्रथम उपन्यास-रचना हुई। सन् १८९४ में ही श्री कोयकोण्ड बकररलम पन्नुकुडीका महाश्वेता नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ जो कारम्बरी का स्वैच्छानुसार है। सन् १८७२ में नरुखिसेष्टि बोपालकृष्ण छेदिका श्रीरंगराज चरित्र शब्दे अर्धम एतिहासिक उपन्यास है पर श्री बीरेमल्लियमका राजशर चरित्र (१८७८) ही तेलगुका पहला उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यासमें सामाजिक दुष्टाचारोंपर कटु व्यंग्य किया गया है।

चिन्तामणि पत्रिका (१८९२-९९) के पुरस्कार प्राप्त करनेवाले सैखकोंमें श्री अम्बालि रामचन्द्रु और श्री चिम्कमति लक्ष्मीनरसिंहमर्ती मुख्य हैं। नरसिंहम पन्नुकुडीने सामाजिक एतिहासिक हास्यरसात्मक और अनूचित कई उपन्यास

लित है। श्री किरदारपु बेंचट शास्त्रीजीने कई ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। 'मान्य प्रचारिणी' ग्रन्थमाता, 'विज्ञान चण्डिका ग्रन्थमाता और 'विगुणुक ग्रन्थमाता' न कई सुन्दर उपन्यास प्रकाशित किए हैं। बकिमचन्द्र और रवीन्द्रके बंयासी उपन्यासोंके सुन्दर अनुबाह हुए हैं। साथ ही धारण्य, प्रमचन्द्र आदि लेखकोंकी रचनाओंके अनुबाह बढ़ाप्रद हो रहे हैं।

श्री बिस्वनाथ अत्यन्त रामचरणीके उपन्यासोंका विधिष्ट स्वाम है। एक बीरा उनका प्रथम और सुन्दर उपन्यास है। इसका हिन्दी अनुबाह श्री अं हनुमन्व्याजी न शशिब भारथ (महास) में प्रकाशित किया है। 'बेह पङ्गु' (सहस्र फल) भारतीय (सासकर भाष्य) समाज और संस्कृतिना मानों बिस्वकोस ही है। बेकि-पलि कट्टा घमचक्र बह्मसैनाति स्वर्णको सीङ्गी' मा बानु आदि अन्य उपन्यास हैं।

श्री अश्विनि बापिरानुन कई सामाजिक उपन्यास लिखे हैं। नाटयनराज सीर्यक उपन्यासन बेह पङ्गुम् के साथ मान्य बिदबिद्यालयके पुरस्कारकी प्राप्ति किया है। इसका हिन्दी अनुबाह श्री ए रमेश चौधरीने छाहित्म अकादमीके लिए किया है। उनके हिमबिन्दु और कौलंगी श्री काशी लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं।

श्री श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री कुछ आत्मबलि पोतीचन्द्रकी भी अष्टमर्ष की जीवन-माथा कुम्बिबाबूकी अन्तमें बचनवासी श्री श्री कृष्णारणकी कठ-पुतली' बलिबाह कान्ठारणकी बीबार परकी तर्त्वीर पीगुकुभि साम्बिचरणकी उदय किरण आदि रचनाओंका सामाजिक उपन्यासोंमें विधिष्ट स्वाम है।

श्री जगन्नाथ स्वर्णानारायणकीके 'भारतपत्ति' नामक उपन्यासमें सामाजिक और राजनैतिक समस्याओंका सुन्दर चित्रण किया गया है। भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के बमिक विकासके साथ-साथ इसमें विभिन्न प्रभावशाली चरित्र और इसकी मनोहर सीरीके कारण यह उपन्यास अत्यधिक लोकप्रिय बन हुआ है। श्री उष्ण कश्मिरराज का यह (He) और यह (She) महीअर राममाइनराजका रचनाक और इवानक स्व श्री बर्टिकैट आन्ध्रारस्वामीका अन्ताका भार्गव' आदि उपन्यास सामाजिक और राजनैतिक विचारधाराकाके सुन्दर सम्मेलनके रूपमें लोकप्रिय बन हुए हैं।

ऐतिहासिक उपन्यासकारोंमें श्री नीरिनरसिंह शास्त्रीका प्रथम स्थान है। ऐतिहासिक उपन्यासोंके अन्य कैरकोमें सर्वथा नाटयन भट्ट राज्या मात पन्नारेकी आदि सुप्रसिद्ध हैं। जायबस श्री शास्त्रीजी श्री भाय नामक प्रसिद्ध महाबिकके जीवनपर आधारित एक उपन्यास तैमार कर रहे हैं। ऐतिहासिक लप्योंको सुन्दर अब सरत कबाके रूपमें नूतनकी शास्त्रीजीकी प्रतिभा अनुपम है। डा. बाबूमें नरसिंहमवा कनकाबिपक रघुनाथरायलु श्रीमति बमुन्धरा का 'संवाकरवा पत्र' एवं अष्टपति भूतिपाल श्री राममूर्तिका सुवनविभव नन्दूरि...

बैकटरमध्याका मधुमावती छत्रवाही सुप्रसिद्ध एतिहासिक उपन्यास है।
 श्री टैन्टिमूरिका बैधिराज मंगोडिकाके शासकके चरित्रका प्रभावशाली चित्र
 अंकित करता है।

छेकस समस्याओंको केन्द्र उपन्यास क्लिप्तवालोंमें श्री गुरुपाटि केन्द्र
 अक्षमका प्रथम स्थान है। भावोंमें शान्तिके साथ अक्षम का रचनाकीछल अपना
 शानी नहीं रखता। छेकसेरा ब्राह्मणीछमु ममीना मीवान आदि भाषके
 प्रसिद्ध उपन्यास है। श्री धनिकोंका हनुमन्तराज आदिन अक्षम का अनुकरण
 किया है।

हास्यप्रधान उपन्यास क्लिप्तवालोंमें श्री मुनि माणिक्यम नरसिंहाराज
 मोक्षपाटि नरसिंह शास्त्री अक्षमूत्रम रविमनीनाथ शास्त्री आदि प्रमुख हैं। नरसिंह
 राजके उपन्यास श्रेष्ठ होते हैं। उनके उपन्यासोंकी मायिका कान्तम आम्बके
 पाठकोंको पुनर्कित करती रहती है। नरसिंह शास्त्रीके बैरिस्टर पार्वतीशम की
 एक-एक पक्ति पढ़कर हँसे बिना नहीं रहा जा सकता।

मनोवैज्ञानिक प्रसिद्धोंको आधार बनाकर क्लिप्तवालोंमें कोडवटिगण्टि
 कुटुम्बराज मोनीचन्द बुध्मिबाबू प्रमुख हैं। कुटुम्बरका 'पढ़ाई' 'रत्न-अक्षम' आदिमें
 मनोवैज्ञानिके साथ-साथ कथा सम्बन्धन भी अच्छा बन पड़ा है। मोनीचन्दके अंधेरे
 कोने अक्षमके अक्षम आदि उपन्यासोंमें उनके अंधेरेका चित्रण हुआ है। सीटीस
 राजकोषा विद्वानाथ शास्त्री और बुध्मिबाबूने मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास
 लिखे हैं।

पिनिसेट्टी मुम्बाराजके बल्लटा (गोर कैना) सीरीयक उपन्यासोंमें श्री
 और निर्धन परिवारके जीवनके अक्षरकी सुस्पष्ट रूपसे चित्रित किया गया है।
 नटराजन मामक उमिल भाषा भाषीने धारवा के उपनामसे पलाई-मुलाई
 अपस्वर कीन छत्र मामक हीन सामाजिक उपन्यास लिखे हैं। इनमें निम्न और
 मध्यम वर्गकी समस्याओंका सुन्दर चित्रण हुआ है। अक्षम मृत्युम इनकी सेवनी
 नाम की बरत इनसे ठेकसु उपन्यास साहित्यकी काफ़ी आघातें थीं।

आयकक बासुसी उपन्यासोंकी बाढ़-सी जा रही है। इनमेंसे कुछ अच्छे
 उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं। बासु टेम्पोराज कौमुदि साम्बधिराजन अच्छे
 उपन्यास लिखे हैं।

कुछ महिमाओंमें श्री उत्तम उपन्यासोंकी रचना की है। अश्विनी सुरमात्री
 का सुप्रसिद्धा चरित्र (पौष्टिक) पुनर्गुण अक्षमीतरसमान्वाका सुप्रसन्न
 'अक्षमूत्रा' (सामाजिक) माण्टी अक्षुरका अक्षम हीमक अक्षुन्तरका
 बुरके पहाड़ आदि इस विधाम अक्षमनीय हैं।

इतर भारतीय भाषाओंके उपन्यासोंके अतिरिक्त अनेक बुरीयय उपन्यासोंके
 भी अनुवाद हो चुके हैं और हो रहे हैं।

इस प्रकार आन्ध्रका उपन्यास साहित्य विभिन्न उपन्यास-रचनाओंसे सुसम्पन्न है। अनुवाद अनुकरणके साथ-साथ विभिन्न शैलियोंके मौलिक और व्युत्पन्न उपन्यासोंकी भी रचना हुई है। तैत्तिरीय उपन्यासका विषय-साहित्यमें विभिन्न स्थान है। कहानी

यूरोपीय साहित्यके सम्पर्कसे आधुनिक आर्य पर साहित्यमें आई हुई विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियोंमें कहानीका विभिन्न स्थान है। पश्चिमी कहानियोंके विभिन्न शास्त्र-निबन्धन एवं रचनाके सम्पन्न होकर आर्यके लेखक कहानीकी यत्न संसारकी सर्वव्याप्त कहानियोंमें होती जा रही है।* पश्चिमी मरी विधाओंका सीधे-सीधे अनुवाद कीरे साहित्यमन्त्रीक हाथों केवल इन विधानों ही प्रारम्भ नहीं हुआ। स्वामी कृष्णाका अन्वयान १९१ में अंग्रेजीमें एक कहानी लिखी थी। उसके बाद आपका नाम सुधार आदि लेखक कहानियाँ लिखकर आपन कथा-साहित्यका सीधे-सीधे किया।

वेदमु वैदिकशास्त्र शास्त्रीन भीम-कालिकादकी कथाओंमेंमें 'वैदिक पञ्च विधा' और कथा सारित्यागर नामक तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित किए। श्री चमत्कारि लक्ष्मीनरसिंहमन्त्रीके राजन्वान कथावर्ण 'चमत्कारमन्त्री' विषयका गुच्छमु आदि कहानी-संग्रह प्रकाशमें आए। प्राचीन और मरिचक सामन्तव्य करते हुए विभिन्न विषयोंको आधार बनाकर लिखनवाले सुधारवादी लेखक हैं श्री केदारि निबन्धन शास्त्री। आधुनिक सम्प्रदाय में भी चोट करने हुए हास्य प्रदान और आलोचनोपेयी कहानी लिखनमें सिद्धहस्त से पिन्ता शीतलमु। श्री श्याम सुब्रह्मण्य शास्त्रीकी कहानियोंमें लेखक कहानीका ठोस रूप परिष्कृत होता है जो पश्चिमी प्रभावसे परे है। सहज सुन्दर कथात्मक और पद्यार्थ बतानाओंको लेकर इनकी एक-एक कहानी अमृतकी बूँद है। केवल कथात्मक हास ही पूरी कहानी लिखना इनकी विशेषता है। श्री लक्ष्मणवन्त विद्याकर स्वामी अश्वि बापिराजु विश्वनाथ सत्यनारायण आदि भी सुप्रसिद्ध कहानीकार हैं। व्यंग्य और चमत्कारसे भरी हुई कहानियोंके लिए प्रसिद्ध हैं श्री कोटवटिगण्टि कुट्टुम्बर।

कथावन्तुमें शैलीमें भावमें और भाषामें भी निराली मरिचकता मानवासे लेखक हैं श्री गुण्डाणि केवटवन्तु। साहित्यके इतिहासमें विषयका विस्तारकारी के नामसे प्रसिद्ध हैं। विरोधी शक्ति के दुःखालोचना करने हुए भी अपन मार्गपर अग्रसर बने रहे। मुख्यतः वैदिक सभ्यताको लेकर लिखी गई आपकी कहानियाँ काली प्रसिद्ध हुई हैं।

* श्री पालगुम्भि पद्मराजकी लिखी कथान नामक कहानी मन् १९५० में विश्व कहानी प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। हालमें श्री आपकी लिखी 'वीरावरीके कथ' शीर्षक कहानीको भी उत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

श्री मुनिमानिकसम नरसिंहराजजी काण्डम् तैलम् प्रान्तकी बहुशोके प्रतिनिधि है। आपकी कहानियाँ क्लान्त और प्रान्त दैनिक जीवनको मधुर हास्यसे भर देती हैं। इन कहानियोंमें काण्डम् को नामिका बनाकर गृहस्व-जीवनका सुन्दर चित्रण किया गया है।

श्री इन्द्रगण्डि हनुमन्काण्डकी और मोक्षपाटि नरसिंह शास्त्रिने अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। इन्द्रगण्डिकी दीर्घी पाण्डित्यपूर्ण है ठी मोक्षपाटिकी दीर्घी बलि सरस है।

श्री पाण्डुगुप्ति पद्मराजुल कहानियाँ कम लिखी हैं पर प्रत्येक कहानी अपने विशिष्ट शिल्पके सिद्ध प्रसिद्ध है। आनर्पक कथा-बन्धु, सहज सुन्दर बन्पाएँ मधुर वार्ताभाष आदि इनके टुकनीकमें चार चार कथा दिए हैं। सुधन कहानीने विद्वत् लघुकथा-प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर तैलुगु कहानीको महत्व प्रदान किया है।

श्री करन कुमर ने कहानियोंमें अपने उपनामको सार्थक किया है। आपकी कहानियोंमें दायीन जनताके पीड़ित जीवनकी शोकाके साथ-साथ आधुनिक सम्प्रदायके कारण पिछनेवाके सामरिकके चित्र भी मिलते हैं।

श्री गौरीचन्द्र एक सफल कहानीकार है। मार्क्सिक संज्ञाओंको और सम्कारके परदेमें किवैसी भावनाओंको आप बड़ ही प्रभावशाली ढंगसे व्यक्त करते हैं। ऐतिहासिक घटनाक्रम सामाजिक परिस्थितियों व्यक्तिबोकी मानसिक बलिविधियाँ और हेतुबुद्ध मिल-मिल बाधाकरणको समझकर रचना करनेवाले हैं श्री गौरीचन्द्र। सामाजिक और राजनीतिक समस्वासे प्रभावित रहनेके कारण इनकी कहानियाँ हृदयकी अपेक्षा मस्तिष्ककी अधिक प्रभावित करती हैं।

नवीन कहानी लेखकोंमें श्री बुद्धिबाबूका अपना विशिष्ट स्थान है। बँदजी प्राम्पापकके पक्षपर रहनेके कारण आपन अपने कहानी-विषयमें परिश्रम रीतियोंको अत्यधिक अपनाया है। रचनाओंमें दृष्टिमात्र होनेवाले उपमाओं आपकी व्युत्पत्तिको बलकाठे हैं ठी व्याख्याएँ, आलोचनाएँ आपकी प्रतिभाको। हृदयके साथ-साथ मस्तिष्कको भी स्पन्दित कर देनेमें आप सिद्धहस्त हैं। टुकनीकरण पूर्ण अधिकार इनके कारण कहानियोंमें विविधता का देनेमें आप समर्थ हैं।

मर्यादा धनिकोष्ठ अनिघोष्टि आदि लेखकोंकी बगला मर्बाबबाई लेखकोंमें भी जाती है। श्री एन आर चन्पूर और श्रीमती मालती चन्पूरकी कहानियोंका भी विशिष्ट स्थान है। मनुस्मृतिकम राज राम धर्मिक बलिबाबा काण्डा राज बमरेन्द्र पोटुकुभिसाम्बधिराज भास्कर मद्क कृष्णापत्र हनुकपन्नि बलियामूर्ति आदि अन्य प्रसिद्ध कहानीकार हैं। श्री मुस्कपूडि केंकरमन हास्यरस प्रधान कहानियाँ लिखनेमें प्रसिद्ध हैं। आनकल आप राजकीन बैठाक पञ्चविधति नामसे आपकी राजनीतिपर व्यस्यपूर्ण कहानियाँ लिख रहे हैं।

श्रीमती बासिरेबायी सीतादेवी इस्तिरस सरम्भती देवी श्रीमती (बॉपटर) श्री देवींग भी बच्छी कहानियाँ लिखी हैं। मन्बगिरि इन्बिरादेवी मद्भुति मुसोचना रानी जानकी रानी बाबि सेबिकाएँ अभी-अभी इस क्षेत्रमें प्रवेश कर रही हैं। इनका भाविय उग्मक बिलाई देठा है।

यूरोपिय और अन्य भारतीय भाषामोंकी अनेक अष्ट कहानियोंके सुन्दर अनुबाधेसे तेलगुका कथा-साहित्य सम्पन्न हुआ चुका है। बंधसाके धरतुपत्र और हिन्बि प्रेमचन्बसे तेलगुके कहानी साहित्यके पाठक अत्यधिक प्रभावित रहे हैं।

जीवनियाँ

तेलुगुमें आत्मकथाएँ और जीवनियाँ भी अधिक संख्यामें लिखी गई हैं। श्रीरेसलिंगम पन्नुम और चित्तकमलि सबर्मगरसिहाराबकी आत्मकथाएँ, उनके जीवनकी विषयता, शौक अतिरिक्त उस समयकी सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियोंका परिचय देनेवाली हैं। आन्ध-केसरि, 'टप्टूरि प्रभासम पन्नुम, कोष्ठा बेंबटप्यम्य पन्नुम अय्यदेकर कामेस्वरराधजी आदिकी आत्मकथाएँ साहित्यमें ही नहीं आन्धके काप्रस आन्धजनके इतिहासमें विषय स्थानकी अधिकारिणी हैं। बेदूरि प्रभाकर पासर्ब-बी-के' प्रभा प्रभाकरम् बेसे सुष्ठ आत्मकथा नहीं पर उनके तात्विक जीवनकी अनेक विषयताओंपर प्रकास डालनवाली हैं।

श्रीरेसलिंगम पन्नुम और चित्तकमलिजीन कई सुन्दर जीवनियाँ लिखी हैं। स्वामी बिरम्भानान्बकी रामकृष्ण और बिबेकानन्बकी जीवनियाँ विषय उल्लेख्य हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई महान् व्यक्तियोंके जीवन-कथाएँ लिखी गई हैं।

भासोचना

भासोचनात्मक साहित्यके अग्रगण्य भी श्री श्रीरेसलिंगम ही हैं। आन्ध कन्नुम बरिब हिन्बि साहित्यमें मियबन्धु बिनाद के समान ही आन्ध साहित्यके सभी प्राचीन साहित्यकारोंकी जीवनियाँ एवं रचनाओंपर प्रकाश डालती हैं। पुरजाडा श्रीराम मूर्तिकी कवि बी-बतिमूम भी एसी ही रचना हैं। इतर उल्लेख्य रचनाओंमें बट्टमञ्चि रामकिनारेड्डीजी (Sir C. R. Reddy) का कवित्व-शब्द-विचारम् पेन्डुपाल बेंबट मुष्ठहान्य शारर्ब बी-का महाभारत बरिबम् अनन्तकृष्ण समर्बिका बेमना और सारस्वताकाऽम् पुटपति नारायणाचार्यका प्रबन्ध भाषिकाएँ बिरम्भाब सत्यनारायणर्ब का नमयकी प्रसन्न कथा-कवितार्बमुक्ति कोराब राम-कृष्णय्यर्बका महाभारत कविता बिमर्शनम् बेदूरि प्रभाकर पासर्बजीका शृंगार शीनाबम् आदि प्रन्ब हैं। साहित्यके इतिहासमें कन्नुम बेंबट नारायणराबका 'मंगह आन्ध-बादगमय बरिबम् टकुमब्ब अय्युनराबका बिजयनगर साम्राज्यका आन्ध बादगमयम् कुलपधि सीतारामय्यका नम्बाछसाहित्यबीबुल नम्दूरि बेंबट रामय्यका 'दलिनाम्ब कवित्व बरिबम् दिङ्बाल बेंबटराबकीका 'दलिनाम्बकबुल बरिब उल्लेखनीय हैं। अनुसंधानात्मक प्रन्बोंमें श्री बी रामराजुना ज्ञानपर

बाइरामसयू' भी दिवाकर्ल बेकटाबबानीका 'मप्रययुम' भी के बी 'रामकोटि घास्त्रीका तिवरुन कवित्त और बैरान्त भी के. बीरबहरराबका आग्र्य साहित्यपर भेयत्रीका प्रभाव उत्क्रेम योम्य है। तेनुमु भापाकी उत्पत्ति और बिकासपर डॉ. बिल्लमूरि नारायणराब डॉ. बन्दि जोगिचोमयाजि कोराड रामकृष्णय्या बन्सम बिन सीताराम स्वामी घास्त्रीके ग्रन्थ अष्ट है किन्तु तेनुमुमें आलोचनात्मक साहित्य सर्वनात्मक साहित्यकी अपेक्षा बहुत कम है।

हैदराबादमें स्थित आग्र्य सारस्वत परिषद् न भी कई अच्छे ग्रन्थोंका प्रकाशन किया है जिनमें मुरबरायु प्रताप रेड्डीका 'आग्र्योंका सामाजिक इतिहास' 'महाभारत-भाष्यपर दिग्गन्ध बिज्ञानोंके भाष्य' 'आग्र्य बाइयमय कवित्त' सन्निघानम सूर्यनारायण घास्त्रीजीका नाभ्यालकार तपह बिबरन मुख्य है।

निबन्ध रचनामें पामुत्रष्टि स्वर्गिनरसिहाउबने भारी के एह भाग (जो एडिशनके स्टेण्टरके समान ब्यप्यात्मक एवं आलोचनात्मक हैं।) मुद्रगूरि कृष्णाराबजी (कृष्ण पत्रिकाके प्रसिद्ध सम्पादक) के विविध निबन्ध कोमरामु कन्सबराबजीके स्वमनराय निबन्धाबसि 'मस्तम्पस्वि सोमयेसर घार्माजीके एति हासिक प्रज्ञान सैल कोराड रामकृष्णय्याजीके भावा और साहित्यपर सैल प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त 'गार्थी' 'आग्र्य पत्रिका' आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर काकी अच्छे सैल प्रकाशित होते रहते हैं।

इस प्रकार तेनुमु साहित्य बीरबकी परिभासे सम्पन्न बिदब-साहित्यके इतिहासमें अपने विधिष्ट स्थानका अधिकारी बना हुआ है।



कादरि वेंकटेश्वरराव
और
पिंगलि लक्ष्मीकान्तम
[कवि-परिचय]

कादरि वेंकटेश्वरराव और पिंगलि लक्ष्मीकान्तम

• • •

तेल्लु साहित्यके इतिहासमें दो कविमों काय रचा गया काव्य प्रबोध-
बन्दीयमु' है। यह पद्य-काव्य तमि मस्सम तथा बन्ट-सिगन (११वीं शतीका उत्तरार्ध)
मामक दो कविमों काय रचा गया। एक कवि एक चरण कहता तो दूसरा कवि दूसरा
चरण—इस प्रकार समग्र काव्यकी रचना होनी थी। इस कविमुगमके बाद तेल्लु
साहित्यके आधुनिक कालमें कई कविमुगमोंके दर्शन होते हैं। इन कविमुगमोंमें
विदपति-बेंकट कन्नुमु, बेंकट-रामकृष्ण कन्नुमु, बेंकट-पार्वतीश्वर कन्नुमु, वेवुल
पत्ति कन्नु आदिके नाम लिख जा सकते हैं। इस प्रकार दो कवियोंने मिसकर,
एक कविके समान कविता करनकी प्रथा सामय मान्य प्रयोगमें ही प्रचलित है।
यह बड़ी ही कठिन साधना है। काव्य-सिद्धता ही नहीं अबधान* करते समय

* अबधान का प्रकारने होने हैं अष्टावधान और शतावधान। अष्टावधान
में सौ श्लोकों तककी इच्छापर (विषय और बृत्त) संस्कृत और तल्लुमें क्रमसे
सौ भाग पद्याके प्रथम चरण बड़ना और अन्तमें पूरे सौ पद्योंको फिर सुनाना पड़ता है।
अष्टावधान में चार-श्लोकों जानु कविता सुनाना चारस पद्या या भाकाय पुराण
वर्णियोंको गिनना उत्तररत्न आदि भाठ कामाम चिन्तकी एक ही समय एकत्र रचना
पड़ता है। १२।

चौदहों वर्षकोके समय २५ या १०० पृष्ठकीकी जतकी इच्छापर विभिन्न दिपयोंपर आपु कविता रचकर सभी पद्योकी जमने मुना बेता था यह कवियुगम। इन कवियुगमें की तिरपति-बेकट बचल (निबानसं तिरपति शास्त्री और बेकटविहङ्ग बेकट शास्त्री) अति प्रसिद्ध हैं। आपुनिक तेसपु कवियोंमें उनके बहुतसे प्रत्यक्ष सिष्य हैं तां कई परोक्ष। एक प्रकारसे आपुनिक-तन्मु-आम्पमाहित्यके से ऐसे सूर्य हैं जिनसे प्रकाशमें सब सैन्य फैल पडा।

इस कवियुगके लक्ष्यप्रतिष्ठ सिष्योंमें पिपसि-नादूरि-जदि हैं। एक की पिपसि लक्ष्मीकान्तमजी हैं तो दूसरे नादूरि बेकटस्वररपण हैं।

श्रीहृदयदेवरयकुट देरवारके सुप्रसिद्ध कवि पिपसि मूरसके बंधाके हैं लक्ष्मीकान्तमजी। लक्ष्मीकान्तजीका जन्म कृष्णा जिलेके बल्लपत्तिका लक्ष्मीके आरंभक नामक गाँवमें १ जनवरी सन् १८९४ की हुमा था। आपकी माताका नाम सुदुम्बम्मा तथा पिताका नाम श्री बेकटरलम हैं।

बेकटरलमजीका जन्म कृष्णा जिलेके कादूर नामक ग्राममें १३ अक्टूबर १८९३ को हुआ था। आप श्री बेकटहृणग्याके पुत्र प पर अपने छोटे बंधाकी पार दिए गए थे। जहाँ आप बतक दिए गए थे उन बतकके नाम (माता-पिता) लक्ष्मी और कोण्डय्या थे।

लक्ष्मीकान्तमजीने पिता बल्लपत्तिका जमीनदारके आमुशानका में बीचके मुखिया बन बीजनपापन करते थे। लक्ष्मीकान्तमजीने मैट्रिक तक मल्लनीपट्टणम् के हिन्दू हाइस्कूलमें और ए. ए. (इण्टर) और बी. ए. वहीके मैत्रिक कालेजसे किया। १९०९में जब आप १५ की उमरमें पहुँचे थे तब तिरपति-बेकट कवियोंने मधुपर्कपट्टणम्में घटावधान किया। उधे देखते हैं लक्ष्मीकान्तमजीने कविता करनेकी इच्छा पैदा हुई। उसके बाद बेकट शास्त्रीजीसे आर्चीवाय प्राप्तकर आप लगभग तीन वर्ष तक मुम्बईके यहाँ रहे। वहाँ आपने संस्कृत और आन्ध्र भाषाओंका अच्छा अध्ययन किया।

सन् १९१९ में श्री ए. पाठ करनेके बाद आपकी नियुक्ति मोरिस पाठशाळामें आन्ध्र भाषाके अध्यापकके पदपर हुई थी। चार वर्षके बाद आप उही कालेजमें प्राध्यापक बन। पुन चार वर्ष बाद आप महास पिस्वविद्यालयके रिचर्स फेलो बने। तीन सालके बाद तन्जावरने सरस्वती महास-स्तकालयमें बैठकर आपन कई प्राचीन साक-पत्र प्रवर्धिका अध्ययन किया। आपन १९३३ में महास विश्वविद्यालयसे एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३१ में आप आन्ध्र विश्वविद्यालयके टेल्गु विभागेके आचार्यके पदपर नियुक्त हुए। बहुति अन्काल प्रहल करनेके पश्चात् लड़-साठ वर्ष आप आकासबाणीके विजयवाड़ा केन्द्रमें संस्कृत विभागेके निरीक्षक रहे। आजकल आप तिरपतिके बेकटस्वर दि.वि.वि.लयमें तेलुगु विभागेके अध्यक्ष एवं प्रोफेसरके पदपर हैं। ६८ वी वर्षमें इस पदपर नियुक्त होना आपकी विद्वता और बोधताका ज्वलन्त प्रमाण है। आप केन्द्रीम-साहित्य-अकादमीके भी सदस्य हैं।

राज्याकारमें प्राप्त 'द्विपद-मारुत' का आपने सुन्दर सम्पादन किया और उक्त सम्बन्धी अपनी एक विद्वत्तापूर्ण भूमिकाके साथ आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करवाया है। श्रीकेट्टरि प्रभाकर शास्त्री द्वारा सम्पादित 'रंजनाचरितायाम्' के लिए लिखी भूमिका लक्ष्मीकान्तमञ्जीकी विद्वत्ताका प्रदर्शित करनेवाली है। 'मधुर पण्डित' राज्यम् इनकी एक सुन्दर कृति है। जिसमें पण्डितराज जयसम्बाबके सुन्दर श्लोकोंका सरल व सरस अनुबाह प्रस्तुत किया है। गीतनी भ्यासमुम् आपके साहित्यिक एक बालोचनात्मक सर्वोत्कृष्ट संग्रह है। इनके अतिरिक्त आपन कई पुस्तकोंके लिए भूमिकाएँ लिखी और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर कई पाणिश्लेषपूर्ण लेख भी लिखे हैं। आकाशवाणीमें खूबे समय आपन सस्कृतके समग्र सभी नाटकके रेडियो रूपक प्रसारित किए हैं। युवावस्थामें एकल अभिनयोंके रूपमें भी आप प्रसिद्ध व।

केन्द्रेस्वरराजके पूर्वजैकि शरदा नाम करुणपट्टु वा पर जबसे वे कादूर में आकर बस गए, तबसे कादूरि बहूकाए। बचपनमें ही आपको आपके छोटे बालक यो ले किया था। आपकी प्रारम्भिक पढ़ाई तो कादूरमें ही हुई। ८ वीं कक्षा तक पुणेबाशमें पढ़कर, बहूवि आप मठर्लीपट्टणम् पहुँचे। वहाँ आपको लक्ष्मीकान्तमञ्जी अच्छी समझि प्राप्त हुई और केन्द्रपिण्ड केन्द्रेस्वामीकी सेवाका मुहूर्तपर प्राप्त हुआ।

स्वयं कविके लक्ष्मीमें मुनि —

विनक्ति कायं सुकवि तो

संपातम् केन्द्रपिण्डसङ्गुरूप व

धुं गविमाशुनि मावि

सं गीतान् पद्यरत्न सेतु जयस्तम् ।

[सुकवि विनक्ति लक्ष्मीकान्तकी समझि और गुरुवर केन्द्रपिण्ड केन्द्रेस्वामीकी रूपाने ही मुग कवि बनाना है। इनकी परिणामस्वरूप कुछ कविता करने में अपनी बुद्धिकी अपेक्षा ही बरमाता है।]

आप मग ३९ में ४३ तक मठर्लीपट्टणम् स्थित नगनक कालजके प्रिन्सपाक बन रहे। उनके बाद आपन आन्ध्रकी प्रसिद्ध सांताहिक कल्या पत्रिका के सम्पादनका भार संभाला। सन ३२ तक एककलापूर्वक उच्च कार्यका निभावा।

सर्वमहात्मनी और केन्द्रेस्वरराजकी एम् कविग्रन्थके शिष्य हैं जिन्होंने अपने बाल्यको जिनो उनके निम्नतर भी उमे विद्यार्थि-व्यवस्था ही माना है उनी परम्पराके अनुकर रहे भी सर्वमहात्म-केन्द्रेस्वर कवि या पिपनि-कादूरि कवि हुना चाहिए था। पर प्राचीन सम्प्रदायके अनुरूप कुछ बाल्य तो इन दोनों कवियोंन मिलकर लिखे हैं। उनपर नाम तो अत्यन्त-अत्यन्त ही लिखे पर है। तोतवरि बुलार-संग्रह सीतलजम्बु आदि बाल्य सेननि मिलकर लिखे हैं और कुछ बाल्य

सैकड़ों वर्गोंके समझ व या १०० पृष्ठोंको उगरी इच्छापर विभिन्न विषयोंपर आगु कविता रचकर सभी पद्योंकी जगते मुना देता वा यह कवियुग्म। इन कवियुग्मोंमें श्री निरपठि-बैकट कवच (दिवाकरम दिवपति शास्त्री और बेकटप्रियकट बेकट शास्त्री) अति प्रसिद्ध हैं। आधुनिक तेमयु कवियोंमें उनके बहुतसे प्रयत्न गिण्य हैं तो कई परोक्ष। एक प्रकारसे आधुनिक-शैल्यु काव्यताहित्यक से ऐसे सूर्य हैं जिनके प्रकाशमें नव नैतन्य फैल पडा।

इस कवियुग्मक लक्ष्यप्रतिष्ठ गिण्यमें विगलि-कादूरि-कवि हैं। एक श्री विगलि लक्ष्मीकान्तमजी है तो दूसरे कादूरि बैकटस्वरराज है।

श्रीहृष्यदेवायकके दरबारके सुप्रसिद्ध कवि विगलि मुरमके बराके हैं लक्ष्मीकान्तमजी। लक्ष्मीकान्तमजीका जन्म हृष्या जिलेके चम्कपल्लि तालुकेके आतमूब नामक गाँवमें १ जनवरी सन् १८९४ को हुआ था। आपकी माताका नाम कुदुम्बम्मा तथा पिताका नाम श्री बैकटरत्नम है।

बैकटस्वरराजजीका जन्म हृष्या जिलेके कादूर नामक ग्राममें १३ अक्टूबर १८९३ को हुआ था। आप भी बैकटहृष्यम्माके पुत्र से पर अपने छोट भावाकी पौत्र दिए गए व। जहाँ आप दत्तक दिए गए व उन दत्तकके नाम (माता-पिता) लक्ष्मम्मा और कौण्डम्मा व।

लक्ष्मीकान्तमजीके पिता चम्कपल्लि जमींदारीके आमुदारमका में गाँवके मुखिया बन जीवनयापन करते थे। लक्ष्मीकान्तमजीने मेट्रिक तक मछलीपट्टनम् के हिन्दू हाइस्कूलमें और एफ. ए. (इण्टर) और बी. ए. वहीके मीबल कालेजसे किया। १९०९म जब आप ८वी कक्षामें पढ़ रहे व तब निरपठि-बैकट कवियोंमें मछलीपट्टनम्में घताभधान किया। उधे देखते ही लक्ष्मीकान्तमजीमें कविता करनकी इच्छा पैदा हुई। उससे बाद बैकट शास्त्रीजीसे आधीशरि प्राप्तकर आप सगभग तीन वर्ष तक मुम्बईके यहाँ रहे। वहाँ आपन संस्कृत और आन्ध्र भाषाओंका अच्छा अध्ययन किया।

सन् १९१९ मे बी. ए. पास करनके बाद आपकी नियुक्ति मीबल पाठशालामें आन्ध्र भाषाके अध्यापकक पदपर हुई थी। चारवर्षके बाद आप सही कालेजमें प्राध्यापक बने। पुन चार वर्ष बाद आप मद्रास विश्वविद्यालयके रिजर्व फेलो बने। तीन सालके बाद तम्ब्राऊरके सरस्वती मङ्गल-सुस्तकास्यमें बैठकर आपन कई प्राचीन तालु-पत्र इन्वीका अध्ययन किया। आपने १९३० मे मद्रास विश्वविद्यालयसे एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३१ में आप आन्ध्र विश्वविद्यालयके तेमयु विभाजके आचार्यके पदपर नियुक्त हुए। वहीसे अयकाय ग्रहण करनेके पश्चात् छह-साठ वर्ष आप आकाशवाणीके विजयवाड़ा केन्द्रमें संस्कृत विभाजके निरीक्षक रहे। आपकक आप निरपठिके बैकटस्वर वि. विश्वविद्यालयमें तेमयु विभाजके अध्यापक एवं प्रोफेसरके पदपर हैं। ६८ वे वर्षमें इस पदपर नियुक्त होना आपकी विद्वता और शोभताका ज्वलन्त प्रमाण है। आप केन्द्रीय-साहित्य-अकादमीके भी सदस्य हैं।

तन्त्राङ्कमें प्राप्त 'द्विपद-भारत' का आपने सुन्दर सम्पादन किया और उसका प्रत्येक अक्षर अपनी एक विद्वत्तापूर्ण भूमिकाके साथ आत्म विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कराया है। श्रीवेदूरि प्रभाकर सास्त्री द्वारा सम्पादित रंगनाथ रामायणम् के लिए सिन्धी भूमिका स्वर्ण-कान्तमञ्जीकी विद्वत्ताका प्रदर्शित करनेवाली है। 'मधुर पण्डित' रामायणम् इनकी एक सुन्दर छवि है। जिसमें पण्डितराज अमलनाथके सुन्दर स्फोटकोंका सरल व सरल अनुवाद प्रस्तुत किया है। गीतमी व्यासमुक्तु आपके साहित्यिक एवं आलोचनात्मक कर्तव्योंका संग्रह है। इनके अतिरिक्त आपने कई पुस्तकोंके लिए भूमिकाएँ लिखी और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर कई पाण्डित्यपूर्ण लेख भी लिखे हैं। आकाशवाणीमें रूठे समय आपन सस्कृतके समयगत सभी भागोंके रेडियो रूपक प्रसारित किए हैं। मुवाबत्तामें सफल अभिगताके रूपमें भी बात प्रसिद्ध है।

बेंकटस्वरराजके पूर्वजोंके बरका नाम कुरुमटपु का पर सबसे बड़े कादूर में जाकर बस गए, सबसे कादूरि कहलाए। बचपनमें ही आपको आपके छत्र शत्रुमें पोर ले लिया था। आपकी प्रारम्भिक पढ़ाई तो कादूरमें ही हुई। व भी क्या एक गुडिबाबामें पढ़कर, बहुते आप मछरीपट्टणम् पहुँचे। वही आपको स्वामीकान्तमञ्जीकी अर्न्धी समिति प्राप्त हुई और वेद्वत्पिण्डळ बेंकटसास्त्रीकी सेवाका मुभवधर प्राप्त हुआ।

स्वयं कविके सम्भोंमें मुनिए —

पिण्डळि काण सुकवि तो
संभासम्मु, वेद्वत्पिण्डळवमुवहृप न
सुं पविमाभुनि पावि
के पीडोठ पघारजन धेतु अपततम् ।

[मुकवि पिण्डळि स्वामीकान्तमञ्जी समिति और गुरुवर वेद्वत्पिण्डळ बेंकटसास्त्रीजीकी रूपान ही मुन कवि बनाया है। इसीके परिभासस्वरूप कुछ कविता करके मैं अपनी बुद्धिभी अपभवा है। बरमाथा हूँ।]

आप उम् १९ से ४३ तक मछरीपट्टणम् स्थित मछनरु काकेबके त्रिन्धपाठ बन रहे। उनके साथ आपन आग्रहकी प्रसिद्ध साप्ताहिक कृष्णा पत्रिका के सम्पादनका भार सम्हाला। उन २२ तक सफरतापूर्वक उन कार्यको निभाया।

स्वामीकान्तमञ्जी और बेंकटस्वरराजकी एसे कवियुग्मके शिष्य हैं जिन्होंने ज्ञान काम्यकी छिपी एक किन्तनपर भी उसे तिरपति-वेद्वतीय ही माना है इसी परम्पराके अनुक्रम हैं हैं श्री स्वामीकान्त-बेंकटस्वर कवि या पिण्डळि-कादूरि कवि होता चाहिए था। पर प्राचीन सम्प्रदायके अनुरूप कुछ काव्य तो इन दोनों कवियोंके मिसकर लिया है। उनपर नाम तो मछन-मछन ही लिखे गए हैं। ठोसकरि, मुल्ल-संबह सौमरलण्डम् आदि काव्य दोनोंने मिसकर लिखे हैं और कुछ काव्य

जीर रचनाएँ अलग-अलग लिखीं ह। आपन अपनी रचनाओंमें परम्परा जीर गुरजोपर
 अथा भाषके साम आपन व्यक्तित्वकी भी कायम रखा है। प्रस्तुत संगम भी कादूरि
 बेंकटस्वररावजीपर ही लिखना है फिर भी स्वामी-शान्तमयीके बिना बेंकटस्वररावका
 पूर्ण परिचय नहीं दिया जा सकता। अठ दलोंका परिचय जीर दलोंके नामों (बेंकट
 स्वररावजीकी रचनाओंके अतिरिक्त) से उद्धरण दिए गए हैं। इन दोनों कवियोंके
 संगमने काकातरम बन्धुत्वका रूप धारण किया है। कादूरिजीकी बहुतायी लक्ष्मी
 पिबलिके सामेकी पत्नी है। पर इस सम्बन्धकी अपेक्षा उनका साहित्यिक संगम प्रगाढ़ है।

ऊँचा कर आजानु बाहु गोरु गरीर, कर्मीर बेहरा नाइवार नाक
 बनी सफर मूँछे मंछे कमवा जसमा बनी घौँ छान-छान बैसासे युक्त बन्ना सिर,
 ह्वाभमे ताककी बनी छडी पाँचोंमें पण्डिताळ बप्पक लारीका मुर्ता कम्पपर कासमीरी
 घाम या बारीवार लारीका उत्तरत्य मूँहमें कीमती तमाकूका सम्बा-पतका बुरट—
 संक्षेपमें यह कादूरिजीके बाह्य स्वल्प एव उनकी वैममूपाका वर्णन है।

—(वै राधाहृत्पमूर्ति)

२०वीं शतीके प्रारम्भमें मछर्लपट्टमम् आन्धकी साहित्यिक अर्ध राजनीतिक
 चेतनाका केन्द्र बना हुआ था। स्व पट्टाभि रींठारायभ्या मूटनूरिखण्णाराव बेंकट
 शास्त्री जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति उनी नगरमें रूठा करते थे। वहींपर कादूरिजीकी जीवनका
 अत्यधिक भाग बीता। आपका जन्म शुकिक एक वर्ग परिवारमें हुआ था अत आपके
 सामने आर्थिक समस्या कभी नहीं रही। असहयोग-आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण
 आपन पढाई छोड़ दी। सन् १९१३ के उत्थाग्रहमें जलकी हवा भी ला आप। आपकी
 रचनाओंपर सीधीवारका प्रभाव है। राजनीतिके बाव साहित्य अगत है। उनका
 धर्मत्व बन गया। 'हृत्पना' पत्रिकाका सम्पादन करते समय आन्ध प्रदेशके कई नगरोंमें
 साहित्यिक भाषण देकर आपन अपनी विद्वता एवं प्रभावशाली भाषासे लोगोको
 मुग्ध कर लिया था। १९४३ में यह साहित्य परिषदके तेनाकी अधिवेशनमें समा-
 पतिके परसे कादूरिजीन जो भाषण दिया उसका साहित्यमें एक विशिष्ट स्थान है।

रचनाओंके परिणामकी दृष्टिसे कादूरिजीकी कविताओंकी संख्या अधिक
 नहीं है। पर आपन जो कुछ भी लिखा उसन साहित्यमें अपना महत्वपूर्ण स्थान बना
 लिया है। कादूरिजीकी अपनी निजी कृतियाँ पौकस्त्य हूचयमु गुडियफ्टकु
 (मन्दिरीकी पण्डिया) 'माबाद्धु, माळर' (मेरे लाल मेठ पाँच) हैं। इनके अतिरिक्त
 समक-समयपर पत्रिकाओंमें प्रकाशित कविताएँ हैं। पिपलि-कादूरि कवियुगके
 नामपर १९२३ में ताळकरि (प्रथम वर्षके दिन) नामक कविता-संग्रह प्रकाशित
 हुआ। आन्ध साहित्यमें इस कविग्रहको अमरकीति देनवाका काव्य सौख्यरत्नम्
 है जिसका प्रकाशन सन् १९३४ में हुआ था। यह काव्य भी बेंकटशास्त्रीकी पण्डि-
 पतिके समारंभके समय गुड-बक्षिभाके रूपमें उनके चरित्रकर्मलोंमें छनपित किया गया
 था। मछलीपट्टमम्के नागरिकोंके जीवनमें तिस्पति-बेंकट कवियोंके प्रति अथा-व्यक्तिसे

प्रति मोर्गे बाट सम्पन्न यह समारोह आन्ध्र साहित्यके इतिहासमें ही एक रमणीय एवं अविस्मरणीय घटना है। इन समारोहमें कई कविधियोँन काव्यके उपहारोंके रूपमें अपनी मुद्र-दक्षिणा बुकाकर अपनाको धन्य माना। इस प्रकार समर्पित सीन्दर नन्दम् सेम्यु-सारदाकी सेवामें प्रस्तुत अपूर्व कृत्य है —

पुडमिरेडुलु तल्लुत्तुपुल्ल मोर्षय
 नविशु काल्क महुवाड
 अत्यम्मुत्तंवेण ममघामविद्यु
 अममकारकर्मन प्रतिमवाडु
 बीनुदोविकि वेने सोनलु नविशु
 वाडभापुविकि वेव नदिनवाडु,
 चिननाई वल्लि नविशुन कविताकम्प
 मेक पत्तिग वेसि यमुवाडु
 पूर्णकामुं त्यापियु भोविवेण
 मुदनि कनमोमुपेडेनी चिन्न कम्प
 म्हेत मदिशुकुनेनुपाक धारप्रवाणि
 कडकनुल आल्कोनु प्रसारकमत्तवाप्ति।

[चरनोंमें गत राजाओंके सात्त्व समर्पित भेटको स्वीकार करनेवाले मन्त्रप्रदान नामक आधुनिकता-याठका क्रम प्रचलित करनेवाले कार्योंमें मनु सरदाजवास बाङ्गमाध्यके लिए प्रसिद्ध ब्रह्मपनमें ही बरय कर आजवाली कविता-कम्पापर एक-माली सम घासन करनेवाले

पूर्ण काम त्यागी और मायी जो हमारे गुरु हैं,
 उनके आशसे उद्भूत होनेके लिए यह छोटा-सा काव्य आन्ध्र-सरम्बर्तके नयन-कोरींका प्रसार प्राप्तकर घासन बने।]

पीलस्व हृदय बुडिगण्डम् मेरे छाँग मेरा गीत इन तीन कविताओंकी एक बचहके रूपमें प्रकाशित किया गया है। इस काव्य-अंग्रहको कविने अपन बड़ भाई स्वर्णचामी रामहृत्पल्लव्यादीकी दिव्य स्मृतिमें समर्पित किया है। चर-गृहस्थी वाक-बन्धने तनी-भाई किर्नपर ध्यात रिण बिना बुपवकड बन नुपने रहनवासे इष्ट छोटे भाईना बड़ भाईन बिना किर्न शिकायतके लामन-गामन किया था।

मनु दीर्घक प्रथम कवितामें कविने बड़ी विनम्रताक साथ अपना परिचय दिया है। इन पंक्तिओंको पढ़नेसे कविकी मत्प्रताप ही नहीं अपितु सहृदयता एवं ईमावशातीका भी पता चलता है।

क सेम्यु वादुरि—१

मेरे लोग मेरा गांव शीर्षक कवितामें पितृ श्रद्धसे मुक्त हलाने लिए, कादूरिर्जन अफन बंगका और अपने ग्रामका हृदयबन्धन बर्णन किया है। उन्होंने कहा है—

अत्रयत्नम्मुवा नातु नधिबन्दि
कचनतेऽम्मु अर्द्धकचनमुन नु
तार्थमपु नंघु महान बन्धुबोपि
पुनमारम्भंत्तं नृत्तिबिर्कोदि।'

[साहज हीमें प्राप्त बोझी-सी कविता करनेकी सामर्थ्यको अपन बंधकचनसे इतार्थ बताया जाहा। यह भी ताथा कि इससे पितृ श्रद्धसे उच्छेप हा संहृया।]

इस प्रकार इस कविताके अन्तर्गत कविन अपने परिवार और अपन बन्धु बान्धवोंका काव्यमय परिचय दिया है। कादूर ग्राममें जानसे पहले इनके बरका नाम* ककपट्टु था। कादूरमें जाकर मूडिबीडके राजाके भाईसानुसार उस गाँवमें पटवारिके पदका निर्वाह करते रहे तबसे कादूरि कहलाए। इस कवितामें गाँवके परिवारवासियों आपसी मित्रता मौज्ज्वाला और सौहार्दका सुन्दर बर्णन किया है। यह बर्णन न केवल उनके परिवार तक सीमित है, अपितु पादचास्य प्रभावक सम्पर्कमें न जानबासे प्रत्यक भारतीय आर्य परिवारके लिए सामु होता है।

प्रस्तुत कवितामें पाता बचमन मलते हुए भी हृदयमें उमड़नवाली वैश्याके मारे बाँवकी प्राचीन बघा सम्प्रदाय प्रसार और वर्तमान परिस्थितियोंका प्रभाववाली चिन्ता किया है। इस कवितामें प्राचीन गाँवकी सम्प्रदाया सम्मिश्रित प्रयास परस्परके सीमनस्यके साथ वर्तमान अवनति स्वार्थपरतायताका हृदयशावक बर्णन किया गया है। कविके पूर्वज ब्राह्मण साहित्यमें 'प्रबन्धपरमेस्वर' और 'शम्भुदास' के नामसे प्रसिद्ध एरन के बपय थे। ये लोग पहले चरस्वाशा में रहते थे वहाँ से ककपट्टु और फिर कादूर पहुँच गए। यह गाँव पहले बहुत गरीब बघामें था। लेकिन अंग्रज शासकोंके कृपा लक्ष्मीपर (विजयबाड़ाके पास) बाँवका निर्माण करते ही उस प्रान्तकी कामापाल्ट हो गई। भूमि उपजाऊ बनी और सोना जयसने लगी। कृपाकी महरोसे पानी कादूर तक पहुँचा। इस तरहसे मालों किसानोंका पुष्प प्रवाह ही महरोसे होकर बहने लगा ही। फलतः कादूर अब लक्ष्मीका निवास बन गया। इस बाँवके सभी कुलवाले मिलजुलकर रहते और गाँवकी जलतिमें बिना किसी भेदभावके हाथ बँटाते। कविने प्राट.नाकमें नीदसे जाननबासे गाँवका बड़ा ही सुन्दर बर्णन किया है। चारो बकोंे साथ आपसमें एक परिवारके कोपो-बैसा कर्ता करते। अचमूच यह बैलकर आश्चर्य होता है कि उस समयकी और आजकी परिस्थितियोंमें फिटाता अन्तर भा गया है।

* ब्राह्मणमें प्रत्यक परिवारका अपना एक बंध नाम होता है, जिसे 'बरका नाम' (Surname) कहते हैं। प्रत्यक व्यक्तिके नामके पहले बरका नाम जोड़नेकी प्रथा है।

पश्चिमी जगत का सामुदायिक चिन्तन
 एवं लोकजीवन का सुव्यवस्थापन ?

[धार्मिक जीवन का यह सारा माध्यम विमर्श क्या और है ? यह पश्चिम-जगत का चिन्तन क्या है ?]

उन समयके सीधे पाप कर्म न करके रहे हों, एसी बात नहीं है, पर उस पापका लक्ष्य-लक्ष्यके सिद्धांतोंकी जाह्नवें छिपाता या जमीनको पुष्प कर्म छिड़ करना उन्हें न आता था। भारतीय धार्मिक जीवनक आदर्श ही जगत्त बचलन होने गए—इसे देखकर कबिका हृदय स्पष्ट हो उठा और उन मुत्तमम विनोदों स्मरण कर कबिका कोमल हृदय इच्छित हो उठा।

इन प्रकार कबिकामें पारिवारिक जीवनकी गरिमा भारतीय जीवनके आदर्श और विमर्श रूपमें आन्धके धार्मिक और पारिवारिक जीवनका प्रभावशाली वर्णन किया गया है।

इन लक्ष्यमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि श्रीरामचन्द्र आन्ध जातिके प्रियतम भगवान् हैं और उनकी गाथा परमपर्यन्त रही है। क्या साहित्यमें क्या हैनिक जीवनमें—वही मुनि, वही बड़े पवित्र नाम प्रतिष्ठापित हुआ मुनाई पड़ना। राम चन्द्रजीने बतवामके चौदह वर्षोंकी अवधि का अधिकांश भाग आन्ध प्रदेशमें रहकर और भी मोहावरीके विनारपर ही बिताया था। उन पावन-स्मृतियों आगुन करनेवाले बनकर स्वान और बिहू आन्ध देनमें यत्र-तत्र इच्छित-वैद्य होने हैं। मर्यादा-पुराणोंकी पुनीत गाथा मानवामें महानुभावोंमें आन्ध-साहित्य भय पड़ा है। काटूरिजीन भी रामकी गाथाकी एक नए रूपमें गाया है।

पारवत्य प्रभावके कारण हमारे देगके कई मनीषियोंने पौराणिक गाथाओं-को नए रूपमें देगने और चिन्तित करनेका प्रयास किया है। इनमें बंगालके माइकेल मधुसूदन दत्तका नाम सर्वप्रथम किया जाता है। पर इन लेखकों भारतीय सत्त्विकी विचार-धाराके विरुद्ध कुछ कल्पनाएँ की हैं कुछ वाक्य रहे हैं पर काटूरिजीके रावणका चित्र भारतीय विचारधाराक अनुकूल ही है। रावणके पिता पुत्रस्य परम निष्ठावान् और आशीष। वे तो साक्षात् ब्रह्मा थे। ऐसे पुत्रस्यका पुत्र है रावण। उसका हृदय अपने पिताके आरामानने प्रदीप्त था। कबिन पौत्रस्य हृदय नाम रत्नकर ही। वाक्यके इस पदपर पाठकोंकी इच्छि आकर्षित की है।

रावण चित्तु भगवानके उन परममन्त्रामें या जो बीरमाके तीन बन्धोंमें ही भगवानके सामिप्यकी प्राप्ति का उत्कण्ठ अभिषायी था। पुराणोंके अनुसार रावणके जन्मका वृत्तान्त इस प्रकार है। नरकमन्त्रन आदि ब्रह्मणि एन बार भगवानके वर्णन करने शैशुष्ठ पर्व तो जय-विजय नाटक द्वारापाठकों उन्हें अन्दर जानने राता। अधिपति बूढ़ होकर पाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वीपर जन्म लो। जय-विजय बन्धों विद्विधाने कन इतनेमें भगवान भी आए। तब अधिपति रावण विमोचनका

भार्य कतनाया। प्रकृत बनकर भी अग्नौम या विरोधी बनकर तीन अग्नौमों वैकुण्ठको बापस आ सकते ही। भगवद्-शास्त्रिभ्यमें विलम्बको न छह सकनबाल उन प्रकौन तीन ही अग्नौमों अर्थात् विरोधी बनकर ही लौट जानकी इच्छा प्रकट की। प्रथम अग्नौमों वै हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु बन और दूसरे अग्नौमों राजा और कुम्भकर्ण और तृतीय अग्नौमों प्रियपाल और बल्लभक। उन्हें वो भगवानके हाथों मरना था। और भगवान निरपराधियोंको मारजे कैसे? अतः उन्होंने लूब जी झौंककर पाप किए, जिससे स्वयं भगवानको वैकुण्ठ छोड़कर पृथ्वीपर अवतार लेकर उन्हें मारना पड़ा।

इस दृष्टिकोणसे कादूरि वेकटेश्वरराजजीकी रचनाओंमें राजाके चरित्रका बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है।

बस्य (समुद्र) इराय रामचन्द्रजीके भायभनकी बात सुनकर राजा प्रथम होकर कहता है—“किन्तु बिनोके बार उध राजाकी मुमपर हपा हुई? बीतों बसिं उन्नेका फळ किन्तुने बिनोके बार भिका?” अन्तमें वह कहता है—

पौकस्तस्यु, तिरिओल्नु
अभिकस्यो बसम्मु अन्नाहात
वारितभोवधि आ बंदुवारिदेंड
हृदयमुन् ओष्णि येकान्तमिच्छवधि
स्वामस्तमु बस्तुनति भिन्नयमुस्तस्यु
मचवने पुनर्बलनमागुत नलनु ।

[अग्नौमोंके गिवाहसवाल विष्णुके बभस्वकको अन्नाहातसे छत्रकर, उध छत्रमेसे हृदयमें प्रवेशकर, वहाँ भगवानसे एकांत प्राप्त करनेका इच्छुक है यह पौकस्तस्य। और वहाँ बलका स्वागत करेगा। यह मेरी बिनती जाकर सुना हो। वही फिर मिलन होगा।]

भीषण वीरको अपमानवाके राजाका एसा हृदयशाही चित्रण किसी रामायण कारने नहीं किया है। पौकस्तस्य हृदय की यह कविता तभीन कल्पनाका उज्ज्वल उदाहरण है।

कच्चिमुगी वैकुण्ठ मान पाए तिरुपतिकी पर्वत श्रेणियोंपर बिलसित वेकटेश्वर (बालाजी) के प्रति आन्ध्र जनताके प्रति पाठशाली कोई सीमा नहीं। उन सतों पहाड़ोंपर पर्वत बालवाके भुटनोंके बल बढ़नेवाके भगवानके सामने झोटे हुए प्रशस्तिना करणवाके सर्वस्व समर्पण करणवाके (सष्ट, उध वृष्यकी बेबकर हृदय और खरीर दोनों पुष्कित हो जाते हैं।) भक्तजनकी पुकारको सुन ही पड़नेवाके उध भगवानके दर्शनार्थ बल्यस्त धनितभाषसे वहाँ जाते हैं।

गुडियच्छुक (मन्दिरीकी अर्चिणी) नामक कवितामें कच्चिने श्री वेकटेश्वरके प्रति अपने हृदयव्यापार इस प्रकार प्रकट किए हैं —

नमस पूतर्माभनुकु,

गारिनुबम्मुक विश्वतुष्किन्

योगितमात्रमानसमुद्गीरित
 भंगद्वीपिकादधत्,
 सागरकल्पका हृदयधारत
 पटपङ्गीतिकादनुत्
 भीमुडिपद सम्बद्धनिनि
 धेतो बद्धलोकमुत् ।

[आपके मन्दिरकी शिष्टियोंकी ध्वनिही जो विश्वसृष्टिकी ताबी कप निगमोके मूलमन्त्रोके समान योगी समाजके मानसरूपी पुष्पाश्रमों जदित मंगल दीपोंकी काशियोके समान, सागर-कल्या (धर्मी) के हृदयरूपी धारत (कमल) के धमरके मधुगुञ्जारके समान हैं। वे आकाशमें फैल रही हैं, जिन्हें सारे लोक प्रबुद्ध (जागृत) हो रहे हैं।]

नीमावन्मुत् भीनुत्नितुमुत्,
 भीपादके पादुमुत्
 रैपुमापुत्नि बर्णिकोत्मुत्
 भीपेव यानिदिलो
 भीपंवेत्मुत् नटिकोद्विष्टदुत्ति,
 नेदु भी कीद्वे
 कपु ब्रुदप बन्धिताव धरमारुत्
 भीनु ब्रुपिपे ।

[तुम्हारे बरत-कर्मलोको ही छिर-आँसों लगा तुम्हारे नीत ही गाते हुए, धाम-सबरे तुम्हारा ही स्मरण करते हुए, तुम्हारे नामपर परमें भीप जलाते हुए, तुम्हारी बितवी करते रहते हैं। आज य धरमार्थी पर्वतपर बड़ तुम्हारे बर्णिके लिए आए हैं। इन्हें अपनी मोहनी मूछ बिला दो ना।]

अन्तमें बनि कहते हैं —

कसबुन् जिम्बेव नीव जिम्बेवन
 नीकस्यावपेहान वा
 मतमु जेधेव नटियलबिदु,
 विजल पोट्टुबी बियेदन्
 कुनुमाप्रदुत् नानि नीनिडेव,
 मरुन् भीमुदुन् भीवनन्
 बिसरन् ब्राह्मलोत् नानिडेव
 तंही अन्पञ्जमात्तनुन् ।

[शाङ्गु ईगा पार्न छिङ्क ईगा। तुम्हारे कस्याण मन्दिरम याचकरा नाम करेगा सनदियां छोड़ ईगा। टिक लीरमे धान बूट ईगा। लूक जैसे चाबक पकाकर तुम्हें खिलाईगा। तुम्हारे जूठ बरतन मीज ईगा। तुम्हारे पंगा हाकटा रहेगा। हे स्वामी! जम-जग्योमें पैर दाबन और छेबा करनके ऐसे अवसर हो।]

भगवानकी प्रार्थना करते हुए वे उनसे बिनयी करते हैं कि हरिजनों की पुकारकी भी सुनिएगा। हे स्वामी ! अब तुम्हारा इन बीनोंपर ध्यान देना उचित है —

एसेईकापेनो कोठने बेसति
सामी । नीबु, नित्यम्मु ना
पमुनु बतुक, नीबुनितुबु पवा
पइम्मु; कौवादि व
न्यमी बाकिनि डोरिक पी हरिजनून्
कँसाचिरे ? बीरलं
बिभनुचनुद शोडड बैनुपुल
किस्ती बभेपी बातिपी !

[हे स्वामी ! किष्ण कर्प हा पए तुम्हें इस पर्वतपर अबतरित हुए । रोम ही मापम तुम्हारे धर्मप आते हैं और तुम उनका कन्याम करते हो। आज तक इन हरिजनोंने क्या कमी तुम्हारी बहली पारकर हाप पसाया है ? इतने बड़े बेचता हो उन्हें मिरास करना तुम्हें कहाँ तक सोभा देता है ?]

प्रयतिवादी कवितामे कवि पर बलिष्ठ जनताकी बकासत करता है। जो जोय खरोस बने-बियमताकी निम्बाके स्वर मुभाई पड़ते हैं वह इस चौबीचारी कविली रचनामे गही। चौबीचाराका प्रयति-भार्न तो अहिंसापर आधारित है। कवि हरि जनोके उदारके लिए भगवानकी कन्या और कृपाभाबकी हीं बाचना करते हैं।

अब सन्मीकाम्मम और बैक्येस्वररुचर्बी द्वारा समिमिन्त रूपसे लिखे हुए काव्योपर एक बृष्टि बाखें तो समुचित होना।

शैली कवियोके नामपर तोलकरि (प्रबम बापके बिल) नामक ग्रन्थ एन् १९२३ में प्रकाशित हुआ है। यह विभिन्न विधयोपर समय-समयपर किसी हुई फूटकर कविताओंका संग्रह है। इस काव्य-संग्रहकी भूमिका आन्ध्रके प्रसिद्ध समालोचक और आन्ध्र विश्वविद्यालयके उपकुलपति स्व. सर. सी. आर. रेडडीने लिखी है। उन्होंने लिखा है—

“यह पुस्तक अनक कविताओये बिससित मुकुमार पुष्पमन्डरीके समान है। प्रत्येक कविताका रस औरम आकार-विभास बर्नन-रीली अनुपम और असाधारण है। प्रत्येक कविताकी शैली भी भिन्न है ये कविताएँ भावपीतोके नामसे (जाया वाली कविता) हाकमें प्रबलिष्ठ तरीक कविता-सधारसे सम्बन्ध है। प्रकृति-वर्णन सुन्दर और सूक्ष्म भावसे समन्वित है। प्रकृतिकी विल्लवृत्तियोंका अनुष्योकी सहज बहुरिभम विल्लवृत्तियोंके साथ सुन्दर सम्बन्ध किया गया है। ये कवि उच्चमूख स्वतन्त्र हैं। भारतीय और पाश्चात्य बाइमयके सारकी प्रहलकर तथा उच सारकी आत्मसात् करके उसके आधारपर अपनी अनुभूतियोंको खूब सिद्ध एकनेवाले हैं ये कवि।

इस पुस्तकमें कविताकी सामग्री कविनिष्ठा कोकिल सञ्जन्ति
ज्वारका लव विछोह अज्ञानकृतम रसास प्रथम भीर तुम कौन
है 'पिञ्जका सिंह भीर रत्न-तस्मक शीपक बाहू कविताएँ संग्रहीत हैं।
इसमें कुछ कविताएँ प्राचीन दीक्षीपर सिन्धी गई हैं और कुछ मर्दान दीक्षीपर। इन
रचनाओंमें हमें प्राचीन और नवीन बर्षन-दीक्षीका सुन्दर समन्वय दिखाई पता है।

बीड धार्मिक विचारोंका मनोहर काव्यमय रूप देनवाले महाकवि अरब
शोषका संस्कृत साहित्यमें विविष्ट स्थान है। अरबशोष महान् कवि न भीर छाप ही
छाप बीड धर्मपर अटल विश्वास रखनवाले धर्मज भी। अतः आपकी रचनाओंमें
काव्यके भावत्वमें धर्मोपदेशकी भाषा अधिक है। इतनी दृष्टिसे संस्कृत सौन्दर्य
की रचना हुई है। उसमें अतिक्रमण नन्द (बुद्धके सीतल भाई) के बीड समग्र होनेकी
कथा वर्णित है। उर्मी मूलकथाका आधार लेकर पिगलि-कादूरि कवियोंने तेजुगुम
'सौन्दर्यनन्द'की रचना की है। इसकी गिफती आयुनिज कालके प्रसिद्ध कविकार्योंमें
की जाती है।

आमूलमें कवियोंने स्वचार किया है कि संस्कृतके सौन्दर्य का
अनुकरण नाम-नाशका है। अथमुच ही वह अनुकरण नाम-नाशका ही रहा है।
तेजुगु काव्य सभी दृष्टिसे ही मौलिक बन पड़ा है। कारण स्पष्ट है कि रचनाके उद्देश्यमें
ही मूल्य नहीं है। अरबशोषका कथम बीड-धर्मका प्रचार करना था तो इन
कवियोंने विश्व प्रेम समाजसेवाके अतिरिक्त कथापद्यपर भी अधिक ध्यान दिया है।
सुन्दरी और नन्दके पारस्परिक और व्यक्तिगत प्रेमका बीडधर्म पद्य कथनपर विसृज
और पुनीत विश्वप्रदमें परिणत होना बर्णन बड़ा ही काव्यमय बन पड़ा है। प्राचीन
कथा-वस्तुको लेकर छाठ नवीके एक सुन्दर काव्यकी रचना की है पिगलि-कादूरि
कवियोंने।

प्रथम सर्गमें महारत्ना बुडका लवर-मवेग और धर्म-प्रचारका बर्णन है।
दुमरे सर्गमें सुन्दरी और नन्दके कामुक ब्रह्माण्डोंमें मग्न रहने समय बुडकी अपनी
पुकारका प्रभाव न सुनकर सोट बड़ना और अनिच्छापूर्वक ही नन्दका उग्रे
बुलानके लिए जाना वर्णित है। उस समयके नन्दके अकम्पाता सुन्दर विश्रय
दिखा गया है —

बुडपतमेन वेनुमन्ति मुमुक्षाया
वैलदिर्यं रक्षितं सागे वैश्वेनुकं कस्तनि
भूमिदस मय्य हसत ना भोव्येनपुड
निश्चयाम्भुन गदतः नितवकतः

* प्रायशार्मिण्यधर्मिक विषयवर्णनम्

मीथ्याप्रतिज्ञाम् वाच्यं ध्यायन् तत्रैव कविमदित् ॥ — (अरबशोष)

[बुद्ध-भक्ति बलवती जान डकेले
कामिनीकी रक्ति लीचे पीछ
सहरोपर बैठ हुंसकी जाई
न भाग बड न पीछ हटे।]

भक्ति और रक्ति के अन्तर्ग्रहमें जैसे लम्बकी देलकर बरबस कुमार
सम्बत की पार्वतीका ध्यान हो माठा है।

हातरे सर्पमें लम्बके निमल्लजकी बलमुता करके बुद्ध लम्बके हाथोंमें
भिखापात्र देकर माप बढ़ते हैं और बिहारमें चले पाते हैं। बचाप लम्ब
किष्कर्म्यभिमूढ़ है। उसका अनुसरण करता है। वही महारत्ना बुद्ध बोधि देलकर
बर्षोपदेश देते हैं —

निर्द्वी है मृत्यु

उसकी करमासका प्रतीकार है नहीं धरपर।

+ + +

बरा और रोप ही बी घोर रासस

मृत्यु देवताके इसारोपर भाचनेवासे। जादि।

तदुपरमत्त है अन्य भिक्षुओंको आशा देते हैं लम्बकी जबरजस्ती भिक्षु बना
हैं। बेचारे लम्बपर मानों यात्र पिटी। भनवानके चले बालपर, भिक्षु लम्बका छिर
मुँगा देते हैं। इस सर्पका अन्तिम पत्र बड़ा लुम्बर बन पड़ा है —

निम्बुमंडलि वैदिकिण पैनुमुलादि

बैदुकीनि विदुया विलपिचि कसरि

विलिचि वेप्लु बलि सोगसिस्ति नसि

मुम्बरीप्राण धनमु निमुल्लु हस्के।

[भिक्षु मंडलीसे चिटे, लज्जर,

याचना कर, रोकर, डिटकर

ऊबकर, बेहीस हो बिरकर (मूपर)

मुम्बरीका प्राण-धन सगा भिक्षुओंके हाथ।]

बीचे और पीचमें सर्पमें बिरह-वर्षन है।

छठे सर्पमें महारत्ना बुद्ध और लम्बके बाठाकापका वर्षन है। लम्ब जीबनमें
श्रेयकी महत्ताका वर्षन करते हुए कहता है —

मिय जनविहोन मीन जीबितनु मोदु

प्रथममाधुरी श्रीस्तिन वसुधु विवस

भात्रमेतिपु जाल, सेमम्भुसिनि

पम्ब निम्बकरनु बेरकलदे देव।

[प्रिय-अन-रहित जीवन है टूट बराबर
 प्रथम माधुरी एक बीना बस विनमर,
 प्रेम धून्यतासे बढ़कर बखिता है क्या और?]

उसका जबाब देते हुए भयवान कहते हैं कि ममता ही दुःख का कारण है।
 ममताहीन प्रेम ही नित्य है। इन सब दुःखों का कारण बर्हकार ही है। यह मत
 समझो कि बौद्ध धर्म प्रमहीन है। बर्ह-कवना ही इस धर्म का मूलाधार है। तुम अपने
 धर्मको सीमित क्यों करते हो?

इति सुमुमुक्षु नीबीकक पुष्पम्
 पुष्पकनेल ? येडवमुस्तु नाठि
 तापमबनेल ? तनय ममत्वही
 यम्मे शोक कारणम्मु सुम्मु ।

[है इतने फूल तो एकपर आसक्ति क्यों ?
 बुधा कीटा तो दुःख क्यों ?
 ममता ही है कारण दुःखका ।]

अन्तमें नन्द बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लेता है। उसकी इस इच्छाको कि सुन्दरीको
 भी संन्यास ग्रहणका अधिकार मिले मान लिया जाता है।

सातवें धर्ममें नन्द और सुन्दरी समाज-सेवामें रत बिलाए गए हैं।
 दोनोंका मिलन बिरहयम परिस्थितियोंमें होता है। नन्द एक मरणासन्न अनाथ
 स्त्रीकी सेवा कर रहा है। उस स्त्रीका नन्हा बच्चा सुन्दरीको वहीं लीज
 जाता है।

संस्कृत-काव्यके अष्टादश सगोंमें कैमि हुए मूल कथाका आधार लेकर
 मौलिक प्रतिभा और सरसता भौरकर, केवल साठ सगोंमें ही एक अनुपम काव्यकी
 कृष्टि की है इन कवियोंन। साठ काव्य सुमुमुक्षु भावनाओंसे परा हुआ है और
 उसीके अनुकूल वीर्यमें इस ग्रन्थमें भाभुर्य पुष्प कूट-कूटकर भर हुआ है। इस काव्यकी
 बिधाप्यता यह है कि यद्यपि यह दो कवियोंकी सम्मिश्रित रचना है, पर गरी भी
 इसका आभास तक नहीं मिलता।

सौन्दरतन्त्रम् का नाम कुनठ ही हैत धारनाका भास हुआ है। नायक-
 नायिका दोनोंका प्रयातना देनबाला यह काव्य है और इससे रचयिता कवि भी दो है।
 जिनके करकमनामें यह ग्रन्थ सम्पिन किया गया वे गुरु भी दो है। यह आकारमें
 काव्य होतपर भी अनुविधानमें नाटकक समान है। इस काव्यके विषय भी शृंगार
 और करवा-समाज-सेवा—यों है। वालर रकर्म-प्रयातना हलपर भी इसमें शृंगार
 रचना पूर्ण निर्वाह हुआ है। कतना न होगा कि इस प्रकार बढ़ ही स्वाभाविक
 बगसे इसमें हैत का निर्वाह हुआ है।

[बुद्ध प्रकृत बलवती भाग इकेल
 कामिनीकी रकित सीध पीछ
 लहरोंपर बैठे हुंसकी पाई
 न जान बड़ न पीछ हट।]

प्रकृत और रकित के अन्तर्गुहमें पंथ नन्दको देखकर बरबस कुमार सम्भव की पार्वतीका ध्यान हो जाता है।

तीसरे सर्गमें नन्दके निमग्नपक्षी अनगुना करके बुद्ध नन्दके हाथोंमें निष्ठापात्र देकर ध्यान बढ़ते हैं और बिहारमें चले जात हैं। बच्चा नन्द किर्तव्यविमूढ़ हो उनका अनुसरण करता है। वहाँ महात्मा बुद्ध बोधी देवताक प्रमोदवेद्य होते हैं —

निर्दयी है मृत्यु

उसकी करमातका प्रतीकार है नहीं धरपर।

+ + +

जग और रोद है दो चोर रासत

मृत्यु देवताके इचारोंपर ताबतबाले। धारि।

उदुपरान्त वे अन्य भिक्षुओंको आता देते हैं नन्दको अजररस्ती पिलु बना दें। बेचारे नन्दपर भागों जाय गिरा। भववातके चले जानेपर, भिक्षु नन्दका चिर मुँका देते हैं। इस सर्गका अन्तिम पद्य बड़ा सुन्दर बन पड़ा है —

भिक्षुमंडलि वैजिकिक पेमुमुलादि

वैदुकीनि विदुना विलिषि कसरि

चित्तिवि वेष्टनु वनिक, सोम्नतिसि नवित

मुन्दरीप्राच धननु निमुत्तु हाके।

[भिक्षु मंडलीसे चिते, लज्जर,

वाचना कर, रोकट, डोटकर

ऊबकर, बेहोष हो, गिरकर (मूपर)

मुन्दरीका प्राच-धन क्या भिक्षुओंके हाथ।]

चौथे और पाँचवें सर्गमें निरह-वर्जत है।

छठे सर्गमें महात्मा बुद्ध और नन्दके वातस्त्रापना वर्णन है। नन्द जीवनमें प्रेमकी महत्ताका वर्णन करते हुए कहता है —

प्रिय अश्विहीन नैत जीवितमु मोदु

प्रभवमायुरी प्रीतिन प्रपुत्रु विवत

भासनेनिमु आनु, वेमन्नुकेनि

पन्थ निम्बधरनु वैरकलदे देव !

[प्रिय-जन-रहित जीवन है दूँठ बरबर
 प्रणय मावुरी छक पीना बस दिनभर,
 प्रम धूम्रतासे बड़कर बखिता है क्या और?]

उसका बराब देते हुए भगवान कहते हैं कि ममता ही दुःखका कारण है। ममताहीन प्रम ही नित्य है। इन सब दुःखोंका कारण अहंकार ही है। यह मत समझो कि बौद्ध धर्म प्रेमहीन है। जीव-कबया ही इस धर्मका मूलाधार है। तुम अपने प्रेमको सीमित क्यों करते हो?

इति पुनर्कृत भीषणक बुध्यन्तु
 पुष्पकनेत्र ? येदवमुन्तु नादि
 तावमवनेत्र ? तत्रय बभूववही
 यन्मे शोक कारवन्तु मुन्तु ।

[है इतने फूल तो एकपर आसक्ति क्यों ?
 पुमा काँटा तो दुःख क्यों ?
 ममता ही है कारण दुःखका ।]

अन्तमें नन्द बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लेता है। उसकी इस दृष्टिकाको कि सुन्दरीकी भी संन्यास ग्रहणका अधिकार मिले मान लिया जाता है।

सातवें सर्गमें नन्द और सुन्दरी समाज-सेवामें रत दिखाए गए हैं। दोनोंका मिलन बिल्कूल परिस्थितियोंमें होता है। नन्द एक मरणासन्न अनाथ स्त्रीकी सेवा कर रहा है। उस स्त्रीका नन्हा बच्चा सुन्दरीको वहीं पीच साटा है।

संस्कृत-काम्यके अष्टादश सर्गोंमें फँसे हुए मूल कथाका आधार लेकर मौक्तिक प्रतिभा और सरलता धोसकर, केवल सात सर्गोंमें ही एक अनुपम काम्यकी सृष्टि की है इन कवियोंने। सात काम्य मुकुमार भावनासे भरा हुआ है और जहाँके अनुकूल वीर्यामें इस ध्वन्यमें माधुर्य गुण कूट-कूटकर भरा हुआ है। इस काम्यकी विशिष्टता यह है कि यद्यपि यह दो कवियोंकी सम्मिश्रित रचना है, पर वही भी इसका आभास तक नहीं मिलता।

सौन्दरलम्बु का नाम मुने ही है वीर भावनाका भास होता है। नायक-नायिका दोनोंकी प्रधानता देनवाला यह नाम्य है और इसके रचयिता कवि भी दा हैं। जिनके करवदलामें यह ध्वन्य उमपित किया गया वे गुद भी बो है। यह आकारमें काम्य होनपर भी बन्धुविधानमें नाटकक समान है। इस नाम्यके विषय भी शृंगार और कदवा-समाज-सेवा—या है। धान्त रचकी प्रधानता होनपर भी इसमें शृंगार रमजा पूर्ण निर्वाह हुआ है। कहना न होया कि इस प्रकार बड़ ही स्वाभाविक रूपसे इसमें वीर का निर्वाह हुआ है।

प्रयोजनकी एवावृत्तामें यह काव्य अपना मानी नहीं रखता। काव्यका प्रारम्भ बृहत्के हितोपदेशसे होता है और सारा काव्य तन्त्र और सुन्दरीक 'बौद्धीकरण' में संघन्य है। अन्त ही बड़े कवनाधारकी विजयमें होता है। रचनाशैली कथा-विधान निरिह-शालुमें आरिही बुद्धिसे यह काव्य सचमुच अत्यन्त सुन्दर है।

उपरोक्त काव्योंके अन्तर्गत समय-समयपर आभासकारी और अन्य पत्र पत्रिकाओंके लिए लिखी गई फूटकर कविताएँ दर्जनोंकी संख्यामें हैं। १९६ में केन्द्रिय साहित्य अकादमीकी तरफसे तेलुगु साहित्यके प्रारम्भसे लेकर आज तकके कवियोंकी रचनाओंका बृहद्-संकलन प्रकाशित किया गया है। इस सङ्ग्रहके सम्पादन श्री वेङ्कटरवरायण ही हैं। इस युक्तकमें कविताओंका एसा सुन्दर सम्पादन है कि पाठकके सामने तेलुगु काव्यके विकास-क्रमकी सुस्पष्ट झलकी उपस्थित हो जाती है। भूमिकाके रूपमें तेलुगु काव्य साहित्यके इतिहासकी एक सारक प्रस्तुत की गई है।

श्री कादूरि वैकटेश्वररायकी मधुररचनाओंमें वीथियों रेडियो वपक हैं। इनमें श्रीनिवास-कल्याणम् मुम्बयोजाल राधा आदि प्रसिद्ध हैं। वेकटेश्वरजीके राजकवि के पदपर नियुक्तिके समय 'आन्ध्र-गणिका' के विरोधी नाम संघम् (१९४९)के मासिक अंकमें विमर्ष-वेकट कथुम विर्षकसे बड़ा ही विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित किया है। आपके कई साहित्यिक लेख अप्रकाशित ही पड़े हुए हैं।

श्री कादूरिजीने अंग्रेजी और संस्कृतके कुछ श्रेष्ठ कवियोंका अनुबाह भी किया है। आपने संस्कृतके प्रसिद्ध कवि भास कृत स्वप्नवासवयता और प्रतिज्ञा-वीगन्धरायण का भी तेलुगुमें अनुबाह किया है। अंग्रेजीसे 'बय बोरड' 'एल्फो लैटस' आदि उपन्यास महात्मा गाँधीजीकी आत्मकथा रोम्यारोला कृत पौत्री महादेव मारिहृत 'अबुल-कलाम बाजाद' श्री ए एच पी अम्बरके विमूर्ति शत्रुघ्न आदि उपन्यासोंका भी अनुबाह किया है। पर आन्ध्र प्रदेशमें जनकी यह रचनाशैली अपेक्षा काव्य रचनाओंको ही महत्त्व प्राप्त है।

पौषीजीने राष्ट्रीय-युगतिमानके कार्यक्रममें हिन्दी-प्रचार को भी विविष्ट स्थान दिया था। पौषीजीसे आन्ध्रिक प्रभावित श्री कादूरिजीकी रचि हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकी बार प्रारम्भसे ही रही है। आन्ध्र राष्ट्र हिन्दी-प्रचार सम (बहिष्ग भारत हिन्दी प्रचार धमा महासकी धाखा) विजयवाड़के कार्यमें आपका सक्रिय सहयोग रहा है।

आज अपनी सङ्कठ वर्षकी उम्रमें भी श्री कादूरि वैकटेश्वररायकी निरन्तर साहित्य-सेवामें लगे हुए हैं। आपके दोनों पुत्र—श्री को-अय्या और विजयसारायी भी तेलुगु साहित्यकी भीष्मिमें यथावश्यक योग दे रहे हैं। मयबाल करे कादूरि सङ्ग्रह-आलोचक आनु प्राप्त कर तेलुगु-प्रारवाके घोषवर्षमें बार बाँध लगाते रहें।

कादूरि वेंकटेश्वरराव
और
पिंगलि लक्ष्मीकान्तम
[काव्य-सम्भव]

१. नेनु

लोकमु मधुं गविगा
 बाकोनुट निजम्मु सस्यु षाष्टितमु तुदि
 बाकुटदि सेक्ये प्पिट्टु
 पाकमुचेदि धपसु, बुद्धिपटिमयुदप्पेन् ॥१॥

पिगळि काम्त मुकवितो
 संगतमु, चेळ्ळपिळ्ळसद्दुमुक्कप म
 धुं गविमात्रुनि गावि
 धे , पोंडोक पघरचन चेतु जपत्तन् ॥२॥

मांघ्र गीर्वाणकविराजु, सांगत्तमुक्क
 लल रवींरुक्कींनुदु सस्यु गाय्य
 कुसुममाससु दलबात्तुकोनेदुपाटि
 सरसत धटिस्ले, बालु मी चम्ममुनकु ॥३॥

कविकुलनंघमी कवित
 गस्पम धेयनि चिन्त मा मदिन्
 दबुल्लु सुस्त एवो कवि
 नाममु वास्चिनबानि कीद्वर
 स्तवमपिनन् मदम्बयकभाविद्य
 मेनियु जेप्पेर्नति न
 द्र बेत्तिति यप्पुडप्पुदु म
 नंबुग बोधि विगुस्त्रनिचेदिन् ॥४॥

दुनिया मुझे कवि कहती रही। उस कथनको सत्य करनेकी इच्छा मेरे मनमें बनी रही। पर उस इच्छाकी पूर्ति हुए बिना ही उम्र बसती जा रही है, बुद्धिका तेज भी घटता जा रहा है ॥१॥

एकमात्र सुकवि विगलि लक्ष्मीकान्तमका साथ और गुरुवर भेद्लपिद्ल वेंकटसास्त्रीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है जिसके परिणामस्वरूप जो कुछ कविता करक में अपनी बुद्धिकी अपसृता ही बरसाता हूँ ॥२॥

आद्य और देवभाषाके कविबरोके काव्य, अंग्रेजीके सुकवियोंकी रचनाएँ, उधर कवीन्द्र रवीन्द्रके अमर गान, इन काव्य-मुत्सुम-मालाओंको सिर-आँधों रखनेकी सहृदयता प्राप्त हुई। वस, इस जीवनके लिए यही पर्याप्त है ॥३॥

कविकृत्ससे सराही जानेवाली कविता की कल्पना (रचना) नहीं की। इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है किन्तु कवि कहलाता हूँ। न ईश्वरकी स्तुति ही की या अपन बसकी कथाका कथन ही किया। कभी-कभी इस बातका ध्यान हो आता है तो थोड़ी चिन्ता हाती है ॥४॥

१. नेनु

सोरुमु मद्रं गबिगा
 वाकोनुट मिजम्मु सस्यु वांछितमु तुवि
 बाकुटवि लेक्ये विदु
 पाकमुबेदि बपसु, बुद्धिपटिमपुहप्पेम् ॥१॥

विगळि कान्त सुवचितो
 संगतमु, खेळ्ळपिळ्ळसव्गुह्कृप म
 ध्रुं गबिमात्रुनि गावि
 धं , गौडोरु पघरधन धेतु बपसतन् ॥२॥

ध्राप्र गीर्वाणकविरानु कांगल्लुक्कु
 लस रबीरुक्कीरुक्कु सरुपु गाम्य
 कुमुममारुक्कु दलुवास्सुकोनेरुपाटि
 सरसत घटिस्से, जालु मो जम्ममुनकु ॥३॥

कविकुलनंघमी कवित
 गस्पन धेयनि चित्त मा मदिन्
 बबुल्लु सुस्त , एवो कवि
 नाममु वास्सिधनवानि कीरुवर
 स्तबमयिनन्, मवग्गयकयाविघ
 मेनियु धेप्पनैति म
 स वेत्तिरि यप्पुहप्पुक्कु म
 नंबुन बोधि विगुस्सनिधेदिम् ॥४॥

१ में

०००

दुनिया मुझे कवि कहती रही। उस कथनको सत्य करनेकी इच्छा मेर मनमें बनी रही। पर उस इच्छाकी पूर्ति हुए बिना ही उम्र बसती जा रही है, बुढ़िका तेज भी भटता जा रहा है ॥१॥

एकमात्र मुकवि पिंगलि रुक्मीकान्ठमका साथ और गुस्वर भेद्लपिद्ल बेंकटघास्त्रीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है जिसक परिणामस्वरूप जो कुछ कविता करके मैं अपनी बुढ़िकी चपलता ही बरसाता हूँ ॥२॥

आन्ध्र और देवभापाके कविवरोंके काव्य, अँग्रेजीक मुकवियोंकी रचनाएँ, उधर कवीन्द्र रवीन्द्रके अमर गान इन काव्य-कृमुम-मालाओंको सिर-आँखों रखनेकी सहृदयता प्राप्त हुई। वस, इस जीवनके लिए यही पर्याप्त है ॥३॥

कविकृमसे सराही जानबाली कविता की कल्पना (रचना) नहीं की। इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है किन्तु कवि कहलाता हूँ। न ईश्वरकी स्तुति ही की या अपने बंशकी कथाका कथन ही किया। कमी-कमी इस बातका ध्यान हो आता है तो थोड़ी चिन्ता होती है ॥४॥

ज्ञेसियेवंग देवतलसेवल्,
 तीर्यमुलाड, क्षेत्रसं
 वासमोनर्ष, विप्रुस सपर्य
 सोनर्षन्, पैतृकम्मु अ
 डा सहितुडनै सन्नुप,
 बाननु धर्ममेदय, संजकुन्
 बोसिसि योग्य तेषु अ
 धोपतिके ज्ञेपिसाचुडुन् सवा ॥३॥

कृसमुनु विद्ययु रूपमु
 पल्लिमियु मा किञ्चि पपया, मविद्येस्तन्
 गळुपित मोलर्षुकोनि ज्ञे
 गल्लिनै बरिओस्कि नेडु कळवळपडुडुन् ॥६॥

म कभी किसी देवताकी सेवा की, न किसी तीर्थमें डुबकी ही लगाई। न किसी पुण्यक्षेत्रमें रहा न ब्राह्मणोंकी सेवा ही की। मैं पितृ-कर्मोंको श्रद्धायुक्त होकर नहीं करता हूँ। दान धर्मसे हाथ खींच लेता हूँ। किसी भी सभ्याके समय सूर्य भगवानको अर्घ्योंकी अञ्जलि नही भरता। उग्रतिका बात तो दूर सवा अवनतिकी ही सरफ बढता जाता हूँ ॥१॥

भगवानने उच्च कुस विद्या रूप सम्पत्ति सब कुछ दिया। पर उन सबको मैंन कलुषित ही किया उस बेकार गेवाया और अब मूर्ख बनकर हाथ-हाथ करता हूँ ॥६॥

एरडास धिय्यमु बोयि राजममु
 कायेगु मुयित, पुरिटिका
 पुरमुस बोयेनु मंडुवाल भयमम्मुल
 मन्किकायेन्, जला
 हरपावसेगमु बासि पांडुकु वेरळ्ळ
 दम्मे गुपांबुयुल
 सरसांत करणाबभिन् बोगडगा
 सवयबे कुण्णानबिन् ॥ ४ ॥

मल्लुगड कोसकुस्तो बो
 पुस्तो, बेसिमीटिकूपमुस्तो बसि वै
 रस्तो, बबुनेम्मिदिकुस
 मुस्तो मय्युड माडु बोसिचे सिरस्तो ॥ ५ ॥

घनपाठिये वासिगम भायवतुस
 हनमड्बधुडु सिम्भुसबुमेदि,
 पाणिनीयमु गाशि बठियिभि वञ्चिन
 प्रातूरि संकर रामसूरि,
 संगीतविद्याभ्यसन मुग्गुबास्तो
 नसवडिमट्टि पेड्यासवाए
 अनघवर्तमुसिगवाम्बवायुल, सदा—
 चारशोभितुलुप्युसूरिबाह ॥ ६ ॥

यक्षगानम्मुसाडि पेरबिनट्टि
 सासतुलु, सोबेचेप्येडि बुति तोड
 परिके भ्रुगुलुबाह मा पस्सेट्टुव
 कोलुबुजबिके योनाचरि कळसकेस्त ।

बिजयबसमिनाडु बेताळ पूजलु
 नामुघमुलपूज साचरिचु
 हैहयाम्बवायु सायिरील्लु पेर
 गापुलै बसिभ्रु मा पुरमुन ॥ ७ ॥

सास-सास मोटे भावसकी जगह अच्छेसे अच्छे भावस खानेको मिल्लत रग। सापडियोंकी जगह डघोड़ीदार धर वन। स्त्रियाँ दूरसे पानी भर खानकी तकलीफसे बच गईं क्योंकि अब धर-धरमें कुएँ खुदवा दिये गए। कृष्णा नदीके अन्त करणकी कृपाकी सीमाका अन्त कहाँ? उसकी प्रशंसा करनेकी सामर्थ्य ही किसमें है? ॥४॥

उस समय हमारा गाँव धन-दीप्तसे भरपूर था। चारों तरफ सरोवर, बगीच साफ और भीठे पानीकी बावडियाँ तथा चारों ओर हरी भरी फसम एसी छहलहा रही थी मानो श्री-सम्पत्तिने उस गाँवको भर लिया हो। हमारा गाँवमें अठारह कुलोंके लोग रहते थे ॥५॥

भागवत ब्रह्मक बुधवर हनुमन्त व जो पिष्ट जनामें अग्रगण्य और धनपाठी* थे। प्रातूरि शंकर रामसूरि बादीमें रहकर पाणिनीय पढ़कर आनेवालोंमेंसे थे। वेणुपाल बगके सञ्जन थे जिन्हें संगीत विद्या बचपनसे ही आयी थी। अनय धरित्रवाल थे इगुब बंध वाले। सदाचार घोषित थे उज्जुरि बगके जन। यक्ष गानोंका अभिनयकर सासान प्रसिद्ध बने थे और भविष्यकथन* करनेवाले परिक झुगुके ब्रह्म थे। इन सभी लोगोंने हमारा गाँवको सभी कलाधासे बिससित बसामण्डप बनाया था ॥६॥

विजयादशमीके दिन बीतासकी एव आयुधोंकी पूजा करनेवाले हृदय वाक्य क्षत्रिय 'आधिरि' क नामसे 'कम्म'† वन हमारे नगरकी पोभा बड़ात है ॥७॥

* वैश्यनोंकी संके एक एक छप्पी १२ बार जाति करते हुए पढ़नेको 'धनपाठ' और छद्म बार जाति करते हुए पढ़नेको 'धनपाठ' कहते हैं।

† ब्रह्मकी धारियोंकी स्त्रियाँ मूर्धने पावल डककाकर एक छोटीकी लकड़ीके साथ परवाली स्त्रीका हाथ पकड़ इधर-उधर घुमनी भविष्यका बचन करती हैं जिसे 'साये' कहते हैं।

आधिरि—हृदय वा विद्वत् रूप। आधिरि किमान अथवा 'हृदय वा बंगल बगाने है।

‡ कम्म—ब्राह्मणों की एक उपजाति। व वाक्ये भातकर किताब होते हैं।

काकतिबय्यभूमुबुल
 कालमुनं बरिवीर कठसुं
 ठाकमुलैन खडगमुस
 डाच्चिरि पट्टिकलन् , हसापुघ
 स्वीहृति बाडिपंटसनु,
 वेंचिरि, पाड्वडिमट्टि पस्सियन्
 वेकोनि रुपरेसलु
 रच्चिरि धारले तोंटिकापुसे ॥ ८ ॥

कासुपेट्टिनट्टि नेसनेस्सनु गनि
 गड्ड वेयनेषु कम्मबारि,
 कसमुझभमेरुगनट्टि कापुसकु मा
 पुव काणयाच्चियं रहिषे ॥ ९ ॥

अभिमानघमुसु नाल्मिवायुसनु, नि
 बभकसाहमुसु वेस्संकिवाव,
 कल्लिमियु बल्लिमियु जेरुवाव कडियास
 वार, काबेट वेमूरिवाव
 सडुपायजीवतास्पडुसु नागळ्ळुवा
 मॅरबाडुसु सुपनेनिवाव,
 करिसेतन्मुसु सत्ति गसभेसगावाव,
 कडुनोमिगल येस्संगड्डवाव,
 पाडिबप्पनि कंबमुपाट्टिवाव
 पेठगस सूर्यवेबरवाव निठसु
 पळुतेगल कम्मनायकुस हलमुत्ताम
 पल्लिय मोसंट बिहिरि भाय्यरेस ॥ १० ॥

अभिजताभिमानु सक्कुडिसवर्तनुसु
 धैर्यच्चिन्नुसु नुबारसनुसु
 पुट्टु मट्टु गळुगु गुरसि पेरिट्टि
 कापुसन्नु नायकारमु बाच्चि ॥ ११ ॥

काकरी बघके घासन-बासमें सोगोंने धनुओंके कच्छोंको घट कर
डासनवाले खड्गोंको अटारीपर छिपाकर रखा दिया था और अब उन
हाथोंमें हूस घामकर वे खतीमें लगे गए। ऊम्बड़ घने गाँवको उन्हीं
सोगोंने सम्हाला और उसे सम्पन्न बनाया ॥८॥

जहाँ कदम रखा, उस जगहको सोनेकी निधि बना सकनेवाले
'कम्म' जातिके लोगों और धोले-भाके 'कापु' जातिके लोगोंके लिए
हमारा गाँव फिर निवास-स्मान बना रहा ॥९॥

नार्ल बंधज स्वाभिमामके घनी थे। बेस्कि वधवाले निश्चक
और साहसी थे। कडियाल वधवाले सम्पत्ति और शक्तिसे सम्पन्न थे।
उनके बाद बेमूरि वधवालोंका नम्बर था। जीवन निर्वाहके समुचित
साधनोंसे सम्पन्न थे मागळ्ळवसल वाले तो पतुर थे सूरपनेनि वध-
वाल। खेतीमें अत्यन्त आसक्ति रखनेवाल बेलगा बंधवाल थे, जो अत्यन्त
सहिष्णु थे येरुगड्ड वधज। बचनपर ध्यान देनेवाले कम्ममुपाटि वधज थे,
अति प्रसिद्ध थे सूर्यदेवर बंध वाले। इस प्रकार कम्म' जातिके
बई सुपुत्रोंने हसके सहारे हमारे गाँवकी सीमाय-रेखामें सिन्धूर
भरा ॥१०॥

अपनी जन्मभूमिसे प्रेम रखनेवाल, निष्कपट, धैर्यवान, उदार
बुद्धिवाले और सम्भ्रान्त 'गुरलि' पक्षके कापु जम हमारे गाँवके मुद्रिया
भन हुए थे ॥११॥

* 'कापु' जातिके धूर्तोंकी एक उपजाति है जो गनी बर, बरना जीवन बिताती है।

तोसिकोळळ घेवघरितस रेवक सस्तार्चि
 मस्तकोळळगमुस्तु मारेसुगु सुप,
 मुनुमुन्न मेत्कन्न मुदियव्व कन्नुर इं
 वृत्ति सुत्तिगा नूत्तिकुत्तु वाड,
 गरककजघ्वनुक कव्वपु जप्पुळ्ळु
 बेरयगा नित्साङ्गु बेरुगुबएव,
 वुसुगुस कसकलम्मुक्तोड वसर्मपि
 सव्वडुस् तीयनै संविडिप,
 मोटगिसकस रवळित्तो बोटसकुनु
 जसमुतोडु बसीवर्धमुत्तु गापु
 सव्वसुपन् मोकु कव्वाट कासकिचु
 वत्सग म्मेसुकाचु मा पत्तेदूड ॥ १२ ॥

बेगुट्टु सेप्पुबेप्पुडनु
 वेगिरपाट्टु नडंपसेक हु
 व्रागत्तरंप मुद्विचि
 वादुत्तु बेदुत्तु गळ्ळीरमं
 वापक, मंगमै चिद्रुपलै
 चिद्रमुत्तेपुमुत्तिमोत्तमै
 सागक वैडिकट्टुसु तोसि
 जामुत्त पत्तिम्य मेसुकोत्तेडिन् ॥ १३ ॥

जेपुत्त्वच्चि मोगम्मुसेत्ति तलय
 स्नेहार्त्रमौ चूडकुसन्
 प्रेपुं गांचुचु मात्तु पित्तव, बल्लुगुस
 प्रौडिचि पेस्ताकट्टुन्
 पापुत्तिव्वेडि बन्क प्रेळ्ळुत्तुत्तु स्नेगल
 मास्पत्तन् बळी
 मा पत्तीरम मेसुकोत्तुनु
 तर्बभारवसभाहुस ॥ १४ ॥

सर्वप्रथम बाँग देनेवाले मुर्गेकी आवाजपर पंख फड़काकर दूसरे मुर्गेने समूहके बाँग देते समय, सड़के जगी बुड़ियाकी तकलीके स्वरमें स्वर मिलाकर गाते समय कट-ककण ध्वनियोंके साथ सुहागिनियोंके दधिमयन करते समय, पशियोंके कलरवके साथ आँगनमें गोबरके छिड़कावके मधुर स्वरोंके सुनाई पड़ते समय मोट या रहँटकी ध्वनिके साथ, बगीचोंको पानी देनेवाले किसानोंके बेलोको घमकाते समय, मोटके रस्सेकी आवाजके निकलते समय उत्पन्न होनेवाली विशिष्ट इन मधुर ध्वनियोंको सुनते हुए प्रघात घित्त हो हमारा गाँव जाग उठता है ॥१२॥

सबेरा होनेकी प्रतीक्षामें उठावकैपनका रोक न सकनेके कारण हृदयके रागतरंगोंके उमड़कर, छलाँग भरते हुए कण्ठीरोंमें न स्नकर बाहर टूटकर, छोटे मोठियोंकी मालाके समान छूट पड़नेपर पक्षी प्रातःकाल ही अपने कलरवसे गाँवको जगाते हैं ॥१३॥

पेम्हानेपर, मुँह उठाकर सन्तान-स्नेह (वात्सल्य) से आर्द्र चित्तबमोंसे बछियोंकी देखती हुई गायोंके बुझानेपर रस्सियोंसे छूट पड़ते हुए, मूछने मारे, किसानोंके छोड़न सब छलाँग भरते हुए, बछड़ोंके रँभात समय हमारा गाँव, उन मधुर स्वरोंको सुनते ही जाग उठता है ॥१४॥

तोलिकोळळ येवर्चरितस रेवक लस्साधि
 मसुकोळळगमुळु मारेसुगु सुप,
 मुनुमुन्न मेत्वन मुदियध्व कबुठ मं
 वृति सुतिगा नूत्तिहसुमु बाड,
 गरकंणध्वनुस् कवंपु जप्पुळ्ळु
 बेरयगा निल्लीडु घेरुगुदरब,
 बुसुगुल कसकसम्मुल्लोड गस्यपि
 सव्यडुल लीपनं सविडिप,
 मोटगिसकल रवळितो बोटल्लुनु
 जलमुतोडु बसीवर्धमुसनु गापु
 सबसुपन् मोकु जम्वाट कालकिचु
 चस्सन म्मेसुकाचु मा पस्सेदूव ॥ १२ ॥

बेगुटु सेप्पुडेप्पुडनु
 बेगिरपाटु मडंपसेक हु
 ब्रागतारंग मुहविडि
 बाटुळु वेदुचु गळतीरम
 बागक, मंपमै चिडुपसै
 चिस्मुसेपुगुत्तिमोत्तमै
 सायक बैडिकटलु तोलि
 बामुल पत्तिक्य मेसुकोल्पेडिन् ॥ १३ ॥

बेपुस्वच्चि मोगम्मुसेति तनय
 स्नेहार्त्तमी चुडुक्कन
 प्रेपुं गाचुचु नालु पित्त बसुगुल
 प्रेडिच्चि पेस्साकटन्
 गापुत्तिव्येडि बल्ल प्रेड्युडु सुगल
 मास्पल्लन् बळी
 मा पस्सीरम मेसुकोत्पुनु
 तबभारावत्तप्राहमुल् ॥ १४ ॥

सबप्रथम दौंग बेलबाले मुर्गेकी आवाजपर पंद्र फठकाकर दूसरे मुर्गेके समूहके दौंग देते समय सबके जगी बुढ़ियाकी तकलीके स्वरमें स्वर मिलाकर गाते समय कर-कषण ध्वनियोंके साथ मुहागिनियोंके दधिमपन करते समय पक्षियोंके कछरवके साथ आंगनमें गोबरके छिड़कावके मधुर स्वरोंके सुनाई पड़ते समय मोट या रहुँटकी ध्वनिके साथ, बगीचोंको पानी बनवाने किसानोंके बैलोंको घमकाते समय मोटके रस्सेकी आवाजके निकलते समय उत्पन्न होनेवाली बिदिष्ट इन सुमधुर ध्वनियोंको सुनते हुए प्रशान्त चित्त हो हमारा गाँव जाग उठता है ॥१२॥

सबेरा होमेकी प्रतीक्षामें उतावलेपनको रोक न सकनेके कारण हृदयके रागतर्गोंके उमड़कर छलांग भरते हुए कण्ठतीरोंमें न रुककर बाहर टूटकर, छोटे मोतियोंकी मालाके समान छूट पड़नेपर पसी प्रातःकाल ही अपन कछरवसे गाँवको अगाते हैं ॥१३॥

पेन्हानेपर मुह उठाकर सन्तान-स्नेह (वात्सल्य) से आर्द्र पित्तबनोंसे बछियोंकी देखरी हुई गायोंके बुझानेपर रस्सियोंसे छूट पड़त हुए, भूयके मारे किसानोंके छाड़ने तक छलांग भरते हुए, बछड़ोंके रंभाते समय हमारा गाँव उन मधुर स्वरोंको सुनते ही जाग उठता है ॥१४॥

मामायस्तुद्धुनु, ता
 तामनुमस बाविवरस बजर नपुडु मा
 प्राममुन नासु कोसमुत्तु
 ब्रैममुन मेसगु नरमरिक्त लेशकव्ये ॥ १५ ॥

कष्टसुखमुत्तु गल्लिमिसेमुत्तु
 बंदि कुडुबु नाटि पत्तमेयकुत्तु
 कद्रु मोरगे नेटियप्रस केडमोगासु
 पेडमोपासु वच्चि पडिये नेदुसु ? ॥ १६ ॥

नाडु लेनि कोसम्मुसु नेडु राडु,
 कल्लिमिसेमु लेनाडुनु गसमुगाडे,
 पत्ते ब्रतुकुत्तु माधुर्य मेसस बिरिगि
 पंक्कोत्तुकायाय मुप्पतिसनेस ? ॥ १७ ॥

पंडिनपट यूविडिचि
 बंदिक्कि मेगडु, पेडसाड प
 स्तुंडग धाम्यमम्मुत्तु
 होसमुगा बसपोतु कर ने
 व्वंडु बरोपजीवनमु
 पास्यड, डेव्वनि वृत्ति वानि के
 युंडग पेत्तम्मुत्तुमुनु
 मुम्मडिपूटग बेंबे सौस्यमुत्तु ॥ १८ ॥

तमत्तम व्हायम्मुसु तर
 तमभाडमुलेक स्वकुसधर्ममुपा, प्रा
 ममु मेत्तुगोरि सल्लिपेडि
 मुमत्तुत्तु वेट्टु लोडबे नंज मुत्ततत्परतस ? ॥ १९ ॥

बारों वर्षोंके लोग बिना किसी दुराव छिपावके प्रेमपूर्ण जीवन बिताते थे। मामा और दामाद दादा और पोते—इस प्रकारके सम्बन्धनसे सभी मिल-जुलकर रहते थे, मानों सारा गाँव एक ही कुटुम्ब हो ॥१५॥

सुख और दुःख अमीरी और गरीबीमें एक दूसरेके सुख-दुःखको आपसमें बाँट कर अनुभव करनेवाला वह ग्राम्य-जीवन ही सुप्त हो गया। आजकल तो भाई-भाई आपसमें एक दूसरेका मुँह देखना नहीं चाहते ॥१६॥

उस समय जो कुल (वर्ण) नहीं थे, वे आज तो नहीं टपक पड़े। अमीरी-गरीबी तो सदासे ही चली आ रही है। ऐसी हालतमें ग्राम जीवनकी उस मधुरिमाके स्थानपर रह यह पञ्चमेक कपायकी विस्तृतता कहाँ से आ गई? ॥१७॥

गाँवमें जो उपज होती थी वह गाँवसे बाहर नहीं जाती थी। गरीबोंके मुखे रहते अनाज बेचना दोष माना जाता था। गाँवमें कोई दूसरेपर आधारित हो जीवन-यापन नहीं करता था। प्रत्येकका अपना-अपना पेशा था। इस प्रकार सभी पेदे एक दूसरेके अभावोंकी पूर्ति करते हुए साम्नेमें समान रूपसे उपभोग करते हुए सुखोंकी वृद्धि करते थे ॥१८॥

अपने-अपने कामोंको करत समय ऊँच-नीच भावको छोड़कर और स्वशुल-धर्म मानकर सारे ग्रामके सुखको अपना सुख माननवाले सुमतिर्योंके मनमें स्वापकी ये भावनाएँ कैस धर कर गई? ॥१९॥

अग्निवस्तुसवारिकि मंतो पितो
 भूवसति युंङ्, मोकङ् भेषुस भोसंग,
 मादगा धानि कोकङ् कुम्भरमो, कम्म
 रम्मो पारिविषु गोलुचिष्णु रंतु वानु ॥ २० ॥

मोससोतु बीळळसोवडि
 कसगसपुग मूरि यासकडुपुसु मेपुत्
 गलवारि पाडिकुडसु
 पसुगन् बेवळकु जस्स करवेदुसुंङ्नु ? ॥ २१ ॥

ऊर बडमट्टि युप्पुनकु गूड
 कोळुघोसणि नाडु विळिचिकीनिरि,
 चुट्टनिप्पु गूड बुट्टु डम्बीय
 किपुडु पस्सेट्टूळ्ळ केमिबच्चे ! ॥ २२ ॥

कम्म्युनिजमु सेट्टु, कदासु वासिच्चिन मे
 स्त्रीसु सेट्ट, स्वस्ववृत्तिपरत्त
 संघमुनकु मेसु समकूत्तुव निरत्त
 रात्सुक्कम्म्यु, मेट्टि यम्भुरम्मो ! ॥ २३ ॥

नाडुनु गम्कडुवाविरि
 धनम्मसु भ्रुच्चिसि, रम्यवारसन्
 गूडिरिक्कानि पापमसु
 कौकुलु, पोक्कुनो यत्त भोति बे
 श्राड्डेनु वारि मिप्पयत्त
 मट्टिभयम्मुडिवोपि चप्पगा
 मूडेनु सिग्गु, पापरत्तु
 सूजित्तुळे विहरित्तु रिच्चमै ॥ २४ ॥

ओळसकिडुटे भोगमु मळु
 रिल्लो दळ्ळपुळ्ळगुटे कोरत्तबडुट्टगा
 धुरि कोस्सगायु नोससाडे बोत्तिट्टि पस्सेळ्ळ ॥ २५ ॥
 निक्कयत्तवाम बीत्तत्त

सभी पेशवालोंके पास थोड़ी-बहुत जमीन होती। एक जूते बनाता तो दूसरा उमके बदलेमें लोहेका सामान या मिट्टीका सामान देता। किसान सभीको अनाज तौल देता ॥२०॥

कमर तक बढ़े भासके मैदानोंमें (घरगाहोंमें) गाँव भरके भबेनी झुण्ड-क-झुण्ड, भरत रहते। अमीरोंके यहाँ गोरसके पड़े-के पड़े भरे रहते ता फिर गरीबोंको छाछकी कमी बैसी ? ॥२१॥

गाँवमें पैदा न होनेवाले नमक को भी लोग अनाज देकर ही खरीदत थे। आज तो चुकट खजानेके लिए भी आग बिना पैसके नहीं मिलती। हाय इन गाँवोंको क्या हो गया है ! ॥२२॥

उस समय न कम्युनिज्म ही था न हाथमें कोड़े रखनेवाले राजा ही थे। लोग निरक्षर (अपढ़) होकर भी अपने-अपने कार्योंमें निरत होकर समाजकी भलाई करते थे। बास्तवमें यह कसा आदर्श है ! ॥२३॥

तब भी लोग सेंधी(ताड़ी)पीते थोरी करते अभिचार करते पर उनके हृदयमें या तो पापका डर बना रहता था या पोल खुल जानेका सकोष भाव। आज तो पापका डर कमीका समाप्त हो गया है और छज्जा तथा अपमानकी बात तो कोसों दूर चली गई है। आज पापखत मनुष्य सिर ऊँचा उठाकर तथा स्वच्छ होकर बिचर रहे हैं ॥२४॥

दूसरोंको शान करना ही भोग है चार आदमियोंके बीच अपमानित होना ही मृत्यु है मूसीपर चढ़ना है। व ग्राम भातकहीन जीवनकी मघरिमाका उपभोग करते थे ॥२५॥

बुत्तुल्लसोन इक्कुबनु
 सेक्कुव लॅधर, सच्चरिद्रुलनु
 नेत्तिनि बेट्टिकोडुए, ग
 निपए नीतिविद्वर्यम सं
 पत्तिनि रिस्स पाडित्ति मि
 वर्जमु, नालपमंडु वेळुपे
 सत्तेमु साक्षिया मन्नि
 सज्जमुळ सुर्तियिप जेस्सवे ॥ २६ ॥

पोम्भुगरसु, गिर्बेप्पुल्लनु, नीए
 काबिर्पबेसु, इक्कगोक्कलनु वास्सि
 रेडिडगल्लतो गोल्लुव बीरिचेडि धर्म
 तत्पएळ माटि मूरिपेडुळ इल्लनु ॥ २७ ॥

इदि शाखार्चकमथ
 बेव सेवलेडि बाध बेत्तिकिन्दिनुम्बिज ॥ २८ ॥

अपने-अपने पेशोंमें ऊँच-नीचका भाव नहीं रखते थे। चरित्रवान् व्यक्तियोंको सिर-आँखों सेते। नीति-बिभारद, सम्मति, पाण्डित्य और बर्ण (कुल) को आदर नहीं देते थे। मन्दिरमें स्थित भगवान् और सत्यको ही साक्षी मानकर जीवन्-यापन करनेवाले वे सृजन क्या स्तुति करने योग्य नहीं हैं ? ॥२६॥

धामी सभी छद्मियाँ, धरमर करती हुई चप्पलें, हुल्के साल रगकी घोटियाँ, सिरपर पराङ्गियाँ बाँध, ग्रामकी देख रेख करनेवाले धर्म-तत्पर ग्राम-नेताओंका स्मरण करता हूँ ॥२७॥

वैद्य यह (ग्राम और समाजका वर्णन) विषयसे (बश-कथन) सम्बन्धित नहीं है फिर भी हृदयसे उमड़नेवासी वेदनाके कारण ही ऐसा किया गया है ॥२८॥

३ पीतस्तव हृदयम्

मुकुसुम प्रकृषु मुपुसददुसु
 मिमसु मूढ मोरकुम्भदिनु
 बरुसु द्रोक्कषु मीण कोशामुस
 मुवाहुडव वषु स
 तारमुनु गांचिन मुसलपडेडि
 मितं, श्री मयोद्रेग मे
 प्वरिचे नी कोनगूडे नर्णबपती ।
 वाकृधबय्या । वेसन् ॥१॥

म्कुटिमात्रमुचे मूडु मुवनमुसकु
 विस्मयमु घटिचु अगरेकबीरुसमत ।
 मोकु मङ्गरुबिजति नाकु नीकु
 वोचिकाकोटि घट कोट । बेरपिकेल ? ॥२॥

नाकु मोकु भयबटन्ननुधि
 येसडेन विमान ? ने
 डोकंपम्पुनकुनु पतम्पु कनराडे ।
 मुगतमुनु , मास्कुव
 डेकाकारत येसु, वापुबुनु
 मुमेदृदुसे बीषु, से
 वे कल्यान्तपयोवगर्ग कनराडे
 तारकस् राकुटक ॥३॥

चम्पूहासमु न बेयि अारस्सेडु
 औबंशिचियु मी अठरमंवारस्सेडु
 सज्यकार्मुकुडे रामचम्पूसुति
 धिजिनीटीहसियु निक सेयलेडु ॥४॥

३ पीतस्तम्भका हृदय

[श्रीरामचन्द्रको लंकापर चढ़ाई करतके लिए आत देवदर सागरके कर्मपर राक्षसके उद्गार]

हू अर्णवपति ! फेन जगनत हुए, साँसोक पूछनेकी आवाजसे आकाशकी भर देत हुए उछलसे-दोड़त बिखर वालों और ऊपर ठठे हाथ मकर खानेवाले तुम्हारी घमराहट देखकर मेरा हृदय छकित हो रहा है। यह भय और उद्वेग किसके कारण हैं ? जल्दी बोलो तो ॥१॥

केबल भीहोंका टका कर बन मात्रसे ही तौनों लाकों में प्रलय मचा देनेवाले जगदम्बीर हू हम ! तुम्हारी रक्षाके लिए भरे बीस हाथ हैं तुम्हारा बीबि-समूह ही मेरे लिए सुर्य हैं। फिर डर किस बातका ? ॥२॥

क्या कभी सुना है मरे लिए और तुम्हारे लिए डर नामकी कोई वस्तु है ? मात्र तुम्हारी इस कँपकँपोका कोई कारण तो दिखाई नहीं देता। भास्कर जैसे ही (यथावत्) प्रकाशमान है बामु भी पड़ले जैसी ही बल रखी है प्रसन्नकालीन मर्षोंकी परब भी सुनाई नहीं पड़ रही है। तारिकाओंका टूट पड़ना भी नहीं दिखाई दे रहा है ॥३॥

चन्द्रहास (रावणकी लसवार) भी मेरे हाथस छूने नहीं है। तुम्हारे अङ्गकी अग्नि भी (बाइकाग्नि) बुझी नहीं है। धनुष हाथमें लिए रामचन्द्र अभी टफार नहीं कर रहे हैं ॥४॥

एटसु ? अप्पबु ? राघबुडे । मरेस ।
 विद्बु कपमु, त्रीब राविद्बुमतिनि
 कनुजसौमित्रितो, सुयतनयुतोड
 हनुमतो, बरचरवकपिनुस सोड ॥५॥

एसाळळकु ! एसाळळकु !
 कद्दुलु विम्रतियु नाकु गस्तिगफरुमा
 सप्रमयि बरुचे ! भुजय
 बौमति भरिसायमगु मुहूर्तमु वरुचेम् ॥६॥

माटिकि मेडा ? तसपुन
 माटेनु सामिकि विरुठनगरोदितमी
 माटकु , बीर्घबिल्लनमु
 बाटिचि विमुंडु नद्रु वरुचिगेवे । ॥७॥

पातासाधियु सोक द्रोषिकति,
 शची प्राप्तेभुवश्यम्मु डा
 धेतं बद्रिति वेंडिकोड सिक्कतो
 क्षीताचसंभ्रात्मजो
 वेते बस्सुसभाड जेसितिगदा !
 धो बिदबबिलोम मे
 सा तप्पियडु सामि नभेरिणि ?
 सेला नद्रु वरुचिचुटस् ॥८॥

शिवकोवंडमु हुंघे, सीति बरियिचेन्
 रामु बरुप्पुडे मा
 धबु कापबनुकोटि, भार्गव भुजा
 बरुपियहारुचिया
 अबरुणुम् सरिदाकगा विनमु
 वरुपबेन युत्कठचे
 नबिबेकम्मुन गद्रुगान कट्टु
 श्रेष्ठारममुन् जेसितिन् ॥९॥

है! क्या कहा? राभव है! फिर कहते क्यों नहीं? अब क्या? इस कॅंपकेपीसे बाब आओ उसके लिए मार्ग दे दो। भाई सधमण, सुग्रीव, हनुमान और बन्दरोंकी सेनाके साथ मानेवाले उस रामचन्द्रके लिए रास्ता दे दो ॥१॥

कितने दिनोंके बाद! हाँ, कितने दिनोंके बाद चीसों आँखोंके रखनेका फल प्राप्त करनेका समय निकट आया है। मुजामोंकी गर्वोन्नति के परित्याग होनेका भी मुहूर्त आया है ॥६॥

तबकी बात आज बाद आई स्वामीकी। वैकुण्ठनगरकी वे यातों—सनकसनन्दनादि मुनियोंके क्षाप देनेपर अभय-प्रदानकी बातें—आज ध्यानमें आइ। इतनी बेरी करने भगवानने मुझ साधिव्यके सुखसे वञ्चित किया न। ॥७॥

पातालके राजाकी दुम वदाई धरती देवीके प्राणस (इन्द्र) के क्या बाएँ हाथमें से पकड़े। शिवजी और पार्वतीके साथ रजताचल (कैलास) को हाथोंमें पर ले कर हिला या। जानबूझकर भी स्वामीने इस बिदक-बिसोमकी इतिभी क्यों नहीं की? सब कुछ जानते हुए भी मुझे छम्नेमें मसा क्या रखा है? ॥८॥

शिवके घमुपको तोड़कर रामने सीताका वरण किया' यह सुनते ही समझा कि यह माघवका ही काम है। परशुरामके धुज-दर्पके दूरकरनकी बात सुन एक-एक दिनको एक वर्ष मानकर बड़ी उत्कण्ठासे प्रभुकी प्रतीक्षा करता रहा। अबिवेकके कारण उस स्थितिमें आँखोंके मुँद जानेपर बिग्रोही काम करने शुरू कर दिए ॥९॥

इंतघेसिनगाति नाकिचुकंत
 मच्चिबक्तगनीदाये माघवुंडु ,
 सागरा ! एमि बच्चियितु ? जानकम्म
 तस्मिने हरियिपक तप्पवाये ॥१५॥

स्वामिब्रोहमुकूड नपे बुबकुम्
 वैकुण्ठबीरीर ! ता
 मेमो नाकिडु वास कोदसपडायेन्,
 घुडिडलोकम्म त
 भे मेकबेन बोसगेस्स चान्पुडससम्
 नित्पेन्, महाबोनिधि
 स्वामी ! मर्युस राजनीति निपुणत्व
 बेस्स विप्रावुगा ॥१६॥

चट्टिगाट्टि मिचठ नूरेगमुटिमा
 येमि ? सोकभीति येस माकु ?
 बक्तनिम्मु मंचितनयेस्स बिभुनके ;
 अतडु नप्रेस्सुटबिय चाकु ॥१७॥

एस्स एरियिपुडि एमि एरुमनि
 यतकु हरि चरिचु नपुडपुडु ,
 एरियिपेस्सलेक ये नक्कटा । घूमि
 पुनि मपहृरिचि मोसपोसि ॥१८॥

इंट मुन्न यप्युडी मायनटनमुक
 केवु कोसबुनकु , वेबसुडमि
 चर्चानम्मोसगु तंदि ने मेरुने !
 मायबारि यये महिकि डिमि ॥१९॥

इतने कुकर्म कर बासे पर माघवने मेरे पस्ते पोड़ी भी बगछाई नहीं
रहने दी? हे सागर! क्या कर्तू? जानकीमाताको हरने तक दम
नहीं लेने दिया ॥१२॥

बटे, वन्तमें उस बेकृष्टवासीने स्वामी-ब्रह्म करना भी सिखाया।
मुझे जो बचन दिया वह तो मनमें साठे नहीं। और यह अघा
प्य उसीकी तारीफ करता है। सारे दोष तो मरे सिरपर ही
नढ़ देता है। हे अम्बुनिधि स्वामी! इन मरयोंके राजनीति-क्रोधको
सुना है न? ॥१३॥

क्या मैं यहीं पर घर बनाकर रहनेवाला हूँ? ससार साख कहे,
मुझे डर काहेका? रहने दो सारी मलाई प्रभुके साप ही। वे मुझे
जान दें, मेरे सिध इतना ही काफी है ॥१४॥

सब कुछ जानते हुए भी हरि कभी-कभी ऐसा करते हैं मानों
कुछ जानते ही नहीं। जानते हुए भी मनजान बनकर भूमिपुत्रीका हरण
कर में घोखा खा गया! ॥१५॥

परपर तो वे क्यट नाटक नहीं करता या केशव। मोक्षदाता
होकर दर्शन देनेवाले मेरे स्वामीको मैं नहीं जानता। वह इस महीपर
जानेपर ही मायावी बन गया ॥१६॥

तनवरि केनु रावगिन बादल
 मप्रिटि मूसियुंघिनम्
 मनमुन नीचि, मन् हरियु
 मार्गमुसप्रिटि बिपियुंघि, रा
 बयममबापिमुद्र कमुपट्टनि
 सुबिमोवत नेसपुन्
 बनकु मिगुस्पनंतिमि कवा ।
 विभुडेडिकि जायुचेतेनो ? ॥२०॥

कससकमाप्यमुस मबमियामुत्तु
 गावुटेरिगि भ्रान्तिम
 निसुचुनो पासुवोवकमि
 निबकुपुमार्गमोकंडे चेसितिन्,
 तोलगमि राचबाटगद
 तोव्यलि मे गोमिबमबादि, न
 मरुमट बेट्टिनन् बिडुतुमा ?
 तन मायसु चेस्तुनित्तुमा ? ॥२१॥

रावपुडल पडळळ बडु
 रायियु रप्पयुयत्तु, जालिमै
 गाबग मालि कोतिपुमु
 गालिन्यु प्रड्युगाडु, सोकलि
 ब्राबगुडुप्रबीरचरित
 प्रपितुडलिमानियो बल
 प्रीडुडु पोरिलो बोडिचि
 गेत्तुनु लच्छुनुगाक, बेडुने ? ॥२२॥

अपने पास आ सकनवाले सभी मार्ग उसने मेरे लिए बन्द कर रखे फिर मैं भी सहनशील बना रहा। मेरे पास आनेके सभी मार्ग मने बंद रखे और रावणके भयोत्पादक अग्निमुद्राओंसे रहित भूमि सुरीक नोकके बराबर भी, रख नहीं छोड़ी। इतना होनेपर भी प्रभुने हेरो क्यों की? ॥२०॥

यहाँपर बितने भी मार्ग हैं वे सब तो मेरे पास ही आनेवाले हैं। इन मार्गोंका देखकर तथा शक्यकर कहीं रुकना जायें, इस कारणसे एक सीधा मार्ग, राजमार्ग बना दिया। सीधा मार्गके जिस मूर्खसे एया वह तो न मितनेबाला राजमार्ग है-न? मुझे सदासे प्रभु, मैं भी क्यों छोड़ूँ? उसकी मायाको यहाँ कब चलने दूँगा? ॥२१॥

रावणको क्या समझा? वह ऐसे ही पैरों पड़नेवाला ककड़-पत्थर नहीं है। क्या दिखाकर रसा करनेके लिए न स्त्री ही है, न बन्दर ही। न कीआ है न गीघ ही। यह रावण तो सोकविद्रावण है उपवीरपरितबाण है अत्यन्त प्रसिद्ध महा स्वाभिमानी है। ऐसा दसप्रीव रणनेत्रमें मुद्राकरके जीतेगा या मरगा, पर, शत्रुके आगे कभी नहीं झुकेगा ॥२२॥

भूङ्गमु नेच्छसि ! विभुनि
 क्षुब्धितिवेक्य ! बोप्युमेष्टु
 प्राबोरपूङ्गुङ्गु, लस्समा
 विरहम्प्य, प्रागि विविक्तु
 प्राडो ? बशास्यकठबळम
 प्रबलाप्रहवृत्ति धेस्तुङ्गु
 प्राडो ? मघिज्यघन्नुङ्गुङ्गु
 द्युतिरजित नेत्रकोपुडे ॥२३॥

विदिनि मारीचुमिधे
 विदिनि शूर्पणखचेत, विदि हनुमधे
 विदिनि जनकस्यजधे
 विदिनि रघुबीर बाहुवीर्यकचनमुम् ॥२४॥

बसबह्यु खेकिकळळ वयसुन लज्जमै
 मुनियस्य बाठक हुनुमु सोपसु
 कुनपासु जेसु लीङ्गुन शोबलापम्मु
 विरिचिन श्रुयार बीर महिम
 पसपुबट्टकनिम्मु पस मार्गबन्धे
 लम्प्यमारिचिन शौर्यसार
 मासि बासिन ज्योत्त यस्तमै बज्यसा
 यनि बासि मोक्ष कोस हुनुमु पठिम
 विठयेकामि इमिदिक्कंटे, राख
 पट्टुमु बोरयि, नारळु गट्टि कान
 वेष्टिनट्टि बेक्कसामैन विष्टुतनु
 विठि सामिके तपुनकुठेकानि ॥२५॥

देखा मित्र, तुमन स्वामीना देखा है न ! कही तो वह रघुकुल तिसक
 बैसा है ! प्रियाकी विरह-भ्रम्यासे व्यथित होकर दुर्बल बना हुआ है । रावणके
 रसों शिरोंको बाट डालनकी उसकी छालसा प्रबल है न ? तने धनुषवाला
 और वरुण शक्तिवाला रञ्जित बितबनवाला यह बैसा ह ? ॥२३॥

उस रघुवीरके बाहुबलकी क्या मारीच, शूर्पणखा, हनुमान
 और जानकीके मुहसे मुन चुका हूँ ॥२४॥

कोमल कपोलवाले बयमें धरमाते हुए, मुनिकी आज्ञासे
 ताडकाको मार डालनेका वह सौंर्य छहराते बुल्फोंके बयमें शिवधनुषकी
 छोड़ डालनकी श्रुंमार-वीररसमहिमा पीले वस्त्रोंमें पीछेपनसे
 भायेंध श्रेष्ठ रूपी सन्ध्याका मिटानेवाला वह शौर्य-सार, पत्नीके बिछोहके
 नए श्रेष्ठमें बन्धकाय वास्तिको एव हा बाणसे धरछामी करनेकी वह
 शक्ति (सामर्थ्य) इन सबके बारेमें येन मुना है । पर इनने भी बढ़कर
 राज्यपत्नको छोड़कर, बन्धक पहल जगलोंमें रहनेकी कठिन दुःखताको
 मुना और समझा कि यह सब स्वामीक ही योग्य है ॥२५॥

श्यामलकान्तिमोहनम्
 सौम्यागभोरम् सुप्रसन्नरे
 कामुद्रहासभासुरम्
 यद्रूपपङ्कवुर्मन राम मे
 म्योमुनु मीरबोसे गत
 मोमनुगाबे कठोरवृत्तिर्न
 सामिमि मुने घोररक्तत्र
 निमंत्रितु जसि युष्पुटम् ॥२६॥

विष्णुम्, ब्रह्मकंधरसि विरव विजयकोत्ति
 बर्षणबयि तच्छतच्छतळ बसुंगु
 अत्रहासमे भीरामपङ्कमकुनु
 माकु घर्दियिचुत मिषोवलोक्तनम्मु ॥२७॥

तोपधी ! धम्पुडपुनीम् तोस्ति मात्तम्
 कमठक्यत मीरे भोपर्मम् हुरि,
 नेडु वेंडि बरिपनुभाडु निरु,
 नेस्ति त्रिनु खेरि पवळिबु मेनि येका
 नट्टु सु तरंगसास्तिबुगुम् शौरि ॥२८॥

अगुद्रुद मिष्पुबोडम् चरितार्थम्
 काबनगानि, भोमु 'मे
 रगोमिन तद्विकडे, बयली
 अनु प्रोस्चिन तस्किरडे, मे
 सगमगु सीतकडे, बरिचर्म
 सोनचिन तम्पुकडे नी
 अगबभिधाति रक्कसुडे
 सामिकि मिस्किनि गूर्धु मेचवसी । ॥२९॥

तस्किबंदि याम् कुम्पुडु मोबलु मी
 केस्ति सके बेबे बत्समुंडु,
 पत्समुनकु मेने बंशिति बेनुसके
 मोस्केबंगरिदि पवडे येरु ॥३०॥

स्यामल कान्तिसे मोहन सौम्य-गम्भीर, सुप्रसन्नरेखा मुद्गु-हास युक्त, चितवनको धन्य बनानेवाले उस रामचन्द्रक सुन्दर मुखड़ेको तुम लोगोंके समान मैं देख नहीं पाया। कारण मैंने बटोर बनकर पहले ही उसे रणयज्ञमें निमन्त्रित कर रखा है न? ॥२६॥

सुनो, दशकन्धरकी विषयविजय-कीर्तिफा वपण बन चमकनेवाला चन्द्रहास ही हम दोनोंका परस्परबाँधोकर संपटित करेगा ॥२७॥

हे सागर! तुम धन्य हो। पहले भगवान् मछुकी और बछुआ बनकर तुम्हारे गर्भमें धरते रहे। आज वेही हरि फिरसे तुम्हें तारनवाले हैं। परसों फिरसे तुम्हारी तरंगोंसे साँसित होते हुए ऐसे स्टे रहेंगे मार्गों कुछ जानते ही न हों ॥२८॥

यह मानता हूँ कि तुम जैसे लोग कृतार्थ तो होते ही हैं। पर मुखको चूमनेवाले पितासे प्रेमसे बूध पिलानेवाली मातासे अर्द्धांगिनी सीतासे, निरन्तर सेवाएँ करनेवाले भाईकी अपेक्षा भी हे मित्र! जगत्का कष्टक यह रासस ही स्वामीकी प्रियतम स्नोगा मित्र! ॥२९॥

माता-पिता पत्नी भाई आदि तुम सबको उसने बाँध रखा पर मने ही उस बल्बुको एक घड़े यलजम्दबने बाँध-गया है। यह राज कोई दूसरा नहीं जानता। उमीको मालूम है ॥३०॥

श्यामसुखास्तिमोहनम्
 सौम्यगभीरम् सुप्रसन्नरे
 क्षामुद्गुहासभासुरम्
 गद्गुस्यंद्बुनन राम ने
 म्मोमुनु मीष्वोसे गन
 मोमनुगावे , कठोरघृतिर्न
 सामिमि मुध्रे घोररगतप्र
 मिर्मप्रितु अति मुंचुटन ॥२६॥

विनुमु ब्रह्मकघरनि बिदव विजयकोति
 बपणंबयि तळतळताळ बसुंगु
 अग्रहासमे श्रीरामघन्नुमधुनु
 माकु घट्टियच्चुत मिषोवसोकनम्मु ॥२७॥

तोयधी । घम्पुडवुनीबु, तोस्ति मत्स्य
 कमठरूपत नीवे मीगर्ममु हरि,
 नेडु बेंडि बरिपमुप्राडु मिधु,
 नेल्कि निनु खेरि पबळिचु मेमि येका
 नट्टु लु तरंगसास्तिर्नुडगुचु क्षीरि ॥२८॥

अगुडुप मिम्मुबोडसु अरितापुल्लु
 काबनगानि, मोमु^३मु
 रगोमिन तत्रिकटे, बपतो
 जनु प्रोस्त्रिन तस्सिरुंढे, मी
 सागमगु सीतकंटे, बरिधर्य
 लोर्नाचिन तम्मुकटे मी
 अगबभिधाति रक्कमुडे
 सामिकि मिक्किक्कि गूर्धु नेक्कसी । ॥२९॥

तस्सिबडि पालु बुम्मुडु मोबळु मी
 केस्स लंके बेचे वत्सधुडु ,
 वत्सधुनडु नेने बेचिति बेनुसंके
 नोप्पेरेपरिदि पक्के येदु ॥३०॥

श्यामल कान्तिसे मोहन सौम्य-गम्भीर, सुप्रसन्नरेखा मृदु-हास-
मुक्त चित्तबनको धन्य बनानेवाले उस रामचन्द्रके सुन्दर मुखको
तुम लोगोंके समान मैं देख नहीं पाया । कारण मैंने कठोर बनकर पहले
ही उसे रणयज्ञमें निमज्जित कर रखा है न ? ॥२६॥

मुनो दगकन्धरकी विश्वविजय-कीर्तिका दर्पण बन चमकनेवाला
चन्द्रहास ही हम दोनोंका परस्परबलाकन संपटित करेगा ॥२७॥

ह सागर ! तुम धन्य हो । पहुँचें भगवान् मछली और कछुआ
बनकर तुम्हारे गर्भमें तैरते रहे । आज वही हरि फिरसे तुम्हें तारनेवाले
है । परसों फिरसे तुम्हारी तरणोंस सांभित हाते हुए ऐसे स्टे रहेंगे
मानों कुछ जानते ही न, हों ॥२८॥

यह मानता हूँ कि तुम जैसे सोग कृतार्थ तो हाते ही हैं । पर
मुखको चूमनेवाले पितासे, प्रेमसे दूध पिलानेवाली मातासे, अर्धांगिनी
सीतासे निरन्तर सवाएँ करनेवाले भाईको अपेक्षा भी है मित्र ! जगत्का
कष्टक यह रामस ही स्वामीको प्रियतम सगेगा मित्र ! ॥२९॥

माता-पिता पत्नी भाई आदि तुम सबको उसन घाँघ रखा पर
मने ही उस वल्कभवा एक बड़े यलजन्दइसे घाँघ रखा है । यह राज
कोई दूरस नहीं जानता । उसीका मासूम है ॥३०॥

प्रियदर्शनुद्भितुस क
 भयमुद्भ भरिषु सर्व भद्रुनि भयवि
 स्मयकारि विसयसमया
 इयमावं बग्यदुर्लभमु मे गङ्गु ॥३१॥

एचि भूड जानकि हरियिषुटैत
 मंचिपनि यय्ये । स्वात्मकिम्माहिक दोस्ति
 एम्बरपचार मोनरिचि ? रेध्वरिकिनि
 दोरकनि यमाघतलमुलु दोरकु नाकु ॥३२॥

पोस्सेरगडो, बमुज
 पुंगबुल्लु मधुकंठभाडुल्लु
 श्रीरि वधिपडो, किटिनुसिह
 मुक्काकुतुल्लु धरिपडो,
 गीरबमिदलोन्चै इशकंठुन
 की पुख्योत्तमाकुतिन्
 शीरि कपुबविष्म
 रसम्मुन बारभसेयगाबलेन ॥३३॥

पतिमिसल्लु वाचिकिचिचि मुह्यकपतिन्
 वधिचि, कम्मसा प
 बर्तमुन् वातपरिचि, कंठबळ
 मारसम्मुचे भीशु इ
 पितु गाबिचिलपदुल्लुगाडु, मुरबेरिन्
 भीशु मात्सेशु न
 चितु गाबिचेडि मेटिपडुचिचे
 वळ्ळेन् अम्भ्रहासासिरो ! ॥३४॥

स्वीकृतवीरवतपरि
 पाकनु, बरानुबन्ध पत्रसिद्धि यिचे
 नैकरणप्रभयिनि । येदु
 काकुत्स्नुन काबिमिल कल्पिचेबधो ! ॥३५॥

प्रियदर्शन हो आशित्तोंको अभयमुद्राके साथ दर्शन देनेवाले उस सर्वभद्रके भय और विस्मयको उत्पन्न करनेवाले प्रलयकालके अद्वैत-मूर्तिके दर्शन, जो अन्योके लिए दुर्लभ हैं मैं प्राप्त करूँगा ॥३१॥

अरा पीछे मुड़ कर तो देखूँ कि जानकीको हर लाना कितना अच्छा हुआ है! अपनी ही आत्माका किसने इस प्रकार अपकार किया है? मुझे ऐसे अगाधतरु मिलेंगे जो अबतक किसीको नहीं मिले हैं ॥३२॥

क्या वह (हरि) मुड़ करनेके मजेको नहीं जानता? मधु कूटभ आदि राजसोंका वध नहीं किया था उसने? वराह और नृसिंह भाविका रूप उसने नहीं धरा है? इस प्रकार पुस्त्योत्तमका आकार धारण करके उसने दक्षकाष्ठके गौरवको ही बढ़ाया है। धूरका अपूर्व विक्रम रससे पारण करना चाहिए ॥३३॥

गङ्गीको पति भिक्षा देकर कुवेरको कैदकर, कैलास पर्वतको समूह हिलाकर, सिर काट-काटकर शिवको घमकाना नहीं है। मुरवैरि, शीग और आत्मेक्षकी भजना करनेका सो यह महोत्सव आया है, हे चन्द्रहास! ॥३४॥

बीग्रतके स्वीकारकी परावाप्या बरानुबन्धकी पक्षसिद्धि यही है। हे अनेक-रूप प्रणयिनी! देखें उस वाक्यरम्यक मुड़की पिशाका प्रबाध किस प्रकारसे करोगी ॥३५॥

सेडु पतपयाहनमु, सेयु करबुल वांमघयकी
 मोदकुरुमु, मुबर्लनमु पूनडु, राबणु गेत्वबच्छे वा
 मोदकुरेत्त मेक्षपरियो ! परिजटलचेतुकार । आ
 कतुबुभाजिबेळ हरि ककोनुमाङ्किक बराकर्मिपुडी ॥३६॥

ओंठि विसुकाडवे मद्रु मोर्षु तेगुम
 बसकुरा । राघवा, राघवा । बशास्यु
 नककटा ! पूरविष्णु, स्वात्महनन
 पातकृनि जेयकृमुर । नी पाबमाम । ॥३७॥

धिरविरहान्नि घागु नड चिञ्चुत्तगुंडमु बोसे बग्गुड
 गुरनेडि चेतुभिर्विविट गूरिचिपट्टि, बशास्यमडसिन्
 बरिक्कोनि रावणागिन् बहुघा बर्हिण्यिप, सवात्तमडु वा
 क्षरधियो पंक्तिकघडडो, सास्यतभाबनु गांशु गाबुतन् ॥३८॥

पोम्मुनेच्चैसि ! राममूर्तिकि नेदुरेगि पुट्टु मुसियमुळ च्चुगु वेट्टि
 जत्युत्तम्मुनु मतिगभीरम्मैत गमबोच्चिमत्तस्सि गद्वेवेट्टि
 रमकटे गौस्तुभरत्तम्मुकटे गा रामैत मणुळु बर्शनभोसगि
 संककु बपु, पौम्स्त्युडु सिरिकोस्वु अचिकयो वताम्मु च्चडहास

धारितमोर्नचि, आ गंतुबारिबेट
 हूबमुन् चोच्चि, येकान्त मिच्चगिचि
 स्वयागतमु बस्कुननि विन्नपम्मु सस्यु
 मचटने पुनर्बर्शनमगुत्त मनकृ ॥३९॥

न पक्षिवाहन है न हाथोंमें पाञ्चजन्य कौमोदक ही हूँ और न शक्र ही हूँ। विना किसी हथियारके आनेमें यह दामादर किठना चतुर हागा? हे मर बीस हाथो! अपने पराक्रमका ऐसा प्रदर्शन करो कि हरिको उन हथियारोंको ग्रहण करना ही पड़े ॥३६॥

हे राघव! हाथमें सिर्फ घनुप-बाण लिए अकेले मेरे सामने आनेका साहस मत करा। तुम्हारे चरणोंकी दापण क्रूर बिभ्रमदाली इस दशाननको स्वात्महृन्मनके पापका भागी मत बनाओ ॥३७॥

चिर विरहकी अग्निसे भड़कती एव धूँ धूँ जलती हुई अग्निके कुण्डको, बीस हाथोंसे पकड़कर, उस रावणाग्निके दसों चेहरोको जला देते समय इस युद्ध रूपी यज्ञके बाद या तो दादारपी या दशकधर ही घाश्वत भाव प्राप्त करेंगे ॥३८॥

जामा मित्र! रामचन्द्रकी अगवानीमें मोतियोंकी रांगोली सजाकर, अति उन्नत और अति गम्भीर वीचिकाका सिंहासन तैयार कर, रमा और कौस्तुभ मणियोंसे भी षड़े षड़े मणियोंका उपहार दकर संक्रामें भेजो।

सहमीने स्वात घने धीवदको चन्द्रहाससे विदारित कर उस खरोंच द्वारा हृदयमें प्रवेश कर वहाँ एकांत प्राप्त कर पीरस्त्रय श्रीरामका वहीं स्वागत करेगा उनसे आकर यही विनती करे। जामो वहीं फिर दर्शन होंगे ॥३९॥



७ गुडिगण्डसु

एत्किञ्च अगम्मुसकु मेडुमसल
 पयिकोम्मु मीर श्री
 नीळसु ओल्लबाड शयनिचिन
 वेवर । मेसुको, कृपा
 बाल ! भित्तानुकूल ! श्रुतिपारचर
 त्यवपथ । मेसुको
 नीलसरोजपत्ररमणीय
 बिलोकन । मेसुकोपदे । ॥१॥

नैयम मूसमत्रमुसु
 भादिमुसम्मुसु विश्वसुष्टिकित्
 योगिसमाजमानसगुहोवित
 मंगळबीदिकाकञ्जसु
 सागरकम्यका हृदय सारस
 पदपद गीतिकास्तुक्
 नी गुडिगण्ड सम्बहुसु तिगि
 जेलंगे ब्रह्मलोकमुसु ॥२॥

बेदविज्ञाप्यनीन भरविबसस
 म्मदरेंद्र मुञ्जित
 भादिमसगंमूसु मञ्जिलाभित
 रक्षम बसमैन श्री
 - पुगम्मु शीलपानि,
 पाणितसम्मुसु मीडिच घम्पुसे
 । भीर , बाकिळुसु मूपकु
 नी गुडिको बपालया । ॥३॥

४. मन्दिरकी घण्टियाँ

जगोंके शासक बन सात पर्वताके ऊपरके शिखरपर थी और मीठा दही द्वारा गायी गई सारीसे समयका आनन्द स्नेहासे हे प्रभु ! जागो । जागो हे हृषीकेश ! आश्रित-अनुकूला ! श्रुतिपारम्पर-यद पद्मा ! * हे मीसरोज-नन्तरमणीय किलोकना ! जागान ! ॥१॥

तुम्हारे मन्दिरकी घण्टियाँ जो विश्वसृष्टिकी नान्दी रूप निगमोंके मूल मन्त्रोंके समान प्राणी समाजके मानसरूपी गुफाओंमें उदित मगल दीपोंकी कान्तियोंके समान मातर-कन्या (स्वामी) के हृदयरूपी सारस (कमल)के भ्रमरके मधुर गुञ्जारके समान हैं आकाशमें फैल रही हैं जिससे सार लोक प्रबुद्ध (जागृत) बन रहे हैं ॥२॥

उपनिषदाके मागपर जानबारे अरविन्द सम, अमोघप्रजित आदि सृष्टिके मूल प्रथिप आश्रित जनकी रक्षामें दक्ष तुम्हारे भीषणोंका दूरग ही बेच हाथ जोड़ धर्म बन जाने हे ये लोग । हे दयामय ! मन्दिरके द्वार बन्द मत रखो ! ॥३॥

* उपनिषदोंमें प्रतिपादित होनेवाला ।

चीकटि कौपसो बहुकु,
 द्विकित्तलस, मेयि घाटिपास्त, पे
 स्माकटिकित्त सकटियु
 नवत्तिमुन , अर्बिकित्त मुप्पुगल
 बेकटिकित्त अत्तिडियु,
 बेक्कि वस्तुत्तनन बीरिय
 मी करुथाकटाअरस
 निस्सरम्ममुत्तु पौगिपास्तन् ॥४॥

तिघ्राडो परतुत्ते मुद्राडो, मुप्रोद्
 गुडुवयेट्टु मु मोकु गडुपुनिड,
 कट्टेनो मं गोच्चि पेट्टेमो, दुव्यत्तुवत्तु
 बेक्कि मोक्किच्चु वत्तकु मोत्तकु,
 मीराडेनो घूळि पाराडेनो, सुगधि
 नीरम्मुत्तार्त्तु मिन् रेपुमापु
 एडेनो तडिसेनो, एडवानत्तु
 सोरुकुड मीकिड गुळ्ळुगोपुरमुत्तु
 नेडुकाडुगवा पितडुडिगम्मु
 सत्तुपु, टोरुनाडु गोरिक बेत्तिम्प नडुग
 नडुग वत्तिन्न गुडिडूरि पडिय बेच्चि
 कूर्त्तुत्तिक्कि कौवेक्कि गोप्पडोरवु ॥५॥

अंधेरी कोठरीमें जीवन, उलझ-रुखे धान्धोवाले सिर, घरीरपर बिचड़े, भूखका इतना-सा सतुआ और माँडनी रुबिके लिए थोडा-सा नमक। पेटके लिए स्वादहीन भोजन और ज्वरपीडितको रुधन, (उपवास)—इस प्रकार जीवन-यापन करनेवाले दीनोंपर, अपने करुणा कटाक्षरसमे प्रवाह उमड पडने दो ॥४॥

स्वय खाये या भूखा ही रहे, पर तुम्हें तो पेटभर तीन बार खिलाता है, स्वय अच्छा पहने या कौपीन ही धारण कर, पर तुम्हार सिर और घरीरके लिए दुपट्टे ला देता है पानीसे नहाया कि धूसम ही लोटता रहा पर तुम्हें तो शाम-सवेरे सुगन्धित जलसे स्नान करवाता है धूपमें तपता रहा या वर्षामें भीगता रहा, पर तुम्हारे लिए तो मन्दिर और गोपुर बना देता है धूप-धारिणके बचावके लिए आजसे नहीं न इसका (भक्तका) इस प्रकार सेवा करना। पर किसी दिन उसकी इच्छा तक नहीं पूछी। कभी बह पूछने आया तो तुरन्त मन्दिरमें छिपकर साँकल लगाकर बैठ जाते हो पर्वतपर। किस्तने बड़े स्वामी हो जी ! ॥५॥



५. संक्रांति

कुक्कुटम ! मीवु सङ्कृतिभि, कोरि मुरिनि
 बेट्टु कोमनु जावु समिपडुत्त
 रायणम्मुन, नीवु संक्रांति वेळ
 गत्तिबेम्बळु शिरमोमि, कन्दननिह्लु
 सैनबोत्सको भोग्यमे, तवस्य
 कुर्लमवगु विवि ओल्लुबुगवत्त ।
 धमिल्लिपवगु विनु यप्पाचारिकि बल्ले
 बोत्तकरिन भेधगर्जनमुस्सु विनुम
 पूरमुनकटसु बेहमुप्पोगु नीकु
 बोडि कुक्कुटमुसु कूयु जाड विनिन ।

धामनिकि गोकिल्लांगन यस्सद धाति
 सैमरचिपोडु शिशिरागममुन नीवु
 माड बेबडि माड रामानबेसो ?
 पोम्मु निल्लुबळु वरिमीव रोम्मु विरिधि
 निल्लिधि कूयुमु, नीमीव वल्लमु जूप
 पुञ्जोकटि वळ्ळु, धानि तो बोवुंहु
 वेळ, बेनुकव बेधि मिन्बेचिलट्टि
 धानि कपकीति बेचिच्च यस्सानि चेत
 विट्टु लंबिनि वतुककु तिविरि वपु
 टोडे वळ्ळुटपोडे चेयुवुवु गाक ।
 विधि वल्लम्मुन मा तेसु बेत्तमबोरल
 शौर्यमुसु वळ्ळिच डागे, त्वळ्ळरगवत्त
 लङ्गपुत्तिकयं, बीवुमडन चेत
 पञ्चिपेट्टु मु यस्समु मिन्बेचिलट्टि
 बोरल्लुन् गुक्कुटपुरेड ! मरचिनाड
 नेसुवुवो ? ल्लेवो ? कंठमुन् वस्सुमट्टि

५. संक्रान्ति

हे मुर्गे*! तुम बड़े सुकृति हो पुण्यवान हो। जान-भूझकर फाँसी पर चढ़नेपर भी इस उत्तरायण पुण्यकालमें मृत्यु दुर्लभ है। ऐसे मकर संक्रमणके समय तुम तसवारके वारके सामने सिर दे, युद्ध क्षत्रमें मरनेवाले बीरोंके भोम्य और अन्योक्त किए दुर्लभ स्वर्गको प्राप्त करते हो ॥१॥

युगल पम्ब (एक बाघ-बिन्द्रेप) को सुननेवाले गणाचारीदु के समान, प्रथम बर्षाको सानेवाले मेघोंकी गर्जना सुननेवाले मयूरकी भाँति दूसरे मुर्गेकी बाँग सुनकर तुम्हारा धरीर फूसा नहीं समाता है।

वसन्तके आगमनपर प्रसन्न होकर देहकी सुघ भुसा देनेवाली कोयलकी भाँति, सिद्धिार ऋतुके आगमनको देखकर तुम भी बाँग दे उठते हो।

बाबो जाबो, रुका मत। युद्ध क्षत्रमें खड़े होकर, छाती तानकर, ससकारो। तुम पर अपना बल दिखाने एक दूसरा मुर्गा आएगा। उसके साथ जूझते समय, पीछे कदम रख, तुम्हें पामनबासेको अपयशका पामी बनाकर और उसकी गालियाँ सुननेकी लिए जीते मत रहो। मरो या मारो।

मुर्गाव्यके कारण हमारे 'वेसम' राजाओंका धीर्य तुम्हारा पैरस बँधी तलवारके आश्रयमें आया, बहाँ स्थान ग्रहण किया। उसे

*आज्य प्राप्तमें संक्रान्तिके दूसरे दिन मुझे कडानकी प्रथा है। मुर्गेके बीरोंमें छोट-छोटे बाकू बाँधे जाने हैं। जबतक कंई मुर्गा मर नहीं जाता तब तक कडार गम्य नहीं होती।

जनशुद्धिके अनुसार मुझमें लड़कर मरनेसे बीरोंकी स्वर्गकी प्राप्ति होती है। मरे ही लड़नेवाला मुर्गा ही क्यों न हा।

दु गणाचारी—आज्यके प्रत्येक माँसमें काम देवताके रूपमें शक्तिकी पूजा होती है। उस देवताके पुजारीको गणाचारी कहते हैं।

५. संक्रांति

कुम्भकुटम । मोक्ष सङ्कतिभि, कोरि मुरिनि
 बेष्टु कोप्रनु चापु ससिपङ्कत
 रायपम्मुन, मोक्ष संक्रांति बेळ
 पत्तिबेष्बकु शिरभोगि, कवननिहतु
 स्तेनबीरुक्ते सोप्यमे, तदम्य
 दुर्लभबमु बिभि सोस्नुबुगदप्र ।
 क्षमिस्त्रिपङ्कतु बिमु गणाचारिकि बले
 दोसकरिन् भोगार्जनमुस्नु विनुम
 मूरमुनकट्टु बेहमुप्पोनु नरिक्कु
 बोडि कुम्भकुटमुक्कु कूपु नाड विनिन ।
 म्भामिकि गोकिरुंगत यत्तव भ्राति
 भैमरचिपोडु सिस्त्रिरागममुन मोक्ष
 माट बेवडि माट रामानबेनो ?
 पोम्मु निसुबकु बरिमीड रोम्मु बिरिधि
 निस्त्रिभि कूपुमु नीमीड बलमु कूप
 पुंभोकरुटि वण्णु, वानि तो बोदपुंडु
 बेळ, बेनुकळ बैचि निम्बेचिमट्टि
 वानि कपकीरि बेचिच यन्वानि चेत
 बिष्टु सविमि क्तुक्कु तिस्त्रिरि अपु
 टोडे वण्णुटयोडे चेमुबुबु गारु ।
 बिधि बसम्मुन मा लेम्मु चेळमबोरल
 पौर्यमुक्कु बन्धि डागे, लवणवरणबद
 सङ्गपुष्पिकयं, बीबुगडन बेसि
 पंथिपेट्टु मु यशामु निम्बेचिमट्टि
 बोरसकुन् मुक्कुटपुरेड । मरचिनाड
 नेस्नुबुबो ? स्त्रो ? कट्टुमुन् बल्लुमट्टि

५. संक्रान्ति

ह मुर्गे*! तुम बड़े सुदृति हो, पुष्पवान हो। जान-बूझकर फाँसी पर चढ़नेपर भी इस उत्तरायण पुष्पकालमें मृत्यु दुर्लभ है। ऐसे मकर संक्रमणके समय तुम तलवारके वारके सामने सिर दे मुझ क्षेत्रमें मरनेवाले बीरोंके भोग्य और अन्योके लिए दुर्लभ स्वर्गको प्राप्त करते हो ॥१॥

युगल पम्ब (एक बाघ-विशेष) को सुननेवाले गणाधारी^१ के समान प्रथम वर्षको खानेवाले मेढोंकी गर्जना सुननेवाले मयूरकी भाँति दूसरे मुर्गेकी बाँग सुनकर तुम्हारा शरीर फूला नहीं समाता है।

बसन्तके आगमनपर प्रसन्न होकर देहकी सुघ्र धुला देनेवाली कोमलकी भाँति, धिधिर ऋतुके आगमनको देखकर तुम भी बाँग दे उठो हो।

बायो, जायो, रको मठ। युद्ध क्षेत्रमें खड़े होकर, छाप्ती तानकर समझाये। तुम पर अपना बस दिखाने एक दूसरा मुर्गा आएगा। उसके साथ झूझते समय पीछे कदम रख तुम्हें पासनबासको अपयदाका भागा बनाकर और उसकी गानियाँ सुननेकी लिए जीत मठ रखो। मरो या मारो।

दुर्मर्त्यके कारण हमारे बरम' राजाओंका शीर्ष तुम्हारे गेरसे वैधी तलवारके आश्रयमें आया, वहाँ स्थान ग्रहण किया। उस

*बाघ्य प्राप्तमें संक्रान्तिके दूसरे दिन मुर्गे लड़ानकी प्रथा है। मुर्गेके पैरोंमें छोटे-छोटे बाघ्य बाँधे जाते हैं। जबतक के ई मुर्गा मर नहीं जाता तब तक बड़ाई लागू नहीं होती।

बनधुतिके अनुसार युद्धमें लड़कर मरनेसे बीरोंको स्वर्गकी प्राप्ति होती है। मर ही लड़नेवाला मुर्गा ही क्यों न हो।

^१ गणाधारी—आग्नेयके प्रत्येक गाँवमें ग्राम देवताके रूपमें शक्तिकी पूजा होती है। उस देवताके पुत्राधीनो गणाधारी कहते हैं।

११) कति कासिकि वसवच्च, नेचुरटसु
 वरवसं पावचुप्रमु, वासिपोक
 मेडनु रिक्किचि, रिच्युन भोविकेगिरि
 कठमुन कुदि यूयु गस्तुमुषाक
 बोरि मडसेवबो कोडिपुमुरेड ! ॥१॥

पदनमुन विद्य गरचेडि ब्रासकुंड ।
 पोत्तमुन, कम्मवारिकि, बेत्तमुनकु
 ससुपु वास्यम्मु नुंडि भोत्तम्मु नदि
 चिदि चोस्सेसिकिन् बप्पे बप्पे पावु
 धोम्मसन् गोमि भो धाममुनकु बोम्मु ।
 चिदि चोस्सेसि मुच्चट चोपिबमुत्तु
 मत्तकाडग निनु विस्वुनट्टि तम्मु
 गुरं विसिंविपुल्लु, नूरि मरिनीड
 जदमु लोकवार्ता प्रभसत्तुन्नु बेचि
 पुंडे धानंभवणधि निभोत्तसार्प
 बेजमेडसेनि मीकु सहीप्तिगोत्तगि
 बुद्धिकि विकासमुत्ताह्मु घटिप
 वनिवि तीरंग मच्चट स्वातम्भ्य वायु
 ल्लु बोत्तुम्मु मी पोत्तम्मुत्तु विरिगि
 श्रीकुन्निमित्त विपज्जावि चिन्नवाड !
 जतनियुत्तु जम्मभूमियु स्वर्गं सुत्तमु
 पिण्णुवड्ढेमुत्तन विमुत्तुत्तुवुगद
 बालुडा ! बुधिरम्मु भो पत्सेदूए ॥२॥

(उस धीमेको) प्रहण कर तुम्हें पासनेवाल उन राजाओको यद्य वांट दो ।
हे कुक्कुट राजा ! भूसे सो नहीं यह बात ? गलेको कत्तर डालनेवाली
तसवारको प्रतिपक्षीके पैरपर देखकर भी खूनकी याङ्को देखते हुए भी
प्रतिपक्षी पर ससाँग मारकर आखिरी साँस तक सडकर मरोग या
यद्यस्वी बनोगे ? देखेंगे । ॥१॥

नगरमें शिक्षा प्राप्त करनेवाले हे बालक ! पुस्तक गुरु और
छड़ीकी दासतासे मोक्ष प्राप्तकर छोटी बहनके लिए रग-धिरगी चूड़ियाँ और
बिसौने सेकर (संक्रान्तिके शुभ समयमें) अपने गाँव जाओ ।

छोटी बहनकी प्यारी-प्यारी पेट्टाएँ, अपने साथ खेसनेके लिए
बुसा-बुसाकर तुम्हें उजा देने वाले छाटे भाईकी जिह् गँवके बटवक्षकी छाया
में होनवासी लोक वार्ताओंकी चर्चा ये सब तुम्हें आनन्द-सागरमें सराबोर
कर देनेकी प्रतीक्षामें हैं ।

तजोरहित हो तुम्हें सन्दीप्त देकर बुद्धिको विकसित और
उत्साहको संगठित करनेवाले बहाँके स्वातन्त्र्य-वायु प्रसरणमें विचरण
करो । चिन्ता और व्यथाको दूरकर स्वच्छास अपने खतोंकी हवा खाओ
हे बच्चा !

मुनते हो न कि अमनी और जमभूमि स्वर्ग-सुखको भी नीचा
दिखाते हैं । जरा इस तथ्यकी सचाईकी अपने गाँव जाकर देख
आओ ॥२॥

६ भ्रान्तकृतम्

सोपुसु गुम्फुनोडोदस चूडकुल प्रेम बोसंक गामिक्किन्
 गपमु शेंदु बाहुलतिकल् पेन बीधि, जनम्मु चूडिक मो
 ह्पिग भेमु पूवुगव येकतमट्टुल मेकशय्य मि
 रिपग मोक्कवामिविडबीयग जेयेट्टुसाडे ? पुत्रका ! ॥१॥

कमुलु भोगिदिष कूर्कं तन गाविसिबिड्डनु, भीवु कुंचियो
 यिन, गति तन्निस्सीय निलुबेस्स जसिपगनेट्टुसु बिहृ बसि
 चुनो, कनुगोट्टिबे ? कडुपुचुम्मसु चूट्टग बाप्य विन्दुबुल
 कनुगोनसंडु निडि तोलकन् गमुबारस गुडे नीरुगन् ! ॥२॥

कटकट ! निद्रसेधि तन गाविसि चेस्सेकु गामरामि, मि
 ककटमपुनार्ति जेंबि नबकम्मुलु मायग बोट्टिमेनि मु
 क्कटलकुवासि, येतटि विपावमु जेंडुनो ? कटपुवु ; नी
 कटिकत्तनम्मु गप्प पोडुका ! भयमप्येडु नेमिसेतुरा ! ॥३॥

चेकुव जस्सयासि कनुबिडु वट्टिबेडि पूवुकट , ओ
 काककनम्मुनन् मिगुस सामस सस्पुचु निद्र पुच्चि, मि
 व्हे कडकेपे, सजनरि योडकु पुम्मरवडिचत्तपुडि
 म्याकुसपादु चुच्चि तनया ! येट्टुसौनो ? विपावबेबनन् ॥४॥

निद्रटिसव जेस्सि 'जननी ! यधि कोसिपोंसगु' मप्प नी
 कोन्नम सेस्सि विच्चिन्ननु गोसि योसनेबनंदि, दाय्य वे
 कडुसु विच्चि जालकमु कन्तस नी कुरवत्स्य चूधि, या

६ अध्यानकृत

हे पुत्र ! सौन्दर्यसे खिसखिसाते एक दूसरेकी चितवनोंमें प्रेमके भावोंके उमड़ते, हवासे बम्पित बाहुलताओंसे एक दूसरेको कसकर देखने-वालोंको मोहित करते हुए एकान्तमें मानों एक शय्यापर लेटे हों ऐसे पुष्प युगमेंसे एकको विसग करनेके लिए तुम्हारे हाथ कैसे आए ? ॥१॥

आँखें मूँदकर सोनवाले अपने साइलेके तुम्हारे ठोड़नेपर देखा ! वह सता-माई धरोर भरक बाँपते कसे विह्वल बनी हुई है ? कुछ धारसे कलेजेके टुकड़े होते आँखकी कोरोंसे आँसू बहाती उस सताको दखो ! देखनेवालोंका दिस भी पिघसा जा रहा है ॥२॥

हाय ! नींदसे जागकर जोड़का फूल अपनी साइली बहनके दिखाई म देनेपर अत्यधिक आर्त वन, मुदुताकी खो बौतुकासे हाथ धो कितना विपाद-मग्न होगा ? रे पुत्र ! तुम्हारी निर्दयताके कारण आपका हो रही है । क्या करें ? ॥३॥

ठण्डी-हवा, आँखोंको आनन्द देनेवाली फूलोंको उस जोड़ीको, बड़े साइस डालियोंके झुल्लोंमें मुलाकर प्राप्त ही खली गई है । शामको जब वह लौट आएगी तो इस दुर्मटमाको देखकर विपाद-बदनासे उसकी क्या हासत होगी ? ॥४॥

जब शामकी तुम्हारी बहनके पूछनेपर मैने कहा 'जब ये सभी खिल उठेंगे सभी तुम्हें यह फूल तोड़ दूंगी । अब सजस उठकर पालीके रणघासे इधर देख उस फूलको म दख गालों परमे आँसू बहाती वह कितना रोएगी ? ॥५॥

वेगलि ! कीक्रेवेमि यविवेकमुरा ? पद्वपु मोग्गदो !
 यिगनि निस्स 'धीमि निक मेख्वव मुद्दुक्कु डबु गट्टुग
 ट्टे, मिरिगीसि, मप्रमु पठिच्चु, बेनियमानवच्चु मा
 भुगट्टुमाद्वेत्त डुरपिस्सुनो ? विच्चिनपूवु गाममिन् ॥६॥

वत्सनिप्रेम रसमु बे
 वत्सुच्च रेयेस्स साके वम्मुडु बोनिन्
 विस्सुड ! मापटिक्किन् जि
 तिस्सुच्च वन पूवुगममि बेसस वरच्चुगा ! ॥७॥

कावनलेनुपामि, पपकासुपु मुत्सुडु वातवड्डमी
 गाबिसिबिड्डके वयवगा मिनु , ना सुत्तु नीडु विड्डनि
 गा वरुपोसि मूरडुमु कम्मलनोरिड्डकम्म ! तीव मु
 लीडुव ! वेड्डवानुवुगवा ! वत्सकासमु मीळु मेसगुन् ॥८॥

‘रे देवकूप! यह कैसा अविवेक है तुम्हारा? कस्मिन्को देख सब इन्हें किसीको सूना नहीं चाहिए— यह निमम लागू कर रेखा खूब कर मात्र पढ़ जानेवाला यह भृगुकुमार आज मधु का स्वाद लेने आया। खिले फूलको न देखकर वह कितना व्यथित होगा? ॥६॥

रातभर धीतल प्रेमरसको छिठकते रहकर अन्द्रमान इन्हें पाना है। रे कच्चे! आज रातको उस फूलको न देख चारों तरफ उसकी खोज करता रहगा ॥७॥

अकास ही मत्युके मुंहमें पड़े अपने साइनेके लिए विसरने वाली तुम्हें मना तो नहीं कर सकती। पर हे सता-सुहागिन! मरे दरुवेको ही अपनी सन्तान समझकर धीरज धर लो न! आँसू मत मरो न! बिरबाल सब तुम्हारी भलाई ही ॥८॥

७ सीन्वरनन्वमु (वित्तियि सर्ग)

भिक्षागमनम्

धेविदाकन् गोनयम्मु तुंटविसु मीधेबुनि घालीडपा
 बबिसासम्मुय निस्त्रिपोरुषु सोबगुन् गंढोयिकिन्विदुगा
 नवसोकिपुषु, बूबुटम्मु रति नीकबिप, डेडम्मुकन्
 गवियन्नाटेडि लक्ष्यशुद्धिकि नमस्कारबु मीनध्वजा । ।
 कलङ्क महितारमुडैम शाक्यश्रुविदोक्क
 सबति तम्मुंङ्क कान्ति निस्तन्नुडतङ्क
 मंङ्कडनु कोडे प्रायपुठंङ्कगाङ्क
 सार्धकारध्व सुस्वारि बानि पतिवमिन्न ॥२॥

केळी भविरमंङ्क बुष्यलसिका श्रीडातिङ्कबम्मुकन्
 आसास्त्रिगधरुपोल्लरपंग दचिन् भाबिपुषुन् कुंजन
 ब्याल्लोळुंङ्कगु मंङ्कसुम्बय स्मरध्यानम्मुमन् बुङ्क भ
 भाक्कापम्मुत्तु चीनुबोयिबङ्कमो यात्मन् ब्रबेसिङ्कमो । ॥

पस्तम् गबरेधयुत्तु भासित्तु मानिनि, मानसंपबन्
 पान्ति बलिर्भुं पानिनि, बिकाससुहासिनि, भात्मसुन्धि
 सस्तसेबलं वनुपु ननुनङ्कन् सुगतप्रधारमो
 बिकत येवेगमीन, दधियिङ्कने धानिकि मुक्तिमार्गंमुत्तु ? ।
 पातरसाङ्क तङ्कम्बकुटिपस्सि, घेटुस चलिर्भियिङ्क नदुत्तु
 धेतनु तडिबिप मरबेन् नुपसुत्तुङ्क विद्वमेत्तु, ये
 सातिगमौ तबीयस्त्रिभरंग बिसाससुखाङ्कुराशि बी
 चीतति बोप्यबोमि निमधेन् धेलिङ्कपुल पापपोस्सिकन् ॥३॥
 नङ्कपुस राजहंस, तेलिन्धुल बेभेस्सबाक प्रेमङ्क
 रेङ्क नुमुबस्सु बेनेपेर, रेम्मङ्कवेचु बिसास वस्सि, ये
 स्मिडि बूबयम्मु नुञ्चि चनुमेस्सिमिङ्कपु सुमास्त्रमेत या
 पडदुक्क नवभास्करनि धायगतोर्बु ध्यय्युंजलेत्त ॥५॥

■ सौन्दरनन्द (द्वितीय सर्ग)

विक्षा-आगमन

[सर्गके प्रारम्भमें प्रार्थना-रस]

हे मीनध्वज ! एक हाथमें इक्षु धनुष और दूसरे हाथमें कान तक खींची गई डोरको लेकर आलीक़ पाद* हो सविलास खड़े होनेवाले तुम्हारे सौन्दर्यको आँख-भर निहारते हुए रतिदेवीके लिए पुष्पवाणको हृदयमें धँसा देनेवाली तुम्हारी सक्षयपुष्टिको नमस्कार ह ॥१॥

महानारमा शक्य ऋषिका एक सौतेला भाई है। नन्द उसका नाम है। वह कान्तिमान और यौवनसे पूर्ण सौन्दर्यवाला है। उसकी पत्नी मुन्दरी सार्यक नाम वाली है और वह युवतियोंमें श्रेष्ठ है ॥२॥

कस्मिन्दिशमें और पुष्पलतिकासे युक्त त्रीडानिकुञ्जोंमें, वासाके दर्पक-सम स्निग्ध कपोल-रुचियोंकी भावना करते हुए, चुम्बन क्रियामें मग्न रहनेवाले और स्मर-ध्यानमें अपनको भूले हुए अिन नन्द मुन्दरके कानोंमें क्या झुटके धर्मवचन प्रवेद कर पाएँगे ? इन धर्म वचनोंका उनकी आत्मा तबका प्रवेद हो सकता ? ॥३॥

हठ और गर्बरेखासे बिभ्रुपिठ मागिनी मान-सम्पत्तिकी प्रभाव वाली घामिनी विकास-सुहासिनी अपनी आत्म-मुन्दरीको निरन्तरकी सेवाओंसे तृप्त करनेवाले नन्दको जो सुगतके धर्म प्रचारसे अनभिज्ञ है ये मुक्तिमार्गके उपदेश कहाँसे पसन्द आएँगे ॥४॥

मुन्दरीकी घुट्टि स्रताके सञ्चलनके साथ मनके मर्तन करने पर वह राजकुमार सारे जगका भूल बैठा। बेसाको अतिव्रम करनेवाले उसके रश्मि अंगविलास रूपी सुधांबुगणिके बीचिसमूहमें फँसकर रूँठा रहा ॥५॥

बालमें राजहंस स्वच्छ हास्यमें ज्यास्ना प्रवाह प्रेमनिप्यदिनी मधुर बाणीका मधुकोप नित नई कोंपल्लोवाली विलासबस्ती पलभरमें हृदयके भारपार जानेवाली प्रेमभरी चित्तवनरूपी मुमास्त्र वाली वह युवती नन्दमास्करसे छायाके समान बिलग होकर नहीं रह सकती ॥६॥

* बाय बलानके लिए बाय चरणको बाग रत्न धनुषरके लड़ उनके मया।

पल्लुकुस सेतसु नेम्ननम्मुसोक्त, भाविपगारानि कू
मुसपेर्मुस, षलकाकसन् गसष्टसु, रोपावणाक्षम्मुगा
वित्तकिपन् वतिमासुटस, पुलकसुद्दीपिपगात्रमु मु
इसु, गिल्गितलु कौगिल्गितसुनु मोइसुपुक्कु नाजटकम् ॥७॥

तानासुम्बरमंडु, इम्बेसदिया तम्बगसावध्य स्त्री
कामर्बैकनिधान, मोंडोदस प्रेमासापकेल्ली बिनो
बानूनातुमबम्मुका मदनविद्यावैशिकम्मुस, समुस
कानन् राव गबोयि, कामिजन लोकम्बंडु ना रोमिकिन् ॥८॥

चिबुराकुभाकु वास्त्रिन वजीवनकु व
त्रमदकु सक्ष्यमूतम्मुनाग,
मत्यन्तमोवम्मु मित्यमागळ्यम्मु
वसदापुकोट्टि मेसवर्तग,
मुपमिपगारानि युस्ताहृबिजयमुक
तोडुनीडै कूडियाडे मगग
गनिबिनि येरुमनि गयनपुष्यमु मूतन
सौरमम्मोक्कट पूरे नाग,
गौतुकमु मोसपिबु नोकळ्ळोक्कळ्ळ
हास वीक्षणकिर्किषिताकुलेस्स
मघुर मघुरमुक पाग ना मिधुनमोप्यु
मासतीबसु मनुब प्रायपुषेळ ॥९॥

सडलमि कौगिल्गितसकु जवनचचलु पेदुलेसया ।
नेडपडनट्टि चूपुलकु निर्बुर मैशिंगि विबुसत्यगा
मुडुगकपस्कु चादुमघुरोक्कुस नात्मसु हत्त, सीम मी
रेडु प्रणयावुराशि बिर्हारिचुनु वन्मिचुनम्मु बिल्लगन् ॥१०॥

मानवसोकनायककुमारवर्तसमतडु मम्बनो
द्यानबिहारि वैवतस्सतीमियो मारुनु गास्तगूडि, यो
मातवकोटि धेरक यमत्युल गूडक घोप्ये भूतस
ताम नवीम सृष्टि परिभाममिटुल नेरबेरेनो यनन् ॥११॥

बाक प्रिया मनके एक हानपर कल्पनामे पर प्रम-माधुयका अनुभव करते हटना डाटना त्राघसे लाल नत्रोम दग्धनपर बिनय करना पुनक्ति करनवाल बुम्बन गुदगुदिया आनिगन इन्ही कायोमें उस जाड़ीका सारा समय मुजगता । ॥७॥

म्बय तो मुन्दरनन्द ह और वह पारौरिक भावप्य सीलाओं और जानन्दका एकैक निघान है । परम्परक प्रमालाप कलि विनाद अन्यून अनुभव ममय विद्याके उपभोगक हैं । उस जाड़ीका कामुक-जन-गोकमें बारी सानो नहीं दीवता । ॥८॥

पल्लवका ही कटार बनाए उस प्रम यजोग और उसकी प्रमदा क सध्य (उत्साहरण) क रूपमें अन्यन्त माद आर निच सोभायक श्मिर निवासक रूपमें अनुपम उत्साह और विजयक एक साथ रहने वालोंक रूपमें अपूर्व आकाश पुष्पक नूतन सौरभक समुक्त हानबाले रूपमें एक दूमरक कलि विनादका अमित अनुभव हाव नावोंक द्वारा करत हैं और इस तरह मनमें कौतुक उत्पन्न करत ममय आचारपी सत्ताक पनपत्र वयमें (वीचनमें) यह दम्पति बड़ा मधुर जावन यापन कर रहा था । ॥९॥

दोस म पढ़नबाले आनिगनोंमे चन्दनके सेपके वण हा गिरत, बिसग न होनबाले चितबनाको एक दूमरक पारौरिक सौन्दर्यम प्रमाद उत्पन्न हान निरन्तरकी तरह-तरहकी मधुर उक्तिवोंके मत्प्रसन्न करत सोभाओंका साध जानबाले प्रणयसागरमें बह युगलजोडी निराले वृंगम दूयनी उतरानी है । १०

मानबालाके राजकुमारोंमें श्रुष्ट वह माना नन्दनवनमें बिहार करनेबाली दबता-न्त्री हा उस मुन्दरीम मिसकर न मा मार्य ही पूजा और न अमत्य ही एमा मादूम हाता है मानो यह सब भूत समुदायकी महीन सृष्टिका बिबिन्न परिणाम हा । ॥११॥

मेसेरिष मन्नुंइ पुलु गोसियोसंग
 सरमुल्लवमुग मुम्बरि रचिच्च
 मेसस्त वर्णम्मुसु मेळविचियिडग
 हृस्वमे मतडु चित्तदनु द्रायु,
 बति मुकुमार भावमु वधिचिम मनु
 रूप पद्यमुन गूघुनु क्स्तागि,
 अतिब प्रस्कमिराग मास्मापिचिन धीण
 पत्तिकिधु नतडु मै पुसकरिय,
 मेरंसेरक मन्नुनि चूपुसिति यान
 नैडुनकु गैपुस निवाळुकेल, मतिप
 कज्जकपु कूडिक प्रियुमि बस कघाटि
 पट्टु बोरकमुसु मत्सकस्वपुस ॥१२॥

प्राप्तेयगिरिकडराविनोड बिहार
 पद्यसैग सिद्धवपतुल्लनंग,
 बिबुध तारंगिणी बीचिकाडोसक
 डूगोडि रायंज बोपियमग
 गविमन पकजासवसित्तमे रसा
 प्रमुम नाडेडि पद्यार्थमुल्लनंग,
 नानड परिफुसस मीनाड्रबहारता
 राय्यमबाडु धीवात्मल्लमग,
 धीकुचिभलस बिगडाबि, चोमुमिमिनि,
 डूबपसंबेद्यमय्यु, नात्मकपम्य
 मग यद्यप सौख्य रसामुताम्मु
 ननुमवितुद बाह निरत्तरमुम ॥१३॥

अतुकु निक्कम्मयेनि यण्वारिपटस
 बिरति सेनि स्वप्नम्मुया कस्य बोळु,
 अतुकु निक्कमुगाक स्वप्नमगुनेनि
 सत्यमे तोपबोळु नाजपतुसुकु ॥१४॥

नन्दके घेष्ठ फूलोंके चुन देनेपर, मुन्दरी सुन्दर हार गूंथती है। सुन्दरीके रंग मिला देनेपर वह मनोज चित्र रचता है। पतिके किसी मुकुमार भावक बहनेपर वह उसे अनुरूप छन्दमें जुटाती है। पत्नीके सुन्दर रागना आभाप लेनेपर वह शरीरको पुसकित करनेवाले रूपमें बीणा बजाता है। रतनारी रेखावावाली नन्दकी चितवन मुन्दरीके मुखचन्द्रकी मानिषोंकी आरती उतारे सो मुन्दरीकी कजरारी चितवन प्रियतमके वल्लकपाट नीलोत्पलोंकी वन्दनवारसे सजाए। ॥१२॥

मानो वे हिमगिरिकी कन्दराओंमें विनोद बिहारमें तत्पर सिद्ध दम्पति हो आकाश गगाणी सहगोंपर झूमनेवाले राजहंसकी जोड़ी हों कविमन-पकजके मधुसे सिक्त हो रसनाग्रपर माचनेवाले वाक और अर्थ हों आनन्द परिफुल्ल मुनिनाथोंके हृदयाकारामें बिचरनेवाले जीव और आरमा हों। इस प्रकार चिन्ता-दुःखने पर हो सौन्दर्यमय बन व दम्पति निरस्तर ही हृदयसंभव और आत्मक गम्य अर्द्धतमुखक रसामृतका उप भोग करते रहते हैं ॥१३॥

यदि जीवन ही सत्य है तो वह उनके लिए अकिरत स्वप्न-सा अथवा जीवन सत्य न होकर स्वप्न है तो वह उनके लिए मरव-मा विद्याई बता है ॥१४॥

ऐहिकबिम्बारमुस मेस्स मवस शोचि
 भंगमेरुगमि यानन्दपरमयोग
 रति मेसंगुष्, भानुनि राकयोक
 सरयनेरनिवळ मुम्बरपि भोकट ॥१२॥

तनकुन् बापट अककबिह सुमनोबामम्मु वेणीमर
 म्मुम गूर्पन् यकपम्मुमह, बिलकम्मुन् हीर्प, विजामर
 म्मुनु बाल्पन् सडिसस्र ननुनि करामोजात्स्युम्मम्मुनन्
 वन्तितारत्नम् रपणम्मु निडि नित्त्व बेसि तानन्ताटम् ॥१३॥

अहमुलोम मीडयुनु, महुमु बालिचन नायु मोमुनन्
 मुबहुलु गुस्कु भोसमुस पोस्यु गनुगोनुबुन् मुगीमदे
 बहिन पगुळीकितसम्पम्मुन अककुस बभ्रभगमुस
 बिबहुकोनबोडंगे सुबतीमपि नेरुपुमीर मधुबुन् ॥१७॥

ससन कपोलरपणमुत्तन् रधिपिबेडि पत्रभगमुस
 लेस्तिरुकोत्तु मुत्तियपु हीधितुत्तन् गडकोत्तु स्तेत
 म्ब्योसयग अचुनुहुडपुहु ह हनियुबिन, मूर्फुत्तुपुस्स
 तळतळकाडुबुन् मेरपु बर्पणमुन् गनुमाय बेसिनम् ॥१८॥

नातियु नाबु तुटरितनम्मुनकुन मदि मेण्णुपुट्टियुम्
 बेतम् डालि, रेप्पतुब जिबेडु चिर्मयवप्पळिचि, रो
 यात्तिकवाय बोसपडित्तास्त्रपरपर नार, गेपुडाल
 चातेर कपमब गुटिल म्मुकुटीकसत्ताटपट्टये ॥१९॥

‘ ई पल्लुगाकितेतलिवियेस्सन्नु मेर्तुबु स्तेसस्राये, मे
 नोपनु बु म्मट्टेबु अदणोत्पत्तमुन् गोनिवैचे गास्तुनिन् ,
 नूपुर ककणबबन मनोहरमानम् मीर मादमो
 = म पेडबासिपोयुसति कड्डमुपाजनुबेचि नडुबुन् ॥२०॥

सभी सासरिक दुःखोंको दूर हटाकर, अविच्छिन्न आनन्द परम योषसे आसक्त होकर, सूर्यके आवागमनको न जान सकनेवाली बेभारों एक बार मुन्दरी ने ॥१५॥

मन्दकी माँग सँवारकर बेणीमें फूलोंका हार घासकर अगराग सगाकर ठोक ठौरसे तिसफ सगाकर और पखा झरनेके घाद दगारस ही कर-कमलोंमें दर्पण देकर नन्दको खडा किया और स्वय ॥१६॥

दर्पणमें अपना प्रतिबिम्ब दपप लकर खडा हुए प्रियतमके मुन्दर मुखाइपर प्यारी-प्यारी मूँछोंकी सुन्दरता निहारत हुए मुस्कराने हुए मृगमदसे लगे अंगुली किसलयस गालोंपर बठी चतुरसासे मकरिका पत्रों*को रचन लगी ॥१७॥

मुन्दरीके कपोल दर्पणापर बनत मकरिका पत्रोंको स्वच्छ मोतियोंकी कान्तियोंकी मात करनेवाली मुस्कराहटके साथ देखनेवाले मन्दने दपपपर जारस फूँक मागी। उसके छीटोंने दर्पणको धँससा घनाया। ॥१८॥

मुन्दरी प्रियतमके नटखटपनपर मन-ही-मन प्रमत्त हुई पर अपनी इस प्रसन्नताको उमने छिपाकर पसकपी कारोंसे झरकनेवाली मुस्कराहटका बाहर न छटकने देकर, रोपके कारण अत्यधिक अरुण बनी चितवनकी पैनी अस्त्र धाराका प्रयाग करते हुए अग्नाधरोंको कम्पित कर तथा कुटिल मुकुटियोंस युक्त मनाटवासी बनकर इस प्रकार बहा ॥१९॥

'तेम नटखट कार्योंका ता खूब जानने हा ठीक है पर मैं इन्हें सहनकी नहीं। यह बहकर अकाल्यसमे बान्तकी मारा। नूपुर और कंकणोंके झनकारक साथ चटकने-मटकत, मुँह फरकर चली जानेवाली प्रियाका राम्ता मन्दने राक लिया। ॥२०॥

*मकरिका पत्र—मच्छके बाकारका बना हुआ चमकता चिह्न जो प्राचीन कालमें शिवकी अपनी बदनटियोंपर बतानी थी।

पैटचेरंगु पट्टिनिलुपन् खेलि कोंगु तेमस्त्रिकोंषु 'मु
म्माटिकि नक्षु मुट्टेहु सुमा ! यिरेयो' दृनि मुट्टु बस्कर, 'स
प्याटकु नुह हटस यल्लुका ? मुसुकुल बसे रेड मुच्चि यो
भाटेहु धाडिधुपु ससमा ! यनि मुट्टेनु बस्परठपिन् ॥२१॥

मोक्षितल प्रफुल्ल कुमुमम्मुलु मुद्रुग रास, नागत्तन्नि
वाल्लि तबधुसन्, वेरपु पैकोनु चूडिक भोगम्मुनेति 'न
प्रेस्तिन बेबि ! चूपुट्टुवसेलु विगिचेहु मोमुच्चिपि, ग
गोत्तुय इस्सन प्रियशकुन्तमु नाह्वयम्मु कूपिडम् ॥२२॥

बोसमुपसो नाबसन बोसिस्त्रियोगिति नेल्लुकोम्मु, नी
बासुड नन्न कागुयमि तन्नि पकालुन नन्नि यिस्तलो
ने सडलेन् गबोयि, यिसिसी ! मनन्निकमुक्कितपाटिबा,
कासरकूसरति बनि, कौगिटिकि डिगि जेक्कुडुम्मुचुन् ॥२३॥

कठकट ! पापपु गितुक गैकोनि, यन्नपुगैपुवप्रियन
बुट्टपुटनैम मत्तिप्रयु, कपोसम्मु बेस्त्रेसवारजेसितिन्
पट्टिकयेडबबान ननि, कंबिन मम्मुनि तिडुडेड मु
रटपोन, जेक्कुट्टहमुल रायमु बिबप मुबुपेडुडुन् ॥२४॥

सास्त्रनमुक्कितचतुर ! बिधमकार्य
निपुण ! नन्नाच ! बरिसेनि नी यगाध
हुडयराग्य मेकच्छत्र मेसजूल,
नेटलु मसितो ? यी लघुहुडयुरासि ॥२५॥

अपराधप्रियकारिता नबनबबी प्रेम लीलासुधन
गुपनै मच्छपसोत्तरगमुन मिळोपिचि, यी बासुरा
स्त्रियिन् चूपु ननुप्रहम्मुनकु गस्त्रितुन् मबास्त्रिज
म्मुपचारम्मुग मस्त्रमचनक येदसो स्त्रीकरिपगवे । ॥२६॥

अनि मन प्रियमुग्ध भावजनु लसर
नक्कुनन् वाल्लि क्कत्तायि नास्त्र जेचि,
पापटन् लनकदिडुडु फास्त्रलम्मु
मुडुडुगोनि, तेरकोन नात्तिमोमु पैचि ॥२७॥

आँस पकड़कर नन्हे रोकनेपर अपन आँसको छुड़ाते हुए उसने कहा—“देखो तुम्हें मेरी कसम है तुम मुझे छूना मत।” अरे बिनोदके लिए फूँका तो इतनी रुठ गई और तुम तो तीरों-सी पैनी चितवनसे मेरा हृदय घेघ रही हो।” यह कहते हुए मन्दने उसके धरण छू लिए। ॥२१॥

अपने सिरके प्रफुल्ल कुसुमोंके पहले गिरनेपर उसके पर पड़, सहमी हुई वृष्टिसे मुख ऊपर उठा—“हे मेरी स्वामिनी ! मुँह फेरकर चितवनोंका फन्दा क्यों कस देती हो जिससे तेरे मनका प्रिय सन्तुप्त पक्षी अभी मेरा हृदय चित्सा उठे, तड़प उठे।” ॥२२॥

‘मुझसे अपराध हुआ है हाथ जोड़ता हूँ मेरी रक्षा करो म। मैं तो तुम्हारा दास हूँ।’ ऐसा कहनेवाले बान्तको देख वह खिलखिला उठी और बोली, ‘वस ! इतनसे ही बोले पड़ गए ? छि हमारे माम इतनासा है ? इतने सहम गए।’ उसे आसिगनमें ले, गालोंपर हाथ फेरते हुए कहा। ॥२३॥

हाय-हाय ! इस पापी ऋषने मेरे प्रियके अर्नोखे मनोहर अरुण कपोल फीके बना डाले। कितनी निष्पूर हूँ। डपटे हुए मन्दके हृदयको प्रशान्त करते, कपोल-वर्षणोंकी चुम्बनोंसे अरुण करते हुए कहा ॥२४॥

सान्त्वना देनेवाली मूर्च्छितियोंमें घतुर ! विलम्ब बायोंमें निपुण ! हे मेर नाथ ! असीम और अगाध तुम्हारे हृदय राज्यपर एकछत्र रूपसे राज्य करना चाहनेवाली इस मधुहृदयको कैसे दामा कर दोगे ? ॥२५॥

अपराध करनेसे और प्रीत करनेसे नव भव बने इस प्रेम लीलाकी मुघाको वृषाभावसे मरे अपस अतरगमें धरोहरके रूपमें रख इस दासीपर दरसाने बाल अनुग्रहके लिए हृदयकमलको संवामें समर्पित करती हूँ। इसे अल्प न समझ स्वीकार करोगे न ! ॥२६॥

इस प्रकारक मनके प्रिय और मुग्ध बचनोमे प्रसन्न करते हुए, वदास्पसपर झुकनेवाली ललागीको आसिगनमें लेकर माँग संभारत हुए उसक ससाटको भूमते हुए तथा बेगारागिसे पिरे हुए उसके मुग्धको वेगते हुए नन्दने कहा ॥२७॥

पैटचेरगु पट्टिनिसुपन्, बेकि कोंगु तेमस्विकोंबु 'मु
म्माटिकि नम्मु मुट्टेनु मुमा ! विबेयो' दृमि मुट्ट घत्क, 'स
म्याटकु गृह हटस यल्लुका ? मुल्लुकुस दसे डेव मुञ्चि पो
नाटेनु वाडिच्चुपु कसना !' यनि मुट्टेमु बल्पबद्धयिन् ॥२१॥

मौळितस प्रफुल्ल कुसुमम्मुक्कु मुष्णुग राळ, नागतनि
वासि तबंधुसन्, घेरपु पैकोनु चूडिक मोगम्मुनेलि 'न
शेलिन बेकि ! चूपुदुरस्सेस विगिचेनु मोमुच्चिपि, ग
णोसुम इम्मन' प्रियसङ्गन्तमु नाह्वयम्मु कूयिच्च ॥२२॥

बोसमुगसो नाबळन बोसिमियोगिति नेसुकोम्मु नी
बामुड नक्ष कागुगनि तन्वि पकात्तुन नचि विस्तसो
ने सडस्सेनु गडोयि, यिसिसी ! मनच्चिकम्मुचितपाटिचर,
कासरकूसरेति बनि कौगिटिकि चिपि चेरुक्कुम्मुचुनु ॥२३॥

कटकट ! पापपुं गिनुक पैकोनि, यच्चपुयेंपुवभियन
बुटपुटनेन मत्प्रियु कपोळम्मु बेस्वेळ्ळारबेसितिन्
पटिकयेडडवान ननि, कडिन नम्मुनि निडुडेंड मू
रैटमोन, बेक्कुट्टहमुक रागमु चिचण मुक्कुपेदुट्टुचुनु ॥२४॥

सात्वनमुक्कितचतुर ! जिह्ममकार्यं
निपुञ्ज ! मध्राय ! बरिसेमि नी यगाघ
ह्वयमरायय पेकळ्ळत्र पेळ्ळूत,
नेटळ्ळु मभितो ? धी ममुह्वयपुरासि ॥२५॥

अपराधप्रियकारिता नबमचबी प्रेम स्त्रीत्वासुधन्
गुपसे मळ्ळपसालरंयमुन निक्षेपिचि, धी बामुरा
क्लिपयिन् चूपु ननुधहम्मुनकु गस्पितुन् मबारमाबुन
म्मुपचारम्मुग मस्पमंजनक येदसो स्त्रीकारिपगवे । ॥२६॥

अनि मन' प्रियमुग्ध मावयम्मु म्मसर
मक्कुलन् वाक्किन म्मतागिं नारम बेचि,
पापटम् चककविडुचु फाळ्ळत्तम्मु
मुक्कुगोनि, तेरकोन नात्तिसीमु पैचि ॥२७॥

आँसु पकड़कर मन्त्रके रोकनेपर अपने आँसुको छुड़ाते हुए उसने कहा—“देखो तुम्हें मेरी कसम है तुम मुझे छूना मत।” अरे विनोदके लिए फूँका तो इतनी रुठ गई और तुम तो तीरों-सी पैनी चितवनसे मेरा हृदय बेध रही हो।” यह कहते हुए नन्दने उसके चरण छू लिए। ॥२१॥

अपने सिरके प्रफुल्ल कुसुमोंके पहलने गिरनेपर उसके पैर पड़, सहमी हुई दृष्टिसे मुख ऊपर उठा—“हे मेरी स्वामिनी ! मुह फेरकर चितवनका फन्दा क्यों कस देती हो, जिसस तेरे मनका प्रिय शकुन्त पत्नी अभी मेरा हृदय चित्सा उठे तड़प उठे।” ॥२२॥

‘मुझसे अपराध हुआ है हाथ जोड़ता हूँ मेरी रक्षा करो न। मैं तो तुम्हारा वास हूँ। ऐसा कहनेवासे कान्तको देख वह खिसखिसा उठी और बोली, ‘बस ! इतनेसे ही बीसे पड़ गए ? छि हमारे मान इतनासा है ? इतने सहम गए।’ उस आलिंगनमें लगे, घालीपर हाथ फेरते हुए कहा। ॥२३॥

हाय-हाय ! इस पापी श्रेष्ठने मेरे प्रियके अन्तर्मुख मनोहर अरण कपोल पीके बना डाले। कितनी निर्दुर हूँ। अचटे हुए मन्दके हृदयको प्रशान्त करते कपोल-दर्पणोंकी चुम्बनोंसे अरण करते हुए कहा ॥२४॥

सान्त्वना देनेवाली मूर्च्छितियोंमें चतुर ! विलम्ब कायोंमें निपुण ! हे मेरे नाथ ! असोम और अगाध तुम्हारे हृदय राज्यपर एकछत्र रूपसे राज्य करना चाहनवासी इस सधुहृदयाको कैसे क्षमा कर दोगे ? ॥२५॥

अपराध करनेसे भीर प्रीत करनेसे नव नव बने इस प्रेम सीसाकी सुधाको वृषाभावसे मरे अपस अतरगमें धराहरके रूपमें रख इस वासीपर दर्शाने वाल अनुग्रहक लिए हृदयकमसको सेवामें समर्पित करती हूँ। इसे अल्प न समझ स्वीकार करोगे न ! ॥२६॥

इस प्रकारक मनके प्रिय और मुग्ध बचनोंमें प्रसन्न करते हुए, वदास्पलपर मुकुनवासी स्तांगीका आलिंगनमें सेकर माँग संवारत हुए उसके ससाटको चूमते हुए तथा बेशरानिसे घिरे हुए उसक मन्त्रको देखते हुए नन्दने कहा ॥२७॥

पैठचेरंगु पट्टिनिकुपन्, जेसि कोंगु तेमस्त्रिकोंधु 'मु
म्माटिकि मधु मुट्टेहु सुमा ! यिबेयो' धृति मुट्ट धम्क, 'स
व्याटकु नुह हटस यस्सुका ? मुत्तुत्तल वले डेंब मुच्चि पो
नाटेहु बाडिचुमु फलमा !' यनि मुट्टेनु इत्पबहपिम् ॥२१॥

मौळितल प्रफुल्ल कुसुमम्मुसु मुधुग रास, नामतनि
घासि सबंधुसुन, बेरपु पैकोनु च्चुच्चि मोगम्मुनेति 'न
धेसिन बेवि ! च्चुपुट्टुस्सेस विगिचेरु मोमुच्चिपि, य
ग्योसुग हम्मन' प्रियशकुत्तामु नाह्वयम्मु कृमिचन् ॥२२॥

बोसमुगल्ये नाचलन बोसिस्त्रियोगिति मेस्सुकोम्मु मी
बासुड नल्ल कागुयनि, तन्वि पकासुन तन्वि यिस्तसो
ने सडसेन् गबोयि, यिसिसी ! मनच्चिकमुस्त्रिपाठिवा,
कासरकूसरेति चनि, कौगिटिकि विगि चेरुत्तुम्मुचुन् ॥२३॥

कटकट ! पापपु यिनुक गेकोनि, यन्नपुगोपुञ्जियन
बुट्टपुटनन मत्त्रिपु, कपोलमु बेस्सेम्भारजेसितिन्
गटिकयेडंबवान ननि, कविन मन्नुनि निडुडेंब मु
रैतमोन, जेक्कुट्टह्मुस रागमु चिबग मुडुवेदुचुन् ॥२४॥

सास्त्रममुक्त्तिचतुर ! विजयकार्य
निपुञ्ज ! मन्नाज ! इरिसेनि मी यगाध
ह्वयराग्य मेकञ्चन्न मेकन्तुत,
नेटकु भासितो ? धी कमुह्वयमुरालि ॥२५॥

अपराधप्रियकारिता लज्जलवबी प्रेम सीतासुधन्
गुपमे मञ्जपलातरगमुन निर्दोषिचि, धी वासुरा
स्त्रियिन् च्चुपु ननुग्रहम्मुनकु गम्पितुम् मबात्माञ्जुञ्ज
म्मुपचारम्मुग मस्पमंचनक येठसो स्वीकरिपगडे । ॥२६॥

अनि मन प्रियमुग्ध भावचमु ससर
नक्कुनन् घासिन सतायि नात्म जेचि
पापठन् च्चकविचुचु फाल्लसम्मु
मुदुगोति तेरकोन नातिमोमु पाचि ॥२७॥

‘असुक सोयिळ्ळ माटुन ह्वास्त्य विभुड् मुहूर्तमुडि सु
 अजयलहरास खगिरकसु पर्यंग वेंडि प्रसन्न-डीट यो
 कलिकि । विमृतमोन्सवमु गाबोकौ ? यिवुर मिटसु साहु पे
 म्बलपुसकल्पवस्ति कतिवा । यिवियेगव बोहबप्रियम् । ॥२८॥

पाणिहम्भु मुनि कौगिट गविपन बूतुनिन्, नीहु वि
 द्राणबुन् भरि बोयित्पबम्भुतुन्, मा बूहुकलन् प्रायुडुन्
 नी म्भ्यामृतवीक्षणम्भुसतु, नी निशवात सौगम्य मा
 घ्यान्तितुन् मेयियेस्तु घ्याणमुसुगा, गैमोडुत्तु सीवेस्तुकुन् ॥२९॥

रागरचित मन्मनोरत्न मित
 पित शकम्भु मोनरिचि पिति । नीहु
 कंठहारम्भु मोनरितु, गडमपिडक
 वितुत्तु हृदयप्रबधम्भु विशावफणिति । ॥३०॥

बेसदि । धी रागस्तसु पुप्यिचुनट्टु
 ली मनोरथमुसु फलपिचुनट्टु
 बध मोरसि पाव धी ममता क्ववति
 बेसिपोडमु पेरतलपेक मनकु ? ॥३१॥

अरमरसेति कूडमुस नाडुचु बाडुचु बेमशीघुपा
 मरतुल्लमै खरितमु, मनस्विनि ! बेककुस बयमंगमुस
 बिरचन सन्पुको ‘म्मनुचु’ वेंडिमु मंडनसाजिमृतमुम्
 सरमुडु बास्वि तिरुबेनुहसम्भुबुडीचु मेस्मुटहमुन् ॥३२॥

वर्षणमु बास्वि निस्विन्न ध्रुमि मोमु
 नेडनेड गमुगोतुधु रचिपिचुकोनिये
 बेसिय मुमुबेककुलुडु विशेयकम्भु
 नेम्भोगम्भु सहीवसाब्जम्भु बोरेय ॥३३॥

हे प्रिये ! ' प्रणयभ्रोज्य रूपी मेघोंकी आडमें तुम्हारे मुख चन्द्रका घोड़ी
बैर रहकर, फिर उज्ज्वल-मन्दहासकी चन्द्रिकाओंको विखेरते दर्शन देना
क्या एक विनूतन उरसव नहीं है ? हम दोनों द्वारा पाछे जानेवाले हमारी
प्रेमकी कल्पसतिकाक लिए ये ही दोहृदयी जियारें हैं न ! ' ॥२८॥

अपनी दोनों बाहुओंद्वारा तुम्हें आसिगनमें बस लेना चाहता हूँ, तुम्हारे
चातुर्यक सामने हाथ जोड़ना चाहता हूँ, तुम्हारे नम्य अमृत वीक्षणोंको अपनी
चितवनोंसे पीना चाहता हूँ, देहभर मानो माक बना लिए हों तुम्हारे निस्वास
सुगन्धका आनन्द रुना चाहता हूँ । तुम्हारे सौन्दर्यको प्रणाम है । ' ॥२९॥

राग रञ्जित मेरे मनोरत्नके इतन टुकड़े कर दिए म उन्हें
तुम्हारे कण्ठका हार बना दूँ । मेरे हृदय प्रवच (काव्य) को विषाद
रूपस सुना दूँगा' ॥३०॥

ह मानिनी ! इन रागसताओंका पुष्पित करते मनारथोंको
फस्तीभूत करत हुए, किनारो रूपी बच्चनोंको तोड़कर प्रवाहित होमेवाली
इस ममता रूपी नदीमें ऐसी स्थितिमें अन्य बातोंकी हमें चिन्ता ही
क्या ? ॥३१॥

भदभावमे रहित प्रेममें प्रसन्न हो प्रमगुष्ठा पानरत हो रहेंगे ।
हे मनस्विनी ! अब सो पत्रमर्गों* की रचना कर लो ।' यह कहते हुए और
प्रसन्न मुख हो सरस चित्तवाले नन्द मण्डनसाक्षीभूत उस दपणको
हाथमें ले खड़ा हो गया ॥३२॥

दर्पण हाथमें सिय खड़े प्रियतमके मुखको कभी-कभी देखते
हुए अपन म्निग्ध बापोमोंपर बिनोपकों (चित्रकों) की रचना कर
सो जिसस उसना मुख पैवालस युक्त अम्ब्र-सा समित
हुआ ॥३३॥

*पत्र भग—२ चित्र या पैगारें आ गीत्यं वृद्धिके किन्तु चित्रयां कम्पूरी
केसर आदि के अथवा मुनदुमै-जगत्स पत्तरोके दुबड़ोंमें पाक कपान आदि
पर बनानी है । माय और गान्धर की जालबापी चित्रकारी अथवा बरगूटे ।

'अनुक मोयिद्वल माटल इवास्य विभुद् मुहूर्तमुदि मु
 क्वलरहास चन्द्रकलु पर्वग वीठि प्रसन्न डोट यो
 कलिकि । विनूतमोस्तसवमु याबोको ? विवुर मिदलु साहु पे
 म्बलपुसकस्पवलि कतिवा । विवियेगब बोहृदभियम् । ॥२८॥

पाणिद्वम्बु नुनि कौगिट शबिपत जूतुनिन् नीहु वि
 भागंबुम् मरि बोयिलिपबल्लुम्, ना चूदकुल्म् ब्रावुहुम्
 मी मय्यामृतवीक्षणम्बुम्बु मो निश्वास सौगम्ब मा
 ध्याणितुम् मीयिमेस्त ध्यानमुमुगा गमोदुतु मोधेस्तुम् ॥२९॥

रागरजित मम्मनोरत्न मित
 पित शकलम्बु शोतरिचि पिति । मीहु
 कठहारम्बु मोमरितु, गडमपिडक
 विभुत्तु इवयप्रबधम्बु विद्यादफणिति । ॥३०॥

बेलबि । मी रागस्तलु पुष्पिचुनट्टु
 सी मनोरयमुलु फल्लयिचुनटलु
 बठ लोरसि पाव मी ममता लषति
 बेल्लियोधमु वेरतलपेल मनहु ? ॥३१॥

अरमरलेनि कूफ्मुलु माडुचु बाडुचु, शेमशीधुपा
 नरतुस्मी चरितम्, मनस्विनि ! जेक्कुल जत्रभगमुल्
 बिरचम सस्तुको 'ममनुचु' बेंडियु मंडमसाकिभूतमुन्
 सरतुचु बाल्धि निस्त्रेनु हस्तमुकुडीचु मेरुगुट्टइमुन् ॥३२॥

वर्पजमु बाल्धि निस्त्रिभम धनुनि मोम्
 नेडनेड गनुगोनुचु रचिविचुकोमिमे
 जेमिय नुनुजेक्कुल्लु विज्ञेयकम्बु
 नेम्मोपम्बु ससैबल्लम्बु डोरय ॥३३॥

हे प्रिये ! 'प्रणयच्छ्रेय रूपी मेघोकी आबमें तुम्हारे मुख चन्द्रका घोड़ी देर रहकर, फिर उज्ज्वल-मन्दहासकी चन्द्रिकाओंको विखेरते वर्णन देना, क्या एक विनूतन उत्सव नहीं है ? हम दोनों द्वारा पाले जानेवाले हमारी प्रेमकी कल्पलतिके लिए ये ही दोहदकी प्रियाएँ हैं न !' ॥२८॥

अपनी दोनों दाहूओंद्वारा तुम्हें आलिंगनमें बस लेना चाहता हूँ, तुम्हारे चतुर्युक्त सामने हाथ जोडना चाहता हूँ, तुम्हारे नय्य अमृत वीक्षणोंको अपनी पितवनोंसे पीना चाहता हूँ, देहभर मानो नाक बना लिए हों तुम्हारे निरवास सुगन्धका आनन्द लेना चाहता हूँ । तुम्हारे सौन्दर्यको प्रणाम ह । ॥२९॥

'राग रञ्जित मेरे मनोरत्नके इतने टुकड़े कर दिए न उन्हें तुम्हारे कण्ठका हार बना दूँ । मेरे हृदय प्रयन्ध (काव्य) को बिबाद रूपसे सुना दूँगा' ॥३०॥

हे मानिनी ! इन रागरत्नाओंको पुष्पित करते मनोरथोंको फलीभूत करत हुए, किनारों रूपी बन्धनोंको तोड़कर प्रवाहित होनेवाली इस ममता रूपी नदीमें ऐसी स्थितिमें अथ घातोंकी हमें चिन्ता ही क्या ? ॥३१॥

भेदभावसे रहित प्रेममें प्रसन्न हो प्रेमसुधा पानरत हो रहेंगे । हे मन्स्विनी ! अब लो पत्रभर्गो* की रचना कर लो ।' यह कहते हुए और प्रसन्न मुख हो सरस चित्तवाले नन्द मण्डनसाक्षीभूत उस वर्षणको हाथमें ले खड़ा हो गया ॥३२॥

वर्षण हाथमें लिये खड़े प्रियतमके मुखकी कभी-कभी देखते हुए अपन म्निग्य कपोलोंपर विशयनों (चित्रकों) की रचना कर ला जिससे उसका मुख दीवानसे युक्त अम्ज-सा मसित हुआ ॥३३॥

*पत्र भय—के चित्र या पैनाएँ या सौन्दर्य बूझिके लिए म्निगी कम्पूरी केसर जातिके लोम अथवा मुसल्ले-रूपके पत्तरोके दूरदोमि भाग कपोक जाति पर अजानी है । पात्र और कालपर की जानपायी चित्रकारी अथवा बेलबूटे ।

उदुराबोपलघट्टनासुभगमे व्योमम्मु ज्जुंदिषु मेळ
पडकिटन् सस्त्रितोपभोगकसनापारोगुर्बं मंडुडा
पडतिन् गूडि पिट्टुद्वेळ, सिन्धिचेम मध्याह्ण मिळाधिर्षे
पडपन् मेद्वित्त गौतुमुंडु 'ममभिक्षावेहि' पन् बाक्कुनन् ॥३४॥

अनुजन्भावसधकडधु मदिनेध्वबूनतो, सोनिकिन्
अनुमो, नेम्मोगमेत्ति कन्नोनुतो निस्सगुडु शाक्यपि नि
स्सेनु बहेहळि मन्वगेहमुसबोस्सेम् रेप्पपाटत, पो
येनु बारि बडि 'यस्ति नास्ति यनु पत्तकेनुं बिनन् रामिचेन् ॥३५॥

अगदगबमुनु सोडु गपूत्तपिडितो
मत्तुगुत्तु नूदुन् जेत्तुव योत्तु,
मीहारबारि पत्तीव साबाळ्ळुया
मीराठके कळ्पु मेस्त योर्त्तु,
कम्मकस्तूरिणि साकवगंधमुनु गूबि
कळपम्मु मेदिषु गसिकि पोर्त्तु,
पण्णकप्पुरमु आपत्तिरि जेत्ति त
म्मलपुत्तिस्सकळु च्छुट्टु मेस्तपोर्त्तु,
पुबुदेत्तसु पुण्णु वूबोडि योर्त्तु
भरत्तुकार्यामिदुनिदु बरच्चु तोर्त्तु
ऊडिपपुगान्तस्सिदुत्तु नियुक्तम्मगुट
मेवव बिबुद बुदयोगीह्णु पिळ्ळु ? ॥३६॥

जेत्तुजेत्तुम मय्यपिसेव कोरकु
मगरि कप्पुडु अनुदेंचु नात्ति योक्त्ते
धी चरिअम्मु निदु वेत्तयिपनुत्त
वेववसमुत्त मुत्ति निवर्त्तनमु पात्ति ॥३७॥

'गडित्तपु जेह्णु पुट्टेपरे, कर्म्मणिमम्मत्त जेत्ति पिटिसो
मुडिपपु जेत्तियक् कन्नागोपव पापम्ममुन् महानुमा
बुडु अनुच्चुअबाडुरक पुत्तय निपर्हजनिव स्वामि पै
बबुनो मरेसो ये वेत्तिपिवक्केवपा कनि मनुजेत्तु ॥३८॥

चन्द्रशान्त गिरीशोंने विनिर्मित सुन्दर और आकाशको
 बुनवाने श्रेष्ठ धयनागारमें समित उपभाग-बलना-पारीष बन नन्द उस
 युवतीके साथ रहा। एते समय मध्यान्ह भिक्षार्थी बन दरवाजेपर
 आए गौतमने 'मम भिक्षा नहि' का आवाज लगाई ॥२४॥

महादरका महल ह—तब भी वे शक्य ऋषि मनमें प्रम मानकर
 भीतर कम आये या सिर उठाकर भी कैसे देखेंगे। वे तो उस
 घरके सामने भी ठहरे, खच गृहोंके समान पसभर खड़े भी रहे और
 'अस्ति-नास्ति' का जवाब न मिलनपर अपने रास्त चसते बने ॥२५॥

मुगधित तुणोंको शोध पुष्पोंसे मिला उबटन तयार करनेवाली
 एक ओसके पानी और गुलाब जलको सम भागोंमें जल श्रीशायक श्लि
 मिमानवासी एक श्रेष्ठ बन्सुरी और जवादि को मिला मुगधित चन्दन
 तयार करनेवासी एक कपूर और जायफल मिला ताम्बूलके बीड़ तयार
 करनेवासी एक पुष्पमासाएँ वनानवासी एक प्रभुकायके लिए इधर-
 उधर भागनेवासी—इस प्रकार सभी दासियाँ काममें लगी हुई थी
 एसी स्थितिमें उस योगी बुढ़की पुकार कौन सुनता है? ॥३६॥

उछलने-बूढ़ने हुए उमी समय अपनी बारीपर सबाब सिए नगरीमें
 आनेवासी एक दामीने इस कथाको इस प्रकार गति देनेबाएँ मुनिका
 सौट जाना द्य ॥३७॥

बड़ी बुरी घात हो गई है पापद कायमगनताके कारण किन्ती
 दासीने उन्हें देखा नहीं होगा। वे महानुभाव तो घायी हाथ लीटे जा
 रहे हैं उस घटनासे पूर्यजनास तिरम्बारकी मिन्दा मेर म्बामीपर
 पड़ना सम्भव है अत इस घातकी सूचना तो यथास्थान समय रहते ही
 दे दी जानी चाहिये, यह सोचकर उसने मन्दके पास .. ॥३८॥

अनि विप्रविपगा, नि
 स्वन नीरमि रामुतुङ्ग, पुस्तुपुस्तुस्तु
 बत प्राणकाम्तमोमुतु
 गनुगोनुचुन् बसिके मिटलु, कळबळपडुचुन् ॥३९॥
 अन्नयटे, महामहिमुड्टे, अणम्मुन पारल्लेतमुन्
 मन्नमसस्पुचुन् गुरुडु माकन र्ववमुना खेत्तंगुलो
 कोस्तुड्टे, पिठलु निरुयोपगस्तुडयि, मिन्नवेडि, य
 अन्न—मरेममन्—मयिडेनट्टे, खेली ! कनु, ना यमाम्यतम् ॥४०॥

एस्तप्रमाबनु पुट्टेन्
 गास्ता । मन्ननुमतिपगवे, पुस्पुडसि
 कन्तुडगुमुन्न अनि प्रा
 चितुन् बाबनुक प्रासि, तेव्वेवमगुडन् ॥४१॥
 अनि सरसीनकस्पमगु मंजलि पट्टि यनुत्तवेडु का
 तुमि गनि, वेव्वनुच्चि नक्तोयजचारविलोचनम्मुसन्
 बोम बोम चाप्पमुक् शोरग, बोम्यसि नप्पेडवासियेगेवे'
 यनि मेयितीबतुलु चियुनक्कुन चासि सगडुगबम्मुगन् ॥४२॥

' ना मनोलाष ! ना निघानम्म ! नाडु
 कळहारम्म ! ना कनुंगव वेळुग !
 गुडचरणसेव गाविप मरुगुनिम्मु
 नेद्लु चारित्तु, गाक मिन्नेटलु पनुतु ? ॥४३॥
 अनुकोनपट्टि यी चिरह्मककट ! तारसिस्सेन् गवा ! प्रिया !
 भनसु वयाम्मुगाक पलुमाए मनधमु शंक खेसेडुन्,
 अनि यठने बिलबममु स्स्पकुना । पिठ मुन्नयटलु ना
 यनुप ! बिशेपकम्मु तडियारकमुन् अनुबेरगावत्तेन् ॥४४॥

पस्पुडबडि मितलो मेयिबच्चित्तेनि
 बिडनि गोबेव्व कौगिलिचिडु, मुद्दु
 बौतरलु बौतरलुमुद्दु—त्तिरयेस
 कानिपिचेव ना यनुप्रहमहम्मु ।' ॥४५॥

आकर बिनती की तो इस बातको सुनकर राजकुमार विह्वल हो गए और अपनी प्रियतमाको देखते हुए, घबराए-से बोले ॥३९॥

‘कसा मेरा दुर्भाग्य है कि महामहिमावाल तथा सारे ससारसे आदर पानवाले सारे लोगों द्वारा गुरु और देववत् माने जानेवाले ससारक सर्वघेष्ठ मेर ही बड़ भाई मेर द्वारपर भिखमगेक रूपमें आएँ और उन्हें खाली हाथ लौटना पड़े।’ ॥४०॥

हाय कितनी भूल हुई? हे कान्ता! जानेकी अनुमति दो। उस पूज्यके दूर चले जातेस पहल ही उमके पैरोंपर गिरकर प्रार्थना करेगा और उन्हें लौटा लाऊँगा ॥४१॥

यह कह करसिद्ध-समान अञ्जलि बाँध, अनुमति माँगनेवाले कान्तको देख गरम आहें भर, मध जलजके सम चार विलाचनोंसे टप्-टप् आँसू बहाते हुए वह हाय, मुझ छोड़ जाओगे?’ कह काँपती हुई देह-रुताकी भाँति प्रियकी गोदमें झुक पड़ी और गद्गद् स्वरमें बोली ॥४२॥

‘हे मेर मनोनाथ! मेरे निघान! मेर बघ्टहार! मेरे मेत्र युम्मकी ज्योति! गुरुचरण सेवा करने जानेवाले तुम्हें कैसे रोके और जाने भी कैसे धूँ? ॥४३॥

हाय! अप्रत्यागित रूपसे यह बिरह आ पडा। हे प्रिय! मन भवता होकर बार-बार अनर्थकी आशंका कर रहा है। जाकर वहीं बिलम न जाना। हे मेर प्रियतम! मेर विलोपकके सूत्रनमें पहले बस एमे लौट जाना जैसे यही हो!’ ॥४४॥

मेरी यातोंके अनुकूप लौट आओगे तो अपने गाढ़ आसिगनका भुग्य चुम्बुगोंकी शोछार-और न मासूम अपन मनके बिन बिन मनोरम प्रेमपूर्ण भाषाको आपन सम्मुख व्यक्त करेगी ॥४५॥

अनि यनुरागसालनमु लारग गूरिमि मेरयेन चं
 इन धन सारगद्यकलनाकमनीय इडोपगूहर्ब
 धनमेदुसेटसो विपियुनु, इसेडवीडगलेक, वेगुनि
 स्वन मधुरोक्ति बेडु चेलुबन् त्रियुडस्सुन इउर्जागधुनुन ॥४६॥

'यत्पयनि जासि पूनि मनु बारयसेपकु, बेसबै कनु
 गोसुनुस नीड निपकविगो । गुस्सेवुडतिअर्मिसेडुन्
 जेसि । कनुचुपुमेर, ननु जेएचेर नपिम इस्सपपयसन्
 सलिपि मचत्पदाबुठुसप्रिधिकिन् अनुबेत्तु नितलो । ॥४७॥

अनुचु नूराधि, पत्रसमचितमगु
 माननम्मुनु इडवि मुहाडि, राम
 सासिरेजित चित्राबराळिसोड
 ननु इमट्टे ले पयनम्मुगाग ॥४८॥

निकिम बीनुलुन्, अडतनेक्कोनु चूपुलु, विमवाटुनम्
 झुक्कित मोमुनै परक भुचक निरुचु कुरैपियो यनन्
 अक्केर घोम्म यंत जलनम्मइचूडुकुल ध्यानमम्मयै
 जेक्किट जेपिजेचि निसिजेन् बिक्कुबिक्कमि, कान्तुजेपगन् ॥४९॥

युडयतमैम पेनुमक्ति मुंडु काग,
 बेसविपे रक्ति काये बेन्बेनुक कस्तनि,
 नूमिकल मध्य हंसमा नोप्पेनपुड
 निरचयम्मुन गडलक निसुबकतडु ॥५०॥

एडयनि धर्मरागमेदुसे नीक मुबडुगेय, रेडुम्
 डडुगुस प्रेमधर्ममपुडातति बेम्ककु, डोयु, नीगतित्
 बिडुबक धोय्यनीय्य बेनुबेस्तुबयै नेडुरेगुनट्टि य
 प्युडुपमु बोसे नेगे नेडुलो यडुगाडुगुन बेम्कत्रोक्कुचुन् ॥५१॥

इट्टुओक्कोत येगि, तुबजेमनुतो गुडडम भीति यो
 क्कट्ट बडियाएतो मकरिकास्तत यम मयबोकट्ट मु
 त्कट्टमयि पैकोमग बेसपास्कोमबिन् अन जोएचे वा हुडा
 हुडि बेबपेडु यगलिडि धूर्पुनु तोरमुसं जेसंयपम् ॥५२॥

यह कहते हुए और घुमकारत हुए प्रेमकी सीमा रूपी बन्दन घनमार-गन्धर्वरत्ना कमनीय दुःख उपगूह बन्धनको किमी भी तरह छोड़ा कर अपनेका छाड़ न सकने, वेणु-निस्वन सम मधुर उक्तियोंमें विनती करनवासी प्रियतमाको सान्त्वना देते हुए नन्दन कहा ॥४६॥

व्यपित बन मुझ जानेमें मत रानो भागी बन आँसू मत भरो ।
बहु दखो गुग्गुलु जा रहूँ सखी । नजरसे ओझस हाकर । मुझ
तुरन्त जाने दो तो उनकी सेवा-मधुपाएँ कर तुम्हारे चरण कमलोंके
पास अभी आ जाऊँगा । ॥४७॥

यह कहत-कहत डाढ़स खाँस पत्र समञ्चित उसके मुखकको
धूम नन्द अतिरञ्जित राजसी पित्राम्बरों (अनेक चित्रोंसे
आकारित-आरञ्जित राजसी वस्त्रा) के साथ जैसे-का-तैसा निकल
पड़ा तो— ॥४८॥

मावधान बन कान जड़ बनी दृष्टि उदास बना मुख तिनका तक
को न कृतर खड़ी हिरमीकी भाँति यह मधुर मूर्ति निरचन मेनाम ध्यान
ममन बन कपोलापर हाथ धर खिन्न बन अपन कामको जात देखनी
खड़ी रही । ॥४९॥

बुद्धगत उत्कट भक्ति उमें आयेका सबेरु ली प्रियाका प्रेम पीछेकी
ओर लीचने लगा । बहु उर्मियोंके मध्य खड हसक समान रह गया ।
बहु अनिदन्धके कारण न तो वही खड़ा रह सका और न आये ही बड़
मका । ॥५०॥

धर्म प्रेम उम एक पग आग यदाए तो प्रेम-धम उम दो-नीन
बदम पीछ बरुन । इम प्रकार प्रचण्ड बाइमें बिरुद्ध जानवासी
नोकाके समान किमी भी तरह कर्म बदमपर पीछ हटत हुए, बहु
आगे बढ़ा । ॥५१॥

इम प्रकार पाड़ी दूर जाकर 'अस्तमें क्या हागा ? क्या कहगा गुरु ?
इम घातका दर दूमरी आर कही मकरिबा पत्र मूख न जाए—यह भय
एक तरफ उत्कट होकर मनका बिबाग बनानेपर मद घड़ाघड़ सम्भे डग
भरने हुए और सम्भो-सगंधी मर्मों भरत हुए नीच रक्तिमें जाने लगा ॥५२॥

यह कहते हुए और धुमकास्त हुए प्रेमकी सीमा रूपी चन्दन
घनसार-गन्धकमना कमनीय दृढ़ उपगुह बन्धनकी किसी भी तरह डीला
कर अपनेको छोड़ न सकने, बधु-निस्वन सम मधुर उक्तिपोंमें बिनती
करनवाली प्रियतमाको सान्त्वना देते हुए नन्दने कहा ॥४६॥

व्यथित बन मुझे जानसे मत रोको धोली बन जाँसू मत भरो ।
कह देखा सुखदेव जा रहूँ हे सखी ! नजरोंसे थोपल होकर । मुझ
तुलत जाने दो तो उनकी सेवा-शुभुपाएँ कर तुम्हारे परण कमलोक
पास अभी आ जाऊँगा । ॥४७॥

यह कहते-कहते बाइस वाँघ पत्र समष्टिगत उसके मुखड़ेकी
धूम नन्द अतिरिञ्जित राजसी चित्राम्बरों (अनेक चित्रोंसे
बाकारित-आरिञ्जित राजसी वस्त्रों) के साथ जैसे-का-सैसा निकल
पड़ा तो— ॥४८॥

सावधान बने कान बड़ बनी बुद्धि उदास घना मुझ तिनका तक
को न छुठर खड़ी हिरनीनी भाँति वह मधुर मूर्ति निदृष्ट नेत्रोंसे ध्यान
मग्न बन क्योलोंपर हाथ घग बिभ्र बन अपने कान्तको आते देखती
खड़ी रही । ॥४९॥

बुद्धगण उत्कट भक्ति उसे आगेको डकेले तो प्रियाका प्रेम पीछेकी
आर खींचने लगा । वह उर्मियोंके मध्य खड़े हस्तके समान रह गया ।
वह अनिदृश्यके कारण न तो वहीं खड़ा रह सका और न आगे ही बढ़
सका । ॥५०॥

धर्म-प्रेम उस एक पग भागे बढ़ाए तो प्रेम-धम उसे दो-तीन
कल्प पीछे डकेल । इस प्रकार प्रसङ्ग बाइमें बिछड़ जानेवाली
नौकाके समान किसी भी तरह कदम कदमपर पीछे हटते हुए, वह
भागे बढ़ा । ॥५१॥

इस प्रकार धोड़ी दूर जाकर 'अन्तमें क्या होया ? क्या कहेंगा गुरु ?
इस बालका इत, दूमगे आर कही मकरिका पत्र मुख न जाए—यह भय
एक तरफ उत्कट होकर, मनका विषम बन्धानपर नन्द घड़ाघड़ लम्ब डग
मरत हुए और सम्झी-सम्झी साँमें मरत हुए घोघ गतिसे जाने लगा ॥५२॥